दैनिक जागरण

अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में बड़े से बड़ी संपदा भी व्यर्थ है

बढ़ा हुआ लॉकडाउन

जब प्रधानमंत्री की मुख्यमंत्रियों से बातचीत के बाद ही यह स्पष्ट हो गया था कि 14 अप्रैल तक लागू लॉकडाउन की अवधि बढ़ानी ही पड़ेगी तब फिर उचित यह होगा कि इस आशय की घोषणा जल्द से जल्द की जाए। ऐसी किसी घोषणा के अभाव में संशय का जो वातावरण बन रहा है वह ठीक नहीं। यह वातावरण इसलिए बन रहा है, क्योंकि यह स्पष्ट नहीं कि बढ़े हुए लॉकडाउन में क्या रियायतें मिलेंगी और किस तरह के बंधन जारी रहेंगे या फिर वे और सख्त होंगे? निःसंदेह दोनों की ही जरूरत है। एक ओर जहां यह आवश्यक है कि देश के जो हिस्से कोरोना संक्रमण से बचे हुए हैं वहां सार्वजनिक मेल-मिलाप से परहेज की व्यवस्था करते हुए कारोबारी गतिविधियां शुरू करने की अनुमति दी जाए वहीं दूसरी ओर संक्रमण की चपेट वाले इलाकों में और अधिक सख्ती बरती जाए। सोशल डिस्टेंसिंग यानी लोगों के बीच शारीरिक दूरी को कायम रखते हुए औद्योगिक-व्यापारिक गतिविधियां केवल इसलिए शुरू नहीं की जानी चाहिए कि विभिन्न कारोबारी संगठन इसकी मांग कर रहे हैं, बल्कि इसलिए भी शुरू की जानी चाहिए, क्योंकि देश को लॉकडाउन की भारी आर्थिक कीमत चुकानी पड़ रही है। इसके चलते सबसे बुरा असर रोज कमाने-खाने वालों पर पड़ रहा है। बेहतर होगा कि सरकार विस्तारित लॉकडाउन की रूपरेखा इस तरह बनाए जिससे न तो कारोबार जगत में किसी भ्रम की गुंजाइश रहे और न ही आम जनता के बीच किसी तरह की अफरातफरी फैलने पाए। इस रूपरेखा में अस्पष्टता उस संयम और अनुशासन पर पानी फेर सकती है जिसका परिचय देश ने अभी तक दिया है।

यह सही है कि अधिकतर राज्य लॉकडाउन की समय-सीमा बढ़ाने के पक्ष में हैं, लेकिन उन्हें इस पर विशेष ध्यान देना होगा कि बढ़े हुए लॉकडाउन में जो रियायतें दी जाएं उनका दुरुपयोग न होने पाए। इस दुरुपयोग को रोकने के लिए उन्हें अतिरिक्त सतर्कता का परिचय देने के लिए कमर कस लेनी चाहिए, क्योंकि देश के कई हिस्सों से ऐसी खबरें मिल रही हैं कि या तो अपेक्षित सावधानी नहीं बरती जा रही या फिर सांस्कृतिक-धार्मिक कार्यों के बहाने लॉकडाउन का उल्लंघन किया जा रहा है। इसे बिल्कुल भी सहन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह एक तरह से देश के जीवन-मरण का प्रश्न है। तब्लीगी जमात वालों की गैर जिम्मेदाराना हरकतों के बीच पंजाब से निहंगों के उत्पात की जो भयावह खबर आई वह बेहद चिंताजनक और शर्मनाक है। लॉकडाउन के अमल में दिन-रात एक किए हुए पुलिसकर्मियों पर हमले के दोषियों को कठोरतम सजा का हकदार बनाया जाना चाहिए। इस कठिन समय जनता को यह समझना ही होगा कि उसका सबसे बड़ा धर्म लॉकडाउन का पालन है।

सतर्कता कायम रहे

केंद्रीय स्तर पर लॉकडाउन बढ़ेगा या नहीं, इस पर फैसला किसी भी क्षण आ सकता है। कुछ राज्यों ने लॉकडाउन की अवधि 30 अप्रैल तक कर दी है। बिहार सरकार भी लॉकडाउन बढ़ाने को लेकर असहमत नहीं है। यह जरूर है कि इस संबंध में सूचनाएं जुटाई जा रहीं कि आखिरकार यह अवधि और बढ़ती है, तो सबसे अधिक कौन लोग परेशान होंगे? सूचनाओं की समीक्षा की जाएगी, ताकि उन्हें और राहत दी जा सके। इतना तो सभी मानते हैं कि कोरोना का सटीक इलाज खोज लेने या इस वायरस को जड़ से मिटा देने के लिए किसी वैक्सीन की तलाश पूरी नहीं होने तक सतर्कता और शारीरिक दूरी ही जरूरी है, लेकिन यह भी सच है कि लंबा लॉकडाउन लोगों के लिए परेशानी और बेबसी का कारण भी बन सकता है। इस संबंध में सोच विचार करने और कारगर उपाय खोजने की जरूरत है। जिन लोगों के छोटे मोटे व्यवसाय लॉकडाउन से ठप हैं, वह जमा पूंजी खर्च कर रहे। आखिरकार कितने दिन तक वह ऐसा कर पाएंगे? बिहार के संदर्भ में इस बारे में नीतीश सरकार जो सोच रही, वह सही है। अभी तक जो संकेत हैं, 30 अप्रैल तक संपूर्ण लॉकडाउन की स्थिति रहने की ही उम्मीद है। हालांकि इस बीच हर घर नल का जल योजना का काम शुरू करने का निर्णय किया गया है। मजदूरों को काम मिले, ऐसी योजनाएं शुरू करने पर विचार किया जा रहा। केंद्र सरकार को पत्र लिखा गया है। 30 अप्रैल के बाद कोरोना संक्रमण फैलाव नियंत्रण में रहता है तो गांवों में सड़क मरम्मत, भवन निर्माण, पौधरोपण, खेतीबारी से जुड़े कामकाज को और छूट देने में हर्ज नहीं है। विशेषज्ञों का मानना है कि शारीरिक दूरी का पालन सुनिश्चित करते हुए सुरक्षित ढंग से औद्योगिक इकाइयों में कामकाज शुरू किया जा सकता है। बाजारों में खानपान की दुकानों के अलावा बिजली सामानों की मरम्मत, आदि जरूरी प्रतिष्ठानों को भी अनुमति दी जा सकती है। संक्रमण फैलने का सर्वाधिक खतरा सार्वजनिक परिवहन, स्कूल-कॉलेज और बाजार से है। इन्हें बंद रखा जाना चाहिए। वैसे लॉकडाउन और अन्य जागरूकता कार्यक्रमों ने लोगों को कोरोना से बचाव को लेकर अत्यधिक सतर्क कर दिया है। स्वच्छता और सतर्कता के जो उपाय अपनाए गए हैं, अब वह आदत में शामिल हो जाएंगे।

आस्था से संवाद का समय

हृदयनारायण दीक्षित

सच्चे धार्मिक वही हैं जो लोकमंगल के लिए विज्ञान का सदुपयोग करें और साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्ता दें

अवधेश राजपूत

विज्ञान प्रत्यक्ष सत्य है और आस्था अज्ञात पर विश्वास। ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति सतत विकासशील गतिविधि है। नए आविष्कार प्रायः उपलब्ध ज्ञान के पूरक होते हैं। वे स्थापित निष्कर्ष को निरस्त करने वाले भी होते हैं। विज्ञान के निष्कर्ष अंतिम नहीं होते। ब्रह्मांड विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग ने 'दि थ्योरी ऑफ एवरीथिंग' में कहा था कि 'अब तक प्रत्येक गतिविधि का कारण नहीं खोजा जा सका है। यह काम भविष्य के वैज्ञानिक पूरा करेंगे।' जगत का प्रत्येक अंश गतिशील है। आइंस्टीन ने विज्ञान को गति का अध्ययन बताया। सांसारिक प्रपंचो का कम भाग ही ज्ञात है। एक बड़े भाग को हम नहीं जानते। मत, पंथ, मजहब और रिलीजन की मान्यताओं का आधार अज्ञात दैवीय शक्ति पर विश्वास है। विश्व की अधिकांश जनसंख्या ईश्वर विश्वासी है। वैज्ञानिक निष्कर्षों का जन्म और विकास प्रयोगों में होता है। आस्था का विकास विश्वास में होता है। जीवन में दोनों का महत्व है। वैज्ञानिक सत्य तथ्य देते हैं। वे विश्वासों से नहीं टकराते, लेकिन पंथिक विश्वासी वैज्ञानिक उपलब्धियों से टकराते हैं। कोरोना वायरस विज्ञान सत्य है। इसका जानलेवा प्रभाव भी एक तथ्य है। दुनिया उससे बुरी तरह पीड़ित है। बावजूद इसके कुछ कट्टरपंथी आस्था के बहाने विश्व मानवता के विरुद्ध सेंधमारी पर आमादा हैं।

जीवन की सारी गतिविधियां देशकाल के भीतर होती हैं। वैज्ञानिकों के शोध देशकाल में होते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण के बाद निष्कर्ष देते हैं। विश्व उन्हें स्वीकार कर लेता है। इसी तरह कोई सत्पुरुष या दिव्यदूत तत्कालीन कालखंड की आवश्यकतानुसार जीवनशैली विशेष और देव अस्तित्व की घोषणा करता है। उसके समर्थक उसकी बात पर विश्वास कर लेते हैं। शेष लोग उनकी आस्था का सम्मान करते हैं। हम किसी विषय पर नए वैज्ञानिक निष्कर्ष आते ही पुराने निष्कर्ष छोड़ देते हैं। नए को अपना लेते हैं। पंथिक विश्वासों के साथ ऐसा नहीं होता। वे आस्था विश्वासों का पुनर्निरीक्षण नहीं करते। वे कालबाह्य के प्रति भी दुराग्रही बने रहते हैं। वे मानव जीवन से जुड़े चिकित्सा विज्ञान के आधुनिक निष्कर्षों का भी विरोध करते हैं और मानवता को संकट में डालते हैं। तब्लीगी जमात ने यही किया।

दुनिया के शीर्ष धर्म स्थल बंद हैं। वेटिकन सिटी और मक्का-मदीना समेत सभी उपासना केंद्र और उत्सव भी अनुशासनबद्ध स्थगित हैं। इस सबके बावजूद तब्लीगी दुराग्रही मौलवी विश्व को मध्यकाल में ले जाने को तत्पर हैं।

दुनिया में एक लाख से ज्यादा लोग कोरोना संक्रमण के कारण मारे गए हैं। संक्रमितों की संख्या भी बढ़ती जा रही है, इसके बावजूद तमाम लोग लॉकडाउन का पालन नहीं करते। यह लत महाभारत के यक्ष प्रश्नों से तुलनीय है। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा, 'सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?' युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, 'मृत्यु निश्चित जानकर भी लोगों का आचरण ऐसा है कि वे नहीं मरेंगे।' महामारी में मृत्यु का खतरा जानते हुए भी लोग अनुशासन नहीं मानते। क्या 21वीं सदी के आधुनिकों का ऐसा आचरण सबसे बड़ा आश्चर्य नहीं है?

प्रकृति काल प्रवाह में परिवर्तनीय है। प्रत्येक नए क्षण पुरातन के गर्भ से अधुनातन का जन्म हो रहा है। पुनर्जागरण काल के पहले यूरोप में अंधविश्वास थे। एशिया का भी एक भाग अंधविश्वासी था। 14वीं सदी के मध्य यूरोप में प्लेग की महामारी आई। 16वीं में इनफ्लुएंजा का प्रकोप हुआ। चेचक फैला। माना गया कि प्लेग का जन्म एशिया में हुआ। विल ड्यूरेंट ने 'दि रिनेशेंस' में लिखा है, 'युद्ध से अभावग्रस्त एशियाई जनसंख्या की उर्वरता और गंदगी से पैदा महामारी अरब होकर मिस्र, रूस आदि की ओर गई।' इंग्लैंड की गंदगी की ओर भी ड्यूरेंट ने ध्यान खींचा है। यूनान में सिफलिस रोग था। यूनान के लोग इसे देव प्रकोप मानते थे। ड्यूरिंग के अनुसार, 'यूनानी पुराकथाओं में सिफलिस नाम के भेड़ पालक का उल्लेख है। उसने देवों की पूजा छोड़ दी। अपोलो देव को गुस्सा आया। उन्होंने उसके निकट की हवा विषैली की। शरीर में फोड़े निकल आए।' अंधविश्वासों से टकराने का काम बड़ा है। ईसा के 400 वर्ष पूर्व यूनान में सुकरात पर आरोप था कि वह पृथ्वी के नीचे क्या? स्वर्ग में क्या? आदि प्रश्न उठाते हैं और देवों को नहीं मानते। उन्हें मृत्युदंड मिला। तब भी यूनानी समाज में आस्था और विश्वास से संवाद जारी रहा। दार्शनिक अंधविश्वासों से टकराते रहे। यूरोप ने पुनर्जागरण में आत्मनिरीक्षण किया।

भारत के धर्म में आस्था के पुनर्निरीक्षण की सुदीर्घ परंपरा है। ऋग्वेद प्राचीनतम आस्था विश्वास है। इंद्र वरिष्ठ देवता हैं। ऋग्वेद में उनके अस्तित्व पर प्रश्न हैं- पता नहीं कि वह हैं या नहीं हैं? फिर यज्ञ कर्मकांड बढ़े। उपनिषद में कहा गया कि यज्ञ की नाव में छेद हैं। डूबने का खतरा है। पूरी महाभारत में आस्था से जिरह है। नियतिवाद और पुरुषार्थवाद में टक्कर है। भारत के धर्म और आस्था में वैज्ञानिक विवेक की जगह है। वैदिक निरुक्त में 'तर्क' को देवता बताया गया है। सामी पंथों और मजहबों में प्रश्नों की जगह नहीं है। इसीलिए उनके विश्वासों पर बहस नहीं है। भारत का धर्म गतिशील आचार संहिता है। इसमें वैज्ञानिक विवेक को आत्मसात करने और कालवाह्य को त्यागने की क्षमता है। यहीं मौलिक कर्तव्य हैं। इसी दृष्टिकोण के चलते सांप्रदायिक विभाजन के बावजूद भारत पंथिक मजहबी राष्ट्र राज्य नहीं बना।

संप्रति विश्व में आपातकाल जैसी स्थिति है। भारत प्रधानमंत्री के नेतृत्व में महमारी से युद्धरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारतीय प्रयासों की प्रशंसा की है। आपात समय में ही धर्म, विज्ञान और मानवीयता की परीक्षा होती है। विज्ञान सत्य तथ्य देता है। धर्म उनका सदुपयोग करता है। विज्ञान विश्व की सार्वभौम बुद्धि है। धर्म विश्व का अंतस भाव है। विज्ञान में भाव और संवेदन नहीं होते। विज्ञान मस्तिष्क है, धर्म हृदय है। कट्टरपंथी जमातों के पास वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवीय संवेदनशीलता होती तो शायद भारत में कोरोना बंधक बन जाता। सच्चे धार्मिक लोकमंगल के लिए विज्ञान का सदुपयोग करते हैं। वे पंथिक विश्वासों को लेकर चिकित्सकों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर हमला नहीं करते। धर्म और विज्ञान परस्पर संबंधी हैं। मानवता की सेवा के लिए धर्म को नेतृत्व करना चाहिए। ताजा चुनौती के मद्देनजर मानवता के हित में विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान तत्परता से जुटे हैं। वे स्वागत योग्य हैं। यह भारत और भारतीय संस्कृति के लिए अनुशासन पर्व का अनिश्चित कालखंड है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

स्वास्थ्य ढांचे की सुध ली जाए

डॉ. सुरजीत सिंह गांधी

यह अच्छा है कि सेहत का तंत्र प्राथमिकता में आ गया है, लेकिन यह आगे भी बना रहना चाहिए

बीते दिनों ऐसे तथ्य सामने आए कि यदि देश में समय रहते लॉकडाउन की घोषणा नहीं की जाती तो 15 अप्रैल तक कोरोना संक्रमित लोगों की संख्या आठ लाख के करीब पहुंच सकती थी। लॉकडाउन इसलिए जरूरी हो गया था, क्योंकि कमजोर स्वास्थ्य ढांचे एवं शहरी मलिन बस्तियों की जनसंख्या संरचना में कोरोना वायरस के संक्रमण के सिलसिले को रोकना आसान नहीं होता। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रति एक हजार आबादी पर 0.8 डॉक्टर एवं 0.7 अस्पताल बेड हैं। भारत में एक लाख की जनसंख्या पर 2.3 गहन चिकित्सा वाले बेड हैं जबकि चीन में 3.6 एवं अमेरिका में 35 बेड हैं। हमारे अस्पतालों में बेड-वेंटिलेटर्स की उपलब्धता ही कम नहीं, बल्कि डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टॉफ की भी पर्याप्त नहीं। महंगी स्वास्थ्य सेवाओं, चिकित्सकीय शोध की कमी, के कारण स्थिति और दुरूह है।

ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज के एक अध्ययन के अनुसार भारत स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में बांग्लादेश, चीन, भूटान, श्रीलंका से भी पीछे है। यह ठीक नहीं। भारत को अपने स्वास्थ्य ढांचे को दुरुस्त करना ही होगा। राज्य के नीति निदेशक तत्वों के तहत स्वास्थ्य राज्य की जिम्मेदारी है, लेकिन राज्य सरकारों के साथ-साथ केंद्र सरकार द्वारा भी स्वास्थ्य संबंधी अनेक योजनाएं लागू की गई हैं, जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण स्वस्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत मिशन, जननी सुरक्षा योजना आदि। इसके बावजूद अस्पतालों में लंबी कतारें स्वास्थ्य क्षेत्र में भारत के आधारभूत ढांचे का हाल बयान करती हैं। आज भी हजारों बच्चे एवं व्यस्क उन बीमारियों के कारण मर जाते हैं जिनके लिए उपचार उपलब्ध है और जिनसे बचने के उपाय भी आसान हैं। इन बीमारियों का प्रभाव न सिर्फ शारीरिक होता है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक भी। अपने देश में महिला स्वास्थ्य की स्थिति और भी अधिक चिंताजनक है। पोषण की कमी एवं स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों के कारण महिलाएं मनोवैज्ञानिक स्तर पर अपाहिज हो जाती हैं। डब्ल्यूएचओ के अनुसार जनसंख्या बढ़ने के कारण भारत में स्वास्थ्य की स्थिति खराब होती जा रही है। सतत विकास लक्ष्यों के अच्छे स्वास्थ्य एवं अच्छे जीवन को प्राप्त करने में भारत पिछड़ता जा रहा है जबकि स्वास्थ्य किसी भी राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा होना चाहिए। जिस देश की जनसंख्या लगभग 130 करोड़ है और जहां धारावी जैसी बस्तियां हैं वहां कोरोना वायरस से उपजी बीमारी कोविड-19 से लड़ने में तत्परता दिखाने के साथ ही देश के स्वास्थ्य ढांचे को भी प्राथमिकता के आधार पर मजबूत करने की ठोस तैयारी होनी चाहिए।

हमें आभास होना चाहिए कि सीमित संसाधनों की मार झेल रहे हमारे स्वास्थ्य तंत्र के सामने कोरोना ने बड़ा संकट खड़ा कर दिया है। यदि कोरोना के सामुदायिक फैलाव को रोकने में एक बड़ी हद तक कामयाबी मिली तो इसीलिए कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समय रहते सक्रियता दिखाई। भारत सरकार के साथ-साथ उसकी तमाम एजेंसियों और राज्य सरकारों ने भी कोरोना के कहर को थामने के लिए जैसी सक्रियता दिखाई वह सराहनीय है। यह अच्छा है कि यकायक स्वास्थ्य ढांचा सबकी प्राथमिकता में आ गया, लेकिन यह आगे भी बने रहना चाहिए।

निःसंदेह कोरोना का इलाज खोज लिया जाएगा, लेकिन आज का संकट हमें यह बताता है कि कमजोर स्वास्थ्य क्षेत्र की सुध ली जाए। 2020-21 के आम बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र पर 69,000 करोड़ रुपये के व्यय का प्रावधान किया गया है। यह भारत की कुल जीडीपी का 1.3 प्रतिशत है। इस अनुपात में वृद्धि आज की पहली आवश्यकता है। इसके साथ ही चिकित्सकीय अनुसंधान पर किए जाने वाले खर्च में अलग से वृद्धि होनी चाहिए।

भारत में स्वास्थ्य विषयक समस्याओं में विविधता है जैसे बिहार में जापानी या चमकी बुखार, दिल्ली में वायु प्रदूषण, पंजाब में मादक पदार्थ जनित बीमारियां। इन विविधताओं को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य कार्यक्रम और सेवाओं का मॉडल तैयार किया जाना चाहिए। हेल्थ इंडेक्स में खराब प्रदर्शन करने वाले राज्यों पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। 23 स्वास्थ्य सूचकांकों के आधार पर आधारित नीति आयोग की रपट के अनुसार केरल, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं, जबकि उत्तर प्रदेश अंतिम स्थान पर। डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड्स, टेलीमेडिसिन, एआइ आदि का प्रयोग स्वास्थ्य क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव ला सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य का डिजिटल रिकॉर्ड रखा जाना चाहिए ताकि उसे ऑनलाइन घर बैठे ही स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जा सकें। प्रत्येक व्यक्ति का स्वास्थ्य बीमा भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। महंगा होने के कारण भारत में यह लोकप्रिय नहीं है। निजी क्षेत्र में इलाज पर आने वाले व्यय को यदि नियंत्रित किया जाए तो इसका सीधा प्रभाव स्वास्थ्य बीमा की दर कम होने पर पड़ेगा।

चिकित्सा क्षेत्र का नियमन भी समय की मांग है। सरकारी मेडिकल कॉलेजों में केवल उन्हीं लोगों को दाखिला दिया जाए जो गांवों में अपनी सेवाएं देने के लिए तैयार हों। हमें साफ पानी और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता पर भी ध्यान देना होगा ताकि चिकित्सकीय सुविधा केंद्रों पर संक्रमण को रोका जा सके। स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रशासनिक शिथिलता भी समाप्त की जाए। बुनियादी ढांचे को मजबूत करना एवं उसकी गुणवत्ता में वृद्धि करना तो प्राथमिकता होनी ही चाहिए और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को रोकना चाहिए। जहां केंद्र और राज्य सरकारों को सेहत के तंत्र को सबल बनाने को लेकर सजग होने की जरूरत है वहीं आम जनता को अपनी सेहत को लेकर सजग होना चाहिए। बदलती जीवन शैली में थाली में से पोषक तत्वों की जो कमी हुई है वह कैसे दूर हो, इस पर सरकार के साथ समाज को भी सोचना होगा।

(लेखक असिस्टेंट प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

समर्पण

समर्पण का अर्थ है-स्वयं को पूर्ण रूप से अर्पित कर देना, न्योछावर कर देना। समर्पण में प्रेम का भाव होना भी अनिवार्य है। समर्पण भाव को दर्शाती त्याग एवं बलिदान से ओतप्रोत कहानियों का इतिहास साक्षी है। जैसे कि मीरा, राधा का कृष्ण के प्रति हो या फिर स्वामी विवेकानंद का रामकृष्ण परमहंस के प्रति। शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण और बिना किसी तर्क के स्वयं को श्रद्धा के साथ अपने इष्ट को पूर्ण रूप से सौंप देने के ऐसे अनेकानेक उदाहरण हैं।

समर्पण लाभ हानि से परे है। सही अर्थों में जो परमात्मा के प्रति आकुल होते हैं, वे साधु-संत ही समर्पण की पराकाष्ठा की सीमा पार कर पाते हैं। हालांकि हम साधारण मानव भले ही उतनी ऊंचाइयों को न छू पाएं, लेकिन जाने-अनजाने अपने जीवन में कहां, कब, समर्पण भाव से अपना उत्तरदायित्व निभाते जाते हैं, इसका भान स्वयं हमें भी नहीं होता। हम अपने चारों ओर न जाने कितने लोगों को औरों के प्रति समर्पित पाते हैं। माना कि मां अपनी ही जायी संतान का भरण-पोषण करती है। फिर भी मातृत्व का समर्पण भाव संसार में सबसे ऊंचा है। सच्चे संबंधों को निभाने में भी त्याग एवं समर्पण की अहम भूमिका रही है।

समर्पण भाव केवल किसी प्राणी मात्र तक सीमित नहीं, यह भावना तो किसी विचारधारा, क्रांति, आंदोलन, कार्य विशेष के प्रति सदियों से उदाहरणार्थ रही है। अपनी जान की परवाह किए बगैर रोगियों की सेवा में जुटे चिकित्सा जगत से जुड़े लोग या फिर समाज सेवा में निरंतर कार्यरत जाने कितने ही नागरिक तथा कर्मचारी पूर्णतया समर्पित हो अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। वे सभी वंदनीय हैं, वर्तमान भयावह परिस्थिति में यह आज से पहले हम शायद नहीं समझ पाए। आज सही अर्थों में हमें समर्पण की परिभाषा का ज्ञान हुआ है। यह नहीं भूलना चाहिए कि मानव सेवा ही असली समर्पण है। परमात्मा तक पहुंचने का यही सहज मार्ग है।

छाया श्रीवास्तव

लॉकडाउन बढ़ाना ही एकमात्र रास्ता

सुधीर कुमार

अगर लॉकडाउन को खत्म कर दिया जाता है तो स्थिति बिगड़ने में देर नहीं लगेगी और संक्रमण का प्रवाह भी तेज हो जाएगा

कोरोना वायरस से संक्रमित और जान गंवाने वालों की बढ़ती संख्या ने चिंता बढ़ा दी है। लॉकडाउन का प्रथम चरण भले ही खत्म होने को है, लेकिन अधिकांश राज्यों के मुख्यमंत्री इसकी अवधि बढ़ाने के पक्ष में हैं। कहा जा रहा है कि उन्हें प्रधानमंत्री की मौन सहमति भी मिल चुकी है। कोरोना से मुकाबला करने में लॉकडाउन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने संक्रमण की रफ्तार को बहुत हद तक कम कर दिया है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक अगर सही समय पर लॉकडाउन लागू न किया गया होता तो अब तक संक्रमण के मामले 41 फीसद वृद्धि के साथ आठ लाख तक पहुंच गए होते! लॉकडाउन की वजह से लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का सिलसिला थमा है, जिससे संक्रमण का फैलाव नियंत्रित हुआ है। इस समय जागरूकता एवं सजगता की बहुत जरूरत है। एक छोटी-सी लापरवाही पूरे परिवार या समुदाय के कई लोगों को संकट में डाल सकती है। यह एक कठिन दौर है। हम सभी को इससे मिलकर मुकाबला करना होगा। ऐसे नाजुक वक्त में अगर लॉकडाउन को खत्म कर दिया जाता है तो स्थिति बिगड़ने में देर नहीं लगेगी और संक्रमण का प्रवाह भी तेज हो जाएगा। तीन राज्यों पंजाब, ओडिशा और महाराष्ट्र ने लॉकडाउन बढ़ाने का फैसला किया है। हालांकि इसे राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाना ही एकमात्र रास्ता है।

देश अभी 'लॉकडाउन' और 'फिजिकल डिस्टेंसिंग' के नियमों का पालन कर रहा है। लोगों को सख्त हिदायत दी गई है कि वे घरों से बाहर न निकलें। बावजूद इसके कुछ लोग बेवजह सड़कों पर घूम रहे हैं। आखिर यह लापरवाही क्यों? क्या उन्हें अपनी, अपने परिवार एवं समाज की फिक्र नहीं है? लॉकडाउन को जब तक लोग गंभीरता से नहीं लेंगे, तब तक इसका उद्देश्य फलीभूत नहीं हो पाएगा। लॉकडाउन को सकारात्मक रूप से लेने की आवश्यकता है। इसे एक अवसर के तौर पर भी लें। यही अपने जीवन को बचाने का एकमात्र तरीका है। जब तक संक्रमण का खतरा बरकरार है, तब तक अपना सारा समय परिवार के साथ ही बिताएं। सकारात्मक, ऊर्जावान और उत्साही बने रहें और अपने घरवालों को भी रखें। जीवन का मोल समझें। एक छोटी-सी भूल या लापरवाही आपके भविष्य को तहस-नहस कर सकती है।

लॉकडाउन से मिले हुए समय का स्वर्णिम इस्तेमाल करने पर जोर दें। परिवार के सदस्यों के बीच खुशियां और प्रेम बांटें। परिवार के बड़े सदस्यों को अपने बचपन के दिनों के अनुभव बच्चों से साझा करने चाहिए। डायरी में लॉकडाउन के अनुभवों को लिखने से आने वाली पीढ़ियों के लिए यह एक अहम दस्तावेज साबित हो सकता है। परिवार के एक साथ होने से उन बच्चों को चरित्र निर्माण और अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला है उसका लाभ उठाएं।

(लेखक बीएचयू में अध्येता हैं)

आपराधिक लापरवाही

विश्व स्वास्थ्य संगठन की नाकामी शीर्षक से लिखे अपने लेख में विवेक काटजू ने वैश्विक महामारी के समय में इस अंतरराष्ट्रीय संगठन की नाकामी का सही उल्लेख किया है। आज समूचा विश्व जिस महामारी से लड़ने में अपने समस्त संसाधन खपा रहा है और जिससे दुनिया भर में लाखों मौतें हो चुकी हैं और यह संख्या बढ़ती जा रहा है, उससे समय रहते दुनिया को सचेत नहीं कर पाना न सिर्फ इस अंतरराष्ट्रीय संस्था की घोर नाकामी है, बल्कि मानवता के विरुद्ध घोर अपराधिक लापरवाही भी है। यह संदेहास्पद है कि 27 जनवरी को अपनी चीन यात्रा के उपरांत ही 30 जनवरी को इस संस्था के महानिदेशक टेड्रोस गेब्रेयसस ने इस महामारी को अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य आपदा करार दिया। अब अमेरिका ने डब्ल्यूएचओ को चेतावनी दी है, जो पर्याप्त नहीं है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसके महानिदेशक को तत्काल पदमुक्त कर किसी सक्षम व्यक्ति को महानिदेशक बनाया जाना चाहिए जो वैश्विक संकट के इस समय में दुनिया भर के देशों में सामंजस्य स्थापित करे और आवश्यक सूचनाओं को सही समय पर सभी के साथ साझा कर सके, जिससे इस वैश्विक महामारी से निपटने में मदद मिले।

राजीव वार्ष्णेय, चंदौसी

मेलबाक्स

कोरोना का सामना

इस समय दुनियाभर में कोरोना महामारी का संकट छाया हुआ है। तमाम बड़े देश भी असहाय नजर आ रहे हैं। ऐसे समय में भारत संकटमोचक के रूप में सामने आया है। चाहे विकसित देश हो या अविकसित अथवा विकासशील देश हों या पड़ोसी, सभी राष्ट्र भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। भारत ने जिस कुशलता से बीमारी को बढ़ने से रोका हुआ है तथा इसकी कुछ दवा भी भारत के पास है, जो इस बीमारी में काम आ रही है। जिन भी देशों ने मदद मांगी है भारत ने किसी को निराश नहीं किया और समूचे विश्व में मानवता का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। अमेरिका, इटली, मलेशिया, श्रीलंका आदि सभी राष्ट्र महामारी से जूझ रहे हैं। ऐसे विकट समय में भारत विश्व की किसी न किसी रूप में सहायता के लिए सहर्ष तत्पर है। अन्य देशों के बिगड़ते हालातों से सबक लेकर भारत ने सही समय पर देशभर में लॉकडाउन लागू करके जहां एक तरफ अपनी सूझबूझ का परिचय दिया, वहीं दूसरी तरफ, संयम और अनुशासन में रहते हुए, देशहित में शासन-प्रशासन के नियमों का पालन करने की अपील ने देशभक्ति का जज्बा जगा लोगों को सावधानी बरतने के लिए प्रेरित किया। इसमें स्वस्थ लोकतंत्र का कर्तव्य छुपा है, जिसने गाहे-बगाहे लोगों को राष्ट्रसेवा में अपने हिस्से का सकारात्मक कार्य करने की आजादी दी है। कोरोना के विरुद्ध यह युद्ध अभी लंबी अवधि तक चलने वाला है। बेहतर होगा कि हम आगामी दिनों के लिए भी खुद को शारीरिक-मानसिक रूप से तैयार रखें।।

sonimohit895@gmail.com

पशुओं पर क्रूरता का परिणाम

आदिकाल में मनुष्य जंगलों में रहता था। उसे आग, स्वच्छ जल व सात्विक भोजन की जानकारी नहीं थी और उसके पास पेट भरने के विकल्प सीमित थे। परंतु आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। शाकाहार में हमारे पास भोजन के अनेक विकल्प मौजूद हैं, जिनसे शरीर की प्रोटीन व अन्य पोषक तत्वों की जरूरत पूरी हो सकती है। फिर भी हम पशुओं पर क्रूरता करके उन्हें अपना निवाला बना रहे हैं। अभी तक जितनी महामारियां दुनिया में आई हैं सब मनुष्यों के नैतिक क्षरण के कारण आई हैं। कोविड-19 विषाणु भी इसी मांसाहार का परिणाम है। स्नायु विज्ञान में स्तनधारियों, पक्षियों ऑक्टोपस सहित अनेक प्राणियों में स्नायविक के साक्ष्य मिलें हैं अर्थात उनमें भी संवेदनाएं होती हैं। मानव को अपनी इस कुतार्किक भूल में नहीं रहना चाहिए कि वे प्रकृति की खाद्य श्रृंखला का अनुसरण कर रहे हैं और वे दुनिया में विशिष्ट प्रजाति के हैं। यदि मनुष्यों ने प्राणिजगत के प्रति क्रूरता व निष्ठुरता पर अंकुश नहीं लगाया तो कोरोना जैसी महामारियां रूप बदल-बदलकर उसे बार-बार मारती रहेंगी। इस पर विचार करना होगा।

हितेंद्र डेढ़ा, चिल्ला गांव, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721

प्रमोद भार्गव
स्वतंत्र पत्रकार

आजकल

इस मुश्किल ने दिया संभलने का मौका

कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए जारी देशव्यापी लॉकडाउन के कारण आज तमाम उद्योग-धंधे बंद हैं। इससे हमारी अर्थव्यवस्था के एक बड़ी हद तक प्रभावित होने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि कई आशंकाएं सही हैं, लेकिन यदि हम अपनी नीतियों में बदलाव लाएं और गांव आधारित छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करें तो तमाम आशंकाओं को निराधार साबित करते हुए फिर से अर्थव्यवस्था को गति प्रदान कर सकते हैं। तब वैसी पलायन की तस्वीरें भी नहीं दिखेंगी जैसी हाल में देखने को मिलीं

प्रतीकात्मक

संयुक्त राष्ट्र ने कोरोना महामारी के चलते भारतीय अर्थव्यवस्था के लड़खड़ाने की आशंका जताई है। उसका अनुमान है कि चालू वित्तीय वर्ष में भारत की जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पाद दर घटकर 4.8 फीसद रह सकती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएं भी कुछ ऐसी ही आशंकाएं जता रही हैं। हालांकि इनमें कोई नई बात नहीं है। वैसे मौजूदा महामारी से भारत ही नहीं, उन सभी देशों की अर्थव्यवस्था गड़बड़ाएगी, जिनमें लॉकडाउन के हालात बने हैं, क्योंकि इस विकट स्थिति में घरेलू काम-धंधों से लेकर सीमापार व्यापार, पर्यटन, शिक्षा और द्विपक्षीय संधियों के तहत होने वाले सौदे बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। हमारी आर्थिक स्थिति बहुत ज्यादा इसलिए प्रभावित नहीं होगी, क्योंकि हमारी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था और खेती-किसानी से होती है।

भारत में 90 प्रतिशत कामकाजी आबादी असंगठित क्षेत्र में है। इसी में से 40 करोड़ लोगों के गरीब हो जाने की चिंता विभिन्न एजेंसियों ने जताई है। इन्हीं एजेंसियों ने सितंबर 2018 में कहा था कि नरेंद्र मोदी की उचित आर्थिक नीतियों के चलते 2016 में 27 करोड़ लोग गरीबी की जद से बाहर आ गए हैं। इसी उपलब्धि पर अब कोरोना का संकट मंडरा रहा है। इस स्थिति को मोदी समेत हमारे सभी राज्यों के मुख्यमंत्री भी समझ रहे हैं। इसीलिए केंद्र सरकार ने राज्यों सहित केंद्र शासित प्रदेशों को आपात आर्थिक सहायता के रूप में 15,000 करोड़ रुपये का पैकेज देने की न केवल घोषणा की है, बल्कि इसकी पहली किस्त जारी भी कर दी है। हालांकि जो आर्थिक नुकसान महामारी से होगा उसकी क्षतिपूर्ति के लिए लगभग 10 लाख करोड़ रुपये की जरूरत पड़ेगी। लेकिन यदि हमें वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था को स्थायी तौर से पुख्ता बनाए रखना है तो शहरीकरण और औद्योगीकरण पर धीरे-धीरे विराम लगाते हुए ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था को फिर से विकसित करने के ठोस उपाय करने होंगे। इससे गांव से जो शहरों की ओर होने वाला पलायन भी रुकेगा।

आर्थिक उदारीकरण ने औद्योगीकरण-शहरीकरण को बढ़ावा दिया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दबाव में ऐसी नीतियां बनाई गईं, जिनसे ग्राम एवं कस्बों में स्थित उद्योगों की कमर टूट गई। राजनीतिक मजबूरी अथवा अदूरदर्शिता के चलते 2007 में देसी-विदेशी कंपनियों को लघु-उद्योगों में 24 प्रतिशत निवेश की बाध्यता समाप्त कर दी गई थी। इस उपाय को लघु उद्योग क्षेत्र में प्राण डालने का बहाना बताया गया था, लेकिन देखते-देखते लघु व मझोले उद्योग डूबते चले गए। दरअसल बड़ी कंपनियां लघु-उद्योगों के व्यवसाय में इसलिए नहीं जुड़ीं, क्योंकि इनमें अकूत धन कमाना संभव नहीं है। देसी-विदेशी उद्योगपतियों ने इन्हें व्यावसायिक दृष्टि से कभी लाभदायी नहीं माना। वहीं एक समय लघु उद्योगों के लिए जो एक हजार के करीब उत्पाद आरक्षित थे, उन्हें घटाकर सवा सौ कर दिया गया। ऐसे उत्पादों के निर्माण व वितरण की छूट कंपनियों को दे दी गई, जबकि देश में उदारीकरण की नीतियां लागू होने से पहले बड़ी संख्या में लघु उद्योग, बड़े और मझोले उद्योगों की सहायक इकाइयों के रूप में काम करते थे और अपने उत्पादों को इन्हीं कंपनियों को बेच देते थे। बड़ी कंपनियों के हित में नीतियां बना देने के कारण इन लघु उद्योगों की भूमिका घटती चली गई और बची-खुची कसर चीन और दूसरे देशों से सस्ते उत्पाद आयात करने की प्रक्रिया ने खत्म कर दी। वैश्वीकरण का यह ऐसा दुखद पहलू था जिसने गांव-कस्बों और छोटे शहरों में कामगारों को बेरोजगार किया और युवा होते लोगों को महानगरों की ओर रोजगार के लिए विवश किया।

आर्थिक उदारीकरण के बाद दुनिया तेजी से भूमंडलीय गांव में बदलती चली गई। यह तेजी इसलिए विकसित हुई, क्योंकि वैश्विक व्यापारीकरण के लिए राष्ट्र व राज्य के नियमों में ढील देते हुए वन व खनिज संपदाओं के दोहन की छूट दे दी गई। इस कारण औद्योगीकरण व शहरीकरण तो बढ़ा, लेकिन पारिस्थितिकी तंत्र कमजोर होता चला गया। शहरों की ओर पलायन बढ़ा। नदियां दूषित हुईं। विकास के लिए तालाब नष्ट किए गए। राजमार्गों, बड़े बांधों, औद्योगिक इकाइयों और शहरीकरण के लिए लाखों-करोड़ों पेड़ काट दिए गए। इससे वायु प्रदूषण बढ़ा और इसी अनुपात में बीमारियां बढ़ीं। कोरोना को भी इसी की कड़ी कहा जा रहा है।

अधिकांश अर्थशास्त्री इस महामारी के चलते किए गए लॉकडाउन को आर्थिक समस्या के रूप में देखते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था में नौ लाख करोड़ रुपये के नुकसान की आशंका जता रहे हैं। जबकि यह संकट अर्थव्यवस्था से कहीं ज्यादा मानव-स्वास्थ्य और गरीब व वंचितों की रोजी-रोटी से जुड़ा है। बहरहाल कालांतर में अर्थ की जो भी हानि हो, सकल घरेलू दर में जो भी गिरावट आए, इस वैश्विक संकट के चलते देश को निवेश के भारी संकट से गुजरना होगा। यह स्थिति दर्शाती है कि देश भीषण अर्थ-संकट से घिर जाएगा। फिर भी अन्य विकसित देशों के मुकाबले हमारे यहां अर्थव्यवस्था को बहुत अधिक नुकसान नहीं होगा, क्योंकि पूंजीवादी देशों की तरह हमारी अर्थव्यवस्था केवल औद्योगिक घरानों पर आश्रित नहीं है, हमारे यहां यह खेती-किसानी, व्यापारिक लेन-देन और एमएसएमई, मसलन सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों से चलती है। इससे पारंपरिक रूप से कुशल और अकुशल व्यवसायी जुड़े हैं। दूध और दूध से बने सह-उत्पाद इसी दायरे में आते हैं। अकेले दूध के व्यापार से सात करोड़ से भी ज्यादा लोग जुड़े हैं। यदि बहुराष्ट्रीय कंपनियों को जिन लघु उद्योगों से जुड़े उत्पादों को निर्माण की छूट दी गई है, उन्हें प्रतिबंधित कर दिया जाए तो लघु उद्योगों को तो ऊर्जा मिलेगी ही, उन अकुशल लोगों को भी स्थानीय स्तर पर रोजगार मिलेगा जो शहरों में सस्ते श्रमिक रहते हुए आज घर लौटने को मजबूर हुए हैं।

मजदूरों के सामने आई नई मुसीबत

डॉ. रमेश ठाकुर

कोरोना संकट की मार से सभी बेहाल हैं, लेकिन दिहाड़ी मजदूर वर्ग पर इसका अधिक असर पड़ रहा है। उनके समक्ष पेट पालने की रोजाना की चुनौती होती है। लॉकडाउन ने उनके जीवन को संकट में डाल दिया है। बात रोजी-रोटी पर आ गई है। काम-धंधे बंद हैं, करें तो करें क्या? हालांकि केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा उनके खाने-पीने और रोजमर्रा की जरूरतों आदि की उचित व्यवस्था की गई है, पर उस व्यवस्था में भी भ्रष्टाचारियों ने सेंध लगा दी है। मनरेगा रोजगार देश के मजदूरों को बड़ी राहत देता है। हाल ही में केंद्र सरकार ने उनके लिए रकम जारी की है, पर वह सभी मजदूरों तक नहीं पहुंच सकी है।

गांवों में दिहाड़ी मजूदरों की बड़ी संख्या है। बीते करीब एक दशक से गांव के मजदूर केंद्र सरकार की बहुआयामी योजना मनरेगा से जुड़े हैं। गांव छोड़कर जो मजदूर शहरों में चले गए थे, वे लॉकडाउन के बाद अपने-अपने गांव पहुंच गए हैं। लॉकडाउन के दौरान उनको किसी तरह की दिक्कत नहीं हो, इसके लिए केंद्र सरकार ने सभी मनरेगा मजदूरों को अग्रिम और अतिरिक्त धनराशि आवंटित कर दी है। लेकिन उस धनराशि पर ग्राम प्रधानों की नजर लग गई है। नजर ऐसी जिससे वह धन आसानी से मजदूरों तक नहीं पहुंचने पाए। ग्राम प्रधानों की यह करतूत मानवीय संकट के वक्त मजदूरों को राहत पहुंचाने के केंद्र सरकार के प्रयासों पर आघात है। इस पूरे राहत कार्यक्रम में कई जगहों पर ग्राम प्रधान, रोजगार सेवक, सचिव और विकास खंड अधिकारियों ने मिलकर पलीता लगा दिया है।

हमारे देश में कुछ ऐसे वर्ग भी हैं जो किसी प्रकर की प्राकृतिक आपदा या संकट के समय में अमानवीय हरकतों से बाज नहीं आते। ऐसे वक्त में भी वे अपनी कमाई का अवैध जरिया तलाश लेते हैं। मनरेगा में काम करने वाले मजदूरों की कमाई पर भी कई जगहों पर डाका डाला जा रहा है। वैसे, मनरेगा में भ्रष्टाचार की ऐसी खबरें यदा-कदा सुनने को मिलती ही रहती हैं। उसी कड़ी में मनरेगा के तहत आवंटित की जाने वाली रकम में सेंधमारी का एक बड़ा मामला सामने आया है, जहां मनरेगा के मजदूरों की दिहाड़ी पर डाका डालने की कोशिश की गई। हालांकि पुलिस ने मुकदमा दर्ज करते हुए आरोपी को जेल भेजा दिया। मामला उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले का है। खबरों में अक्सर देखा गया है कि मनरेगा के पैसों में भ्रष्टाचार का बड़ा तंत्र मिलकर काम करता है। प्रधान से लेकर जिले के कई आला अधिकारी इसमें लिप्त होते हैं। भ्रष्टाचार की यह साठगांठ ग्राम पंचायतों के लिए विकास फंड और मनरेगा में आवंटित धनराशि में अनियमितता को अंजाम देती है। ग्राम प्रधान अपने परिचितों का गलत तरीके से जॉबकार्ड बनाकर बिना काम किए ही हजारों रुपये उनके बैंक खातों में जमा करवा देते हैं। ऐसी कई शिकायतें जिला प्रशासन और सरकारों को मिल रही हैं।

मनरेगा और ग्राम योजनाओं में भ्रष्टाचार किस कदर हावी है इसकी जानकारी कमोबेश प्रदेश सरकारों को भी होती है। समाधान के तौर पर कुछ कागजी प्रयास भी किए गए हैं, लेकिन इसे नियंत्रित नहीं किया जा सका है। ग्राम विकास योजनाओं में सरकार द्वारा भेजी जाने वाली रकम में किए जाने वाले भ्रष्टाचार रोकने के लिए कई प्रयास हुए, किंतु इस दिशा में उतनी सफलता नहीं मिली, जितनी उम्मीद की गई थी। हालांकि योजनाओं की राशि सीधे पात्रों के बैंक खातों में जाती है, लेकिन कई ग्राम प्रधान अपने-अपने तरीके से उसमें हेरा-फेरी करते हैं। मनरेगा से संबंधित कार्यों में मजदूरों को लगाना हो, या फिर किसी पात्र को सरकार की विविध योजनाओं का लाभ देना हो उसमें उनका हस्तक्षेप होता है और किसी बहाने से वे कुछ न कुछ रकम इन मजदूरों से हथिया लेते हैं। समय आ गया है कि मनरेगा मजदूरों को बैंक खातों के माध्यम से रकम पहुंचाने के संबंध में पारदर्शिता को और अधिक बढ़ाना होगा ताकि इसमें किसी भी प्रकार की अनियमितता को खत्म किया जा सके।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

खरी-खरी

जो मजा नेगेटिव में, वो पॉजिटिव में कहां!

सुरजीत सिंह

आज सुबह एक दोस्त को फोन लगाया, भाई तुम्हारी बहुत याद आ रही है! उसने तुरंत ही फोन काट दिया। कदाचित डरा होगा कि कहीं मैं याद की इतनी अधिक मात्रा में तो गाफिल नहीं कि लॉकडाउन को धता बताते हुए उसके यहां जा धमकूं। दोष उसका नहीं। जमाने की हवा ही खराब है। पंकज उधास तो बहुत पहले जमाने को उदास करते हुए गजल गा-गाकर आगाह करते रहे हैं कि निकलो न बेनकाब जमाना खराब है!

एक मित्र तो हाल-चाल पूछने से पहले ही सीधे बोले-आजकल क्वारंटाइन में हूं, आप सुनाइए कैसे हैं? कभी गाने में सुनते थे, दोस्ती इम्तिहान लेती है, दोस्तों की जान लेती है, लॉकडाउन में यह सब सुनने से गुनने तक आ गया है।

परिवर्तन संसार का नियम है, लेकिन शब्द, अर्थ, भाव, दोस्त, जमाना रातोंरात यूं शीर्षासन की मुद्रा में आएगा, यह कल्पना चीन के अलावा और किसने की होगी! कल एक अन्य मित्र ने पूछा-और भाई, कोरोना से कैसे निपट रहे हो? अपुन तो पॉजिटिव हैं भाई।

यह सुनते ही मित्र घबरा गया, बचने के लिए तुरंत खुद का निगेटिव संभाला। आजकल पॉजिटिव इतना बदनाम हो लिया है कि निगेटिव होने में फख्र महसूस होता है। अब तो सब यही दुआ बांच रहे हैं कि हर घर से निगेटिव निकलेगा! मुमकिन है, कुछ दिन बाद फोन पर वार्तालाप यूं हो जाए, और घर में सब निगेटिव तो हैं? जी, बाकी सब तो निगेटिव हैं, लेकिन आज सुबह नौ बजे से मैं पॉजिटिव हूं।

वो पिछली सदी की बात लगती है जब लोग दफ्तरों से घरों की ओर भागने के लिए मौलिक बहाने गढ़ते रहते थे। आज सब चिल्ला रहे हैं कि अबे घरों में रहो, घरों में। मगर लोग हैं कि बाहर भागने को मचल रहे हैं। मेरे जैसा परम आलसी बहुत दूरदर्शी था। बरसों से जानता था कि अपना टाइम आएगा। तब सब कोसते थे-अबे सारा दिन घर में पड़ा वक्त की ऐसी-तैसी करता रहता है, कभी चौराहे तक ही टहल आया कर। मगर आज बाहर जाने की कह दूं, तो घर वाले मनुहार की मुद्रा में आ जाते हैं, आज नाश्ते में क्या खाएगा हमाला लाजा बाबू! बस इसी खातिरदारी का दौर जारी है।

ट्वीट-ट्वीट

लॉकडाउन से कोरोना के केस बढ़ने की रफ्तार कम हुई है। लॉकडाउन से पहले तीन दिन में केस दोगुने हो रहे थे। अब लगभग 20 दिन बाद सात दिन में केस दोगुने हो रहे हैं। मौतों का बढ़ता आंकड़ा अब भी चिंता का कारण बना हुआ है।
मिलिंद खांडेकर@milindkhandekar

गुरु तेगबहादुर जी के प्रकाश पर्व पर पंजाब पुलिस के जवान का हाथ काट देना, गुरुद्वारे में पेट्रोल बम-रिवॉल्वर, भारी मात्रा में असलाह बरामदगी बताती है कि कट्टरता किसी भी धर्म में हो, मनुष्यता व देश की दुश्मन ही होती है।
कुमार विश्वास@DrKumarVishwas

महामारी का असर तो दुनिया भर में है, लेकिन यह अनोखी बात केवल भारत में ही देखने को मिल रही है कि यहां इलाज कर रहे डॉक्टरों पर ही हमले हो रहे हैं। यह बहुत त्रासद है।
यूसुफ ऊंझावाला@YusufDFI

जापान और अमेरिका उन कंपनियों को अपने यहां विनिर्माण इकाइयां लगाने के लिए आकर्षक पैकेज का प्रस्ताव दे रहे हैं जिनकी फैक्ट्रियां चीन में हैं। भारत सरकार को भी वैश्विक कंपनियों को आकर्षित करने के लिए कुछ ऐसा ही करना चाहिए। इसे भी आर्थिक पैकेज का अहम हिस्सा बनाया जाए।
विक्रम चंद्रा@vikramchandra

सद्गुरु शरण
स्थानीय संपादक, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश डायरी

कोरोना की बरात में जमाती बने बराती

यूपी में अब तक कोरोना संक्रमित 466 रोगी चिन्हित हुए हैं जिनमें 252 यानी आधे से अधिक, सीधे तब्लीगी जमाती या उनके संपर्क में आए लोग हैं। इससे समझा जा सकता है कि जमातियों ने उस समाज के साथ कैसा गैर जिम्मेदाराना बर्ताव किया जिसका हिस्सा खुद उनके अलावा उनके परिवार, नाते-रिश्तेदार, इष्ट-मित्र और स्वधर्मी भी हैं। बाकी देश-दुनिया की तरह यूपी का शासन-प्रशासन भी लॉकडाउन लागू करके लोगों को घरों में रहने के लिए बाध्य कर रहा था। अयोध्या में नवरात्र के दौरान होने वाली चौरासी कोसी परिक्रमा में सदियों से लाखों श्रद्धालु शामिल होते हैं, पर इस बार सबने वहां न जाने का स्वतःस्फूर्त संकल्प ले लिया। वहां रामलला के नए गर्भगृह समेत सभी मंदिरों की गतिविधि अकेले पुजारी द्वारा सुबह-शाम भगवान की आरती तक सीमित हो गई। नवरात्र में देवी दर्शन के लिए मंदिर जाने और कन्याभोज करके व्रत पारण करने की परंपरा भंग करने का संकल्प प्रखर राष्ट्रभाव का अकल्पनीय उदाहरण रहा जिसके लिए एक भी स्थान पर जोर-जबर्दस्ती नहीं करनी पड़ी।

मंदिरों की तरह गुरुद्वारे और गिरजाघर भी स्वतः बंद हो गए, पर अधिकतर मस्जिदों और मदरसों में हमेशा की तरह रौनक बरकरार थी। निजामुद्दीन और स्थानीय जमातों में शामिल लोगों की तलाश में जब पुलिस मस्जिदों-मदरसों में घुसी तो वहां स्थानीय जमातियों के साथ बड़ी संख्या में विदेशी भी आराम फरमाते मिले। कुछ स्थानों पर तो बच्चे भी मिले। पुलिस को इन स्थलों से आपत्तिजनक वीडियो भी मिले जिनमें परोक्ष-अपरोक्ष रूप से लोगों से लॉकडाउन की बंदिशों, खासकर घर में ही नमाज अदा करने की प्रशासन की अपील न मानने का संदेश दिया गया था। शायद ऐसी नकारात्मक नसीहतों का ही असर था कि पूरे प्रदेश में जगह-जगह मस्जिद जाकर सामूहिक नमाज अदा करने की जिद को लेकर संघर्ष चल रहे थे। सरकार, शासन और प्रशासन सन्न थे। समझ में आ चुका था कि पिछले कुछ दिन की सारी कवायद पर जमाती पानी फेर चुके हैं। इसके बावजूद सरकार ने धैर्य रखा और इन्हें समझा-बुझाकर अस्पतालों और क्वारंटाइन सेंटरों में भेजा, पर कोराना की बरात के ये बराती इतनी आसानी से कहां मानने वाले थे। अस्पताल के वार्ड में दाखिल होते ही ये लोग निर्वस्त्र होकर घूमने लगे। डॉक्टर हालचाल लेने गए तो ये जमाती उनके ऊपर थूकने लगे। वह वार्ड में भी हर जगह थूक रहे थे। अस्पताल प्रशासन धैर्य धारण किए रहा। चिकित्साकर्मी इनकी सेवा करते रहे। कर्मचारी जब खाना लेकर पहुंचे तो जमातियों ने बीफ और बिरयानी की मांग की। बिल्कुल मनबढ़ बरातियों जैसे नखरे। ऐसा दुर्व्यवहार तो लोग अपने स्वजनों का भी नहीं सहते, पर शायद यही चिकित्सा पेशे की खासियत है कि जो आपको प्रताड़ित और अपमानित कर रहे, जो आपके ऊपर थूक रहे, जो आपको अश्लील गालियां दे रहे, जो आपके स्त्री होने का भी लिहाज नहीं कर रहे, आप उनका भी इलाज करिए और उनके जीवन की रक्षा करिए। प्रदेश के सभी डॉक्टरों और उनकी टीम को इस महानता के लिए सलाम। आप सचमुच धरती के भगवान हैं। आप सचमुच धरती के देव हैं।

प्रतीकात्मक

दही के भ्रम में चूना भी पीया : बरेली में जमातीनुमा लोगों की बहुतायत वाले एक गांव में जब ग्रामीणों से क्वारंटाइन होने का आग्रह किया गया तो आदत से मजबूर लोग हिंसा पर आमादा हो गए और स्वास्थ्यकर्मियों-पुलिसकर्मियों को पथराव करके लहूलुहान कर दिया। इनसे निपटने की रणनीति बनाते हुए स्थानीय प्रशासन को अंततः पीएसी याद आई। फिर क्या, आनन-फानन में पीएसी मौके पर भेजी गई जिसने अपनी शैली में लोगों का इलाज शुरू किया। ग्रामीणों ने हमेशा की तरह महिलाओं को आगे करके जंग जीतने का अंतिम प्रयास किया, पर इनकी आदतों-हरकतों से वाकिफ प्रशासन सतर्क था। वहां महिला पुलिसकर्मियों को भी बुला लिया गया था। कुछ ही मिनटों में सारे क्रांतिकारी न सिर्फ घरों में कैद हो गए, बल्कि खुशी-खुशी क्वारंटाइन होने को भी तैयार हो गए। बरेली के इस वाकये का संदेश प्रदेशभर के जमातियों में गया। अब उन्हें दही और चूने का फर्क समझ में आ चुका है। प्रशासन को भी भूला मंत्र याद आ गया, भय बिन होत न प्रीत।

सियासत का खूबसूरत चेहरा : कोरोना संकट ने सियासत की खल-छवि भी तोड़ी है। केंद्र और राज्य के सत्तारूढ़ नेतृत्व ने जिस तरह इस संकट को ललकारा, उसकी सराहना पूरी दुनिया कर रही, पर इस घड़ी में यूपी के विपक्षी दलों ने भी सरकार की नीति-रणनीति के साथ जो एकजुटता दिखाई, वह वंदनीय है। आक्रामक तेवरों के लिए पहचानी जाने वालीं बसपा प्रमुख मायावती ने इस दरम्यान बेहद जिम्मेदाराना रवैया दर्शाया, जबकि अखिलेश यादव ने भी यदा-कदा सरकार को चिकोटी काटने के अलावा प्रायः सरकार के प्रयासों का साथ ही दिया। सियासत की यह सकारात्मकता सचमुच सराहनीय है। ऐसी खूबसूरत चेहरे वाली सियासत से ही उत्तर प्रदेश, उत्तम प्रदेश बन सकता है।

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों पर प्रतिबंध लगाने में और सख्ती की जानी चाहिए?

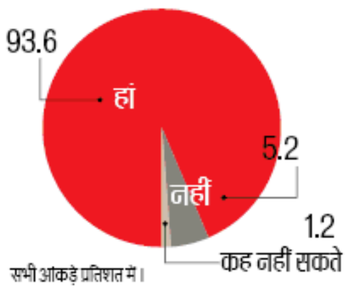

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या सेट टॉप बॉक्स पोर्टेबिलिटी से केबल-डीटीएच सेवाएं बेहतर होंगी?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

ऐसा होना चाहिए भारत में भी न्याय,
अब्दुल माजिद को दिया तुरत-फुरत लटकाय।
तुरत-फुरत लटकाय यहां होता अपराधी,
तो खुलवाते कोर्ट रात को उसके साथी।
देखो बंग्लादेश दिखाए जज्बा कैसा,
सीखे भारतवर्ष अनुज से कुछ तो ऐसा!
– ओमप्रकाश तिवारी

मंथन

कमजोर तबके की महती भूमिका

लॉकडाउन के चलते आर्थिक गतिविधियां ठप हैं और इसकी समाप्ति के बाद भी हालात तुरंत नहीं सुधरेंगे। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा गरीब तबके को भुगतना पड़ेगा। ऐसे में उनकी हर संभव मदद के उपाय किए जाएं क्योंकि वे समाज, देश और अर्थव्यवस्था का अहम स्तंभ हैं

प्रो. शक्ति कुमार
(जेएनयू में अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष)

कोरोना वायरस से उपजी महामारी से निपटने में पूरा देश एक साथ खड़ा दिख रहा है। कुछ छिटपुट आलोचनाओं को छोड़ दें तो वैचारिक राजनीतिक विभेद भी इस बिंदु पर समाप्त से नजर आ रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इस पूरे अभियान में सबसे मनोयोग से जो वर्ग हिस्सा ले रहा है वह है हमारे देश का निम्न आय वर्ग, जिसके पास सबसे कम संसाधन हैं और जो लॉकडाउन से सबसे अधिक प्रभावित है। यह तबका भले ही आर्थिक परिदृश्य पर उतना प्रभावी न हो, लेकिन देश की राजनीतिक दशा-दिशा तय करने में इस वर्ग की बड़ी भूमिका है। इस वर्ग ने समय-समय पर इसे साबित भी किया है। केंद्र में मोदी सरकार आने के साथ उत्तर प्रदेश में योगी सरकार और दिल्ली में केजरीवाल की सरकार बनने में देश के गरीबों की सबसे बड़ी भूमिका रही है। राजनीतिक उपयोगिता ही इस वर्ग की सबसे बड़ी ताकत है। स्वाभाविक है कि कोई भी आंदोलन, कोई भी अभियान, कोई भी प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक उसमें निम्न आय वर्ग की, मजदूरों और किसानों की भागीदारी न हो। लॉकडाउन में इन गरीबों का रोजगार बंद हो गया, इनकी दिहाड़ी बंद हो गई। लॉकडाउन को सफल बनाने के लिए यह जरूरी था कि इनके खाने-पीने की समस्या का समाधान हो ताकि वे पूरे मन से इस महामारी के खिलाफ अभियान में सरकार का साथ दे सकें। केंद्र और प्रदेश सरकारों की ओर से इस दिशा में कई कदम उठाए गए हैं।

लॉकडाउन की घोषणा के साथ ही जब दिल्ली से निम्न वेतनभोगियों और दिहाड़ी मजदूरों के पलायन का विचलनकारी दृश्य दिखा तो लगा कि स्थितियां अब नियंत्रण से बाहर हो जाएंगी। इनमें एक बड़ी संख्या उत्तर प्रदेश और बिहार के लोगों की थी। उत्तर प्रदेश की सरकार ने पहल की और रातोंरात बसें लगाकर 24 घंटे में समस्या का निस्तारण कर दिया। इतना ही नहीं, योगी सरकार ने लॉकडाउन लगते ही सबसे पहले लेबर सेस फंड से श्रम विभाग में पंजीकृत 20.37 लाख श्रमिकों में से प्रत्येक को 1000 रुपये प्रति माह डीबीटी के माध्यम से उपलब्ध कराने की भी व्यवस्था की। साथ में नगर विकास विभाग को घुमंतू प्रकृति जैसे ठेला, खोमचा व साप्ताहिक बाजारों आदि से जुड़े लगभग 15 लाख श्रमिकों का डेटाबेस सहित विवरण 15 दिन में तैयार करने के निर्देश दिए। ऐसे सभी श्रमिकों के खाते में भी प्रतिमाह 1000 रुपये हस्तांतरित किए गए। इसी तरह श्रमिक भरण-पोषण योजना के तहत 5.97 लाख निर्माण श्रमिकों के खातों में एक-एक हजार रुपये की धनराशि आरटीजीएस के माध्यम से हस्तांतरित की गई।

इसी तरह करीब 1.65 करोड़ अंत्योदय योजना, मनरेगा और श्रम विभाग में पंजीकृत निर्माण श्रमिकों व दिहाड़ी मजदूरों को एक महीने का निःशुल्क राशन इसी महीने में उपलब्ध कराया जा रहा है। विभिन्न योजनाओं में पेंशन पाने वाले 86,71,781 लाभार्थियों को 871.4693 करोड़ रुपये की बड़ी सौगात दी गई है। ग्रामीण क्षेत्रों और नगर निकायों में जिन असहाय व्यक्तियों के पास अपने परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था नहीं है, ऐसे व्यक्तियों को 1000 रुपये प्रतिमाह उपलब्ध कराए जाएंगे। लॉकडाउन के बीच 1.5 करोड़ किसानों के लिए यह राहत की बात है कि उनके खातों में सम्मान निधि के दो हजार रुपये भेजे गए। योगी सरकार ने विश्वकर्मा श्रम सम्मान वाले 15 श्रेणियों के दो लाख परिवारों को भी भरण-पोषण के लिए तत्काल 1000 रुपये जारी करने के निर्देश दिए।

जब सरकारें जनता के साथ खड़ी होती हैं तो जनता भी जरूरत पड़ने पर उसके साथ खड़ी ही दिखती है। गरीब तबका मूलतः कृतज्ञ भाव वाला वर्ग है जो अपने ऊपर किए गए अहसान को ब्याज सहित लौटाता है। यह बात सभी राजनीतिक वर्ग को समझना जरूरी है। इसी तरह समाज को भी यह समझना जरूरी है कि आज जब लोग कोरोना से बचने के लिए अपने घरों में कैद हैं, तब इसी वर्ग के लोग सड़कों पर सफाई कर रहे हैं, घरों तक फल-सब्जियां, गैस सिलेंडर आदि पहुंचा रहे हैं और पुलिस व स्वास्थ्य विभाग से जुड़े कोरोना योद्धाओं के साथ खड़े रहकर उनकी मदद कर रहे हैं। देश को इस संकट से उबारने में यह तबका बहुत उपयोगी भूमिका निभा रहा है। इसलिए इनकी मदद करना सरकारों और पूरे देश का दायित्व है।

लॉकडाउन जैसी स्थिति दिहाड़ी कामगारों के लिए नई मुश्किल खड़ी कर देती है। फाइल

आरोग्य सेतु को छह करोड़ प्रयोक्ताओं तक पहुंचाएगा शेयरचैट

नई दिल्ली : सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म शेयरचैट ने कहा है कि वह आरोग्य सेतु एप के बारे में जागरूकता के प्रसार हेतु पांच करोड़ रुपये के विज्ञापन क्रेडिट्स अलग से रख रहा है। आरोग्य सेतु एप को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया है। इसका मकसद सूचनाएं मुहैया कराना, सक्रियता के साथ लोगों तक पहुंचना और उन्हें कोविड-19 से संबंधित जोखिमों के बारे में उचित परामर्श प्रदान करना है। (वि.)

वर्क फ्रॉम होम की संस्कृति विकसित होने से आइटी कंपनियों को लंबी अवधि में बड़ा फायदा होगा। हालांकि लॉकडाउन की वजह से छोटी आइटी कंपनियों को कई दिक्कतें आ सकती हैं।

– आर. चंद्रशेखर, पूर्व प्रेसिडेंट, नैसकॉम

दूर होगा संकट, उद्योग जगत ने तैयार किया लॉकडाउन खोलने का रोडमैप

सीआइआइ ने कहा ▶ सरकार, प्रशासन और उद्योगों के बीच सामंजस्य से बनेगी बात

मानकों का पालन करते हुए तीन चरणों में सारे उद्योगों को खोलने का किया आग्रह

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रतीकात्मक

कोरोना वायरस की वजह से जिस तरह से देश लॉकडाउन की स्थिति में है, उसकी आर्थिक लागत को लेकर चिंता अब गहराने लगी है। ऐसे में उद्योग जगत के संगठन सीआइआइ ने सरकार को लॉकडाउन से औद्योगिक सेक्टर को उबारने का एक रोडमैप दिया है। इसमें कड़े स्वास्थ्य मानकों का पालन करते हुए तीन चरणों में सारे उद्योगों को खोलने का आग्रह किया गया है। सीआइआइ ने कहा है कि मौजूदा चुनौतीपूर्ण हालात में भी औद्योगिक गतिविधियों को केंद्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय प्रशासन व उद्योग जगत के बीच सामंजस्य बना कर शुरू किया जा सकता है। सीआइआइ ने सारे उद्योग जगत को तीन सेक्टर में बांटा है और इन्हें प्राथमिकता के तौर पर खोलने का सुझाव दिया है ताकि आर्थिक मंदी बहुत गहराने से पहले कल-कारखानों को शुरू किया व बेरोजगार हुए लोगों को रोजगार दिया जा सके।

उद्योगों के साथ ही समूचे देश को भी सीआइआइ ने तीन सेक्टर में बांटा है। इसे कोविड-19 के प्रसार के आधार पर रेड, एंबर (पीला) व ग्रीन क्षेत्र में बांटते हुए इनमें स्थित उद्योगों को अलग-अलग तरीके से खोलने का सुझाव दिया गया है। रेड सेक्टर में वैसे उद्योगों को खोला जा सकता है जिनका बाहरी दुनिया से कोई संपर्क नहीं हो। इसमें कहा गया है कि ग्रीन क्षेत्र (कोविड-19 से मुक्त) में स्थित उद्योगों को खोलना ज्यादा आसान है लेकिन यह रणनीति बनानी होगा कि इन क्षेत्रों के सभी उद्योगों को खोलना है या नहीं। एंबर सेक्टर में किन उद्योगों को खोला जा सकता है इसका फैसला अलग से किया जा सकता है। लेकिन यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इन सभी सेक्टर में उद्योगों को बेहद सख्त नियमों का पालन करना पड़े। जो उद्योग इसका पालन नहीं करेगा उस पर सख्त जुर्माना लगाने का प्रावधान भी होना चाहिए। जो उद्योग खोले जाएंगे उन्हें अलग से कर्ज व अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करनी होगी।

बैंकों की तरफ से अतिरिक्त वर्किंग कैपिटल देने की व्यवस्था पहले ही करनी होगी। साथ ही कई उद्योगों के समक्ष कामगारों की भी जरुरत होगी जिसे उपलब्ध कराने में राज्य सरकारों को मदद करनी होगी। कार्यस्थल पर श्रमिकों की सुरक्षा, कच्चे माल की आपूर्ति व तैयार माल को निश्चित जगत पर पहुंचाने जैसे काम भी करने होंगे। इसके लिए भी राज्यों के बीच बेहतरीन नेटवर्क की जरूरत होगी। लॉकडाउन की वजह से गांव लौट चुके श्रमिकों को सुरक्षित कार्यस्थल पर पहुंचाने की रणनीति बनानी होगी।

एचडीएफसी में चीन के केंद्रीय बैंक पीबीसी ने बढ़ाई अपनी हिस्सेदारी

मुंबई, प्रेट्र : ऐसे माहौल में जब दुनियाभर की प्रमुख कंपनियां चीन से हाथ खींच रही हैं और निवेशक उससे दूर भागते नजर आ रहे हैं, चीन के केंद्रीय बैंक पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना यानी पीबीसी ने भारत में संपत्ति के बदले कर्ज देने वाली एचडीएफसी लिमिटेड में हिस्सेदारी एक प्रतिशत से अधिक कर ली है। शेयर बाजारों को दी जानकारी में एचडीएफसी ने बताया कि इस वर्ष 31 मार्च को चीन के केंद्रय बैंक की हिस्सेदारी 1,74,92,909 शेयरों के साथ 1.01 प्रतिशत पर जा पहुंची।

गौरतलब है कि पिछले दो महीनों के दौरान कोरोना संकट के चलते शेयर बाजार एक-चैथाई से अधिक गिर चुके हैं और इसी अवधि में कई निवेशकों ने पसंदीदा स्टॉक्स की जमकर खरीदारी की है। जानकारी के मुताबिक पीबीसी ने भी इसी अवधि में एचडीएफसी में हिस्सेदारी बढ़ाई। हालांकि अभी यह पता नहीं चल सका है कि पीबीसी ने किस भाव पर नए शेयर खरीदे।

बीते वित्त वर्ष की आखिरी तिमाही में एचडीएफसी का शेयर भाव करीब 33 प्रतिशत टूट चुका है। इस वर्ष पहली जनवरी को कंपनी के शेयरों का भाव 2,433.75 रुपये था, जो 31 मार्च को 1,630.45 रुपये रह गया।

इस बारे में एचडीएफसी के वाइस चेयरमैन और सीईओ केकी मिस्त्री का कहना था कि एचडीएफसी में पीबीसी का निवेश कोई नई बात नहीं है। पीबीसी पहले से ही एचडीएफसी का शेयरधारक था। लेकिन हिस्सेदारी एक प्रतिशत से कम होने की वजह से अब तक शेयरधारकों की सूची में उसके जिक्र की बाध्यता नहीं थी। पिछली तिमाही के आखिर में उसकी हिस्सेदारी एक प्रतिशत से ऊपर हो गई, लिहाजा शेयरधारकों की सूची में उसका नाम जाहिर किया गया है। उनके मुताबिक पिछले वर्ष मार्च के आखिर में एचडीएफसी में पीबीसी की 0.80 प्रतिशत हिस्सेदारी थी।

कई रिपोर्ट का कहना है कि चीन के प्रमुख बैंक भारत में निवेश की संभावनाएं तलाश रहे हैं। गौरतलब है कि चीन की कई कंपनियों और निवेशकों ने भारतीय कंपनियों में निवेश किया हुआ है। लेकिन चीन के प्रमुख बैंकों का भारत की बैंकिंग या प्रमुख गैर-बैंकिंग कंपनियों में कोई उल्लेखनीय निवेश अब तक नहीं रहा है।

- एक प्रतिशत से अधिक हो गई एचडीएफसी में पीबीसी की शेयरधारिता
- शेयर बाजारों में बड़ी गिरावट का पीबीसी ने उठाया फायदा

वर्ल्ड बैंक ने कहा, भारत की विकास दर में दशकों की सबसे बड़ी गिरावट के आसार

- आर्थिक उदारीकरण के बाद के सबसे सुस्त आर्थिक विकास का अंदेशा
- चालू वित्त वर्ष में 2.8 प्रतिशत के ऊपर नहीं जाएगी विकास दर
- सेवा क्षेत्र को खासतौर पर बड़े नुकसान की है आशंका

फाइल

वाशिंगटन, प्रेट्र : विश्व बैंक ने भारत की आर्थिक विकास दर में तीन दशकों की सबसे बड़ी गिरावट की आशंका व्यक्त की है। दक्षिण एशिया की इकोनॉमी पर केंद्रित अपनी रिपोर्ट में बैंक ने कहा है कि कोरोना महामारी ने भारत की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया है। इसके चलते देश की इकोनॉमी वर्ष 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद की सबसे कम दर से विकास के कगार पर खड़ी है।

कोरोना संकट ने भारतीय अर्थव्यवस्था को इतनी चोट पहुंचाई है कि चालू वित्त वर्ष में उसकी विकास दर 1.5 प्रतिशत के स्तर तक गिर सकती है। लेकिन बहुत अच्छी अवस्था में भी वह 2.8 प्रतिशत से ऊपर नहीं जाएगी। वहीं, इस वर्ष मार्च में खत्म वित्त वर्ष के लिए विश्व बैंक ने भारतीय इकोनॉमी की विकास दर 4.8 से पांच प्रतिशत आंकी है। रिपोर्ट के मुताबिक सेवा क्षेत्र को खासतौर पर बड़े नुकसान की आशंका है।

रिपोर्ट का कहना है कि कोविड-19 ने ऐसे वक्त में दस्तक दी, जब वित्तीय क्षेत्रों पर दबाव के चलते भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर पहले ही सुस्त हो चुकी थी। कोविड-19 से बचने के लिए सरकार ने मार्च के आखिरी सप्ताह में 21 दिनों के देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की। इसके चलते फैक्ट्रियां बंद हो गईं, कारोबार ठप हो गए और वस्तुओं व सेवाओं की ढुलाई बंद हो गई।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक लॉकडाउन की इस स्थिति के चलते घरेलू मांग और आपूर्ति में भी बड़ी कमी आई, जबकि विदेशी मांग पहले से ही कम थी। बैंक का कहना है कि भारत के वित्तीय क्षेत्र पर दबाव घटा नहीं है। इसके साथ ही घरेलू निवेश की स्थिति में बहुत सुधर की गुंजाइश नहीं दिख रही है। हालांकि कोरोना का असर खत्म होने और इकोनॉमी को मौद्रिक नीतियों का सहयोग मिलने के बाद अगले वित्त वर्ष (2021-22) के दौरान देश की आर्थिक विकास दर पांच प्रतिशत तक के स्तर को छू सकती है।

गौरतलब है कि पिछले दिनों कई अन्य वैश्विक एजेंसियों ने भी देश की विकास-दर को लेकर इसी तरह के अनुमान लगाए हैं। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने चालू वित्त वर्ष के दौरान देश की आर्थिक विकास दर चार प्रतिशत आंकी है, जबकि एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स के मुताबिक भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर चालू वित्त वष में 3.5 प्रतिशत तक रहने की उम्मीद जताई है।

फिच रेटिंग्स ने तो चालू वित्त वर्ष के लिए विकास दर अधिक से अधिक दो प्रतिशत बताई है। इंडिया रेटिंग्स ने भी चालू वित्त वर्ष के लिए भारत का विकास दर अनुमान घटाकर 3.6 प्रतिशत रखा है। मूडीज इन्वेस्टर्स सर्विस ने जनवरी में शुरू हुए वर्ष के लिए देश की अनुमानित विकास दर घटाकर 2.5 प्रतिशत रखी है।

नहीं जाने दिया श्रमिकों को, बना रहेगा बीकानेरी भुजिया का स्वाद

मनीष गोधा, जयपुर : पूरी दुनिया में राजस्थान के बीकानेर की पहचान बन चुकी बीकानेरी भुजिया का स्वाद लॉकडाउन खत्म होने के तत्काल बाद मिलने लगेगा। लॉकडाउन शुरू होते ही पूरे देश में औद्योगिक क्षेत्रों से श्रमिकों का पलायन हुआ लेकिन बीकानेरी भुजिया बनाने वाले उद्यमियों ने इस मामले में एक उदाहरण पेश किया। उन्होंने श्रमिकों को रोका और इस उद्योग में लगे करीब एक लाख प्रवासी श्रमिकों का रहने- खाने का पूरा खर्च उद्यमी ही उठा रहे हैं। अब काम शुरू करने की अनुमति मिलते ही श्रमिकों को वापस बुलाना या काम तत्काल शुरू करवाना चुनौती नहीं है।

राजस्थान की बीकानेरी भुजिया, पापड़ और रसगुल्ला पूरी दुनिया में अपने स्वाद के दम पर अलग ही पहचान रखता है। बीकानेर शहर तथा आसपास के इलाकों में छोटी-बड़ी करीब 500 इकाइयां ऐसी हैं जो बीकानेरी भुजिया, पापड़, बड़ी, रसगुल्ला आदि बना रही हैं। पहले सारा काम हाथ से होता था, अब मांग बढ़ने के साथ ही यह काम मशीनों से होने लगा है। हाथ से भुजिया, पापड़ बनाने वाले कारीगरों और श्रमिकों की संख्या अब ज्यादा नहीं है।

पेट्रो उत्पादों की मांग में भारी कमी से चिंता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- वाहनों के रोड से हटने और औद्योगिक गतिविधियों के ठप होने से हर तरह की ऊर्जा की मांग घटी
- 2020 में पेट्रोल की मांग में 16.3 फीसद और डीजल में 24 फीसद की हुई है गिरावट

प्रतीकात्मक

सरकारी तेल कंपनियां केंद्र सरकार के निर्देश पर देश भर में उज्ज्वला योजना को आगे बढ़ाने में जोर-शोर से लग गई हैं। लेकिन लॉकडाउन की वजह से जिस तरह से पेट्रोल व डीजल की मांग घट रही है उससे चिंता बढ़ती जा रही है। लॉकडाउन के चलते वाहनों के रोड से हटने और औद्योगिक गतिविधियों के ठप होने से हर तरह की ऊर्जा की मांग कम हो गई है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक मार्च, 2020 में पेट्रोल की मांग में 16.3 फीसद और डीजल में 24 फीसद की गिरावट हुई है। जबकि अप्रैल के महीने में अभी तक के आंकड़े बताते हैं कि उक्त दोनों उत्पादों की मांग में गिरावट 70 फीसद तक की है। इसी तरह से बिजली की मांग भी 30-35 फीसद तक घट गई है।

तेल कंपनियों के सूत्रों का कहना है कि पिछले कई दशकों के बाद ऐसा माहौल बना है कि पेट्रोल व डीजल की मांग में अचानक दो-तिहाई की गिरावट हो गई है। ऐसे में क्रूड आवक से लेकर तैयार उत्पादों के स्टॉक प्रबंधन तक नए सिरे से तैयारी करनी पड़ रही है। एक समस्या क्रूड यानी कच्चा तेल प्रबंधन को लेकर आ रही है। बिक्री नहीं होने की वजह से रिफाइनरियों में तैयार उत्पाद का स्टॉक बहुत ही ज्यादा है, ऐसे में नए क्रूड का स्टॉक लेने की उनकी क्षमता कम हो गई है।

हालांकि तेल कंपनियों के पास पहले से जो क्रूड है उसे देश के रणनीतिक भंडार में ट्रांसफर करने की तैयारी हो रही है। लेकिन यह काम भी काफी कठिन है क्योंकि इंडियन ऑयल, हिंदुस्तान पेट्रोलियम व भारत पेट्रोलियम की रिफाइनरियां देशभर में हैं। जबकि तीनों रणनीतिक भंडार मेंगलुरु, विशाखापत्तनम व पुदुर में हैं। रिफाइनरियों से क्रूड को इन भंडारों तक पहुंचाने में समय लगेगा। लेकिन इससे तेल कंपनियों के पास कुछ जगह खाली हो सकती है जिसे वे सस्ते क्रूड खरीदकर भर सकती हैं। पेट्रोल व डीजल की मांग में कमी होने की भरपाई तेल कंपनियां एलपीजी की मांग से कर रही हैं।

कोरोना वायरस के कारण जारी लॉकडाउन के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने एलान किया था कि उज्ज्वला योजना के सभी लाभार्थियों को तीन एलपीजी सिलेंडर दिए जाएंगे। ऑयल कंपनियां इस काम में जुट गई हैं। अभी तक के आंकड़े बताते हैं कि अप्रैल में 1.26 करोड़ एलपीजी सिलेंडर की बुकिंग हुई है जिसमें से 85 लाख सिलेंडर की आपूर्ति की जा चुकी है।

जैम से पीएमजीकेवाई लाभार्थियों को तुरंत मिल रही रकम

नई दिल्ली, प्रेट्र : वित्त मंत्रालय ने कहा है कि दमदार डिजिटल पेमेंट इन्फ्रा के बूते प्रधनमंत्री गरीब कल्याण योजना यानी पीएमजीकेवाई के लाभार्थियों को तेजी से रकम भेजी जा रही है। मंत्रालय के मुताबिक जनधन समेत अन्य खातों को आधार नंबर व मोबाइल नंबर से जोड़ने के लिए कुछ वर्ष पहले जैम यानी जनधन-आधार-मोबाइल लिंकिग योजना शुरू की गई थी। उसका फायदा यह हुआ है कि सरकार पीएमजीकेवाई लाभार्थियों के खाते में 28,256 करोड़ रुपये डालने की योजना के तहत काम तेजी से आगे बढ़ा रही है।

गौरतलब है कि लॉकडाउन के दौरान गरीबों और वंचितों को संभावित तकलीफों से निजात दिलाने के लिए वित्त मंत्रालय ने 26 मार्च को पीएमजीके पैकेज की घोषणा की थी। इसके लाभार्थियों को रकम सीधे उनके जनधन खाते में दी जा रही है। अपने बयान में वित्त मंत्रालय ने कहा कि जैम की यह इन्फ्रास्ट्रक्चर व्यवस्था बेहद कारगर साबित हो रही है। इसके माध्यम से डीबीटी और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के तहत तत्काल सहायता पहुंचाई जा सकती है।

कोरोना वायरस के घटनाक्रम तय करेंगे बाजार की दिशा

नई दिल्ली, प्रेट्र : पिछले कई सप्ताह से बेहद अस्थिर रहे शेयर बाजारों के सामने इस सप्ताह भी कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं। जानकारों का कहना है कि इस सप्ताह भी शेयर बाजारों की चाल बहुत हद तक दुनियाभर में कोरोना के बढ़ते या घटते स्तर और अलग-अलग देशों द्वारा उससे बाहर निकलने के प्रयासों पर निर्भर करेगी।

घरेलू बाजार में निवेशकों की नजर सबसे ज्यादा इस बात पर रहेगी कि इस सप्ताह मंगलवार मध्यरात्रि को खत्म हो रही 21 दिनों की लॉकडाउन अवधि बढ़ाई जाती है या नहीं। निवेशक यह भी जानना चाहेंगे कि अगर लॉकडाउन में किसी तरह की छूट दी जाती है तो बाजार, इकोनॉमी और कारोबारी जगत को इससे कुछ भी फायदा होगा या नहीं। इस सप्ताह निवेशक थोक और खुदरा महंगाई दर आंकड़ों पर भी पैनी नजर रखेंगे।

जहां तक लॉकडाउन खत्म होने का सवाल है, तो ज्यादातर राज्य इसे थोड़ा और बढ़ाने के पक्ष में हैं। बीते शनिवार को मुख्यमंत्रियों के साथ प्रधनमंत्री नरेंद्र मोदी की बैठक में अधिकतर मुख्यमंत्रियों ने लॉकडाउन की अवधि अप्रैल के आखिर तक बढ़ाने का आग्रह किया है। हालांकि प्रधनमंत्री ने फोकस 'जान है तो जहान है' से थोड़ा हटाकर 'जान भी जहान भी' की ओर करने की घोषणा की है। इसका मतलब यह है कि लॉकडाउन में थोड़ी ढील मिल सकती है। इस सप्ताह मंगलवार को आंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में शेयर बाजार बंद रहेंगे।

शेयर बाजारों की इस सप्ताह की चाल के बारे में जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि पिछले सप्ताह बाजारों ने अच्छी रिकवरी की है। लेकिन इस वक्त जिस तरह के हालात हैं, उसे देखते हुए बाजारों की यह बढ़त थोड़े वक्त के लिए है। बाजार को उम्मीद है कि लॉकडाउन से जिस एमएसएमई और अन्य सेक्टरों को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा है, सरकार उनके लिए राहत पैकेज की घोषणा कर सकती है।

वहीं, मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के रिटेल रिसर्च प्रमुख सिद्धार्थ खेमका का कहना था कि निवेशक लॉकलाउन की अवधि बढ़ने को लेकर चिंतित हैं। अगर इसे जारी रखते हुए थोड़ी छूट भी दी गई, तो भी बाजार अस्थिर ही रहने वाले हैं।

- घरेलू बाजार में निवेशकों की नजर इस बात पर रहेगी कि लॉकडाउन अवधि बढ़ाई जाती है या नहीं
- छूट मिलने की स्थिति बाजार, इकोनॉमी और कारोबारी जगत को इससे कुछ भी फायदा होगा या नहीं

फाइल

छह वर्ष बाद गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड में लौटे निवेशक

नई दिल्ली, प्रेट्र : लगातार छह वित्त वर्षों तक रकम निकासी के बाद पिछले वित्त वर्ष में निवेशक गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड यानी ईटीएफ की ओर लौटे हैं। पिछले वित्त वर्ष में निवेशकों ने गोल्ड ईटीएफ में 1,600 करोड़ रुपये से अध्कि का निवेश किया है। जानकारों का कहना है कि कोरोना वायरस से उपजे संकट की वजह से गोल्ड ईटीएफ अब निवेशकों को सुरक्षित निवेश ठिकाना लग रहा है। इस निवेश के बाद गोल्ड ईटीएफ का असेट अंडर मैनेजमेंट यानी एयूएम इस वर्ष मार्च के अंत में 79 प्रतिशत बढ़कर 7,949 करोड़ रुपये पर जा पहुंचा। यह राशि पिछले वर्ष मार्च के आखिर में 4,447 करोड़ रुपये थी।

स्मॉल व मिडकैप इंडेक्स ने निवेशकों को किया निराश

नई दिल्ली, प्रेट्र : पिछले महीने स्मॉल व मिडकैप इंडेक्स ने निवेशकों को खासा निराश किया है। कोविड-19 के संकट के बीच इस वर्ष मार्च में शेयर बाजारों ने गिरावट और उछाल के नए रिकॉर्ड बनाए। शेयर बाजारों की इस अस्थिरता में बीएसई मिडकैप और 30 प्रतिशत तक गिर गए। पिछले महीने बीएसई मिडकैप में 4,030.09 अंकों यानी 27.60 प्रतिशत गिरावट आई और स्मॉलकैप इंडेक्स को 4,100.09 अंकों यानी 29.90 प्रतिशत का नुकसान झेलना पड़ा। इसी अवधि में बीएसई का 30-शेयरों वाला बेंचमार्क सूचकांक सेंसेक्स 8,828.80 अंक यानी 23 प्रतिशत गिर गया था। पिछले महीने बिकवाली की ऐसी आंधी चली थी कि सेंसेक्स इस वर्ष 20 जनवरी को हासिल किए 42,273.87 अंक के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर से फिसलकर 24 मार्च को 25,638.90 अंक पर आ गया था। उस दिन मिडकैप इंडेक्स भी गिरते हुए 9,555.24 के स्तर पर रह गया। स्मॉलकैप तो उस दिन 8,622.24 अंक के सर्वकालिक निम्न स्तर तक गिर गया था।

चिंताजनक

कर्फ्यू नहीं खुला तो हिल सकती है हिमाचल की आर्थिकी की रीढ़, जुलाई में मार्केट में आ जाएगा नया सेब

कोल्ड स्टोर में रखे करोड़ों के सेब पर मंडरा रहा खतरा

करोड़ों रुपये का पिछला सेब है स्टोर, बागवानों सहित कंपनियां भी हैं परेशान

जागरण संवाददाता, शिमला

सेब हिमाचल की आर्थिकी की रीढ़ है। लॉकडाउन और कर्फ्यू से सेब पर दोहरा खतरा मंडरा रहा है। कोल्ड स्टोर में पड़ा सेब बाहर नहीं निकल पा रहा है। वहीं, अगले सीजन तक क्या स्थिति रहेगी, इस पर भी असमंजस है।

ऑफ सीजन में बेहतर रेट के लिए बड़े बागवान और कंपनियां स्टोर में सेब रखती हैं। इसे मार्च से 15 जून तक बेचा जाता है। इस बार नवरात्र का सीजन लॉकडाउन व कर्फ्यू के कारण निकल गया। उम्मीद है कि अप्रैल के बाद कर्फ्यू हटा तो कुछ राहत मिलेगी क्योंकि जुलाई में निचली बेल्ट से सेब की फसल मार्केट में आना शुरू हो जाती है। कोल्ड स्टोर में सेब रखने के लिए एक रुपये 70 पैसे प्रति किलो का किराया देना होता है। अडानी सहित बड़े ग्रुप बागवानों से सेब खरीद कर यहीं पर स्टोर करते हैं। शिमला जिले में ही ग्रुप के तीन कोल्ड स्टोर रोहड़ू, रामपुर और बिथल में हैं। इनके अलावा एचपीएमसी के कोल्ड स्टोर शिमला और परवाणू में हैं। ठियोग और कुल्लू जिले में भी कोल्ड स्टोर हैं। प्रदेश में 50 हजार मीट्रिक टन सेब स्टोर करने की क्षमता है।

सेब के ट्रक ले जाने को तैयार नहीं ड्राइवर : प्रशासन ने ट्रक चालकों को अन्य राज्यों में जाने की व्यवस्था करने के साथ उन पर शर्त लगा दी है। चालकों को सेब छोड़कर वापस आने पर 14 दिन क्वारंटाइन रहना होगा। ऐसे में कोई भी चालक सेब ले जाने के लिए तैयार ही नहीं हो रहे हैं। जो चालक जाने के लिए तैयार भी हैं उन्हें सेब लोड करने के लिए मजदूर नहीं मिल रहे।

कोल्ड स्टोर की क्षमता

अडानी कोल्ड स्टोर	10,000 टन
देवभूमि	7,000 टन
एचपीएमसी शिमला	3,000 टन
एचपीएमसी परवाणू	2,000 टन

प्रतीकात्मक

और भी हैं दिक्कतें

प्रदेश के सेब बागवानों की समस्या बस यही नहीं है। कर्फ्यू के कारण अगले सीजन को लेकर भी परेशान हैं। सेब के पौधों में फूल आ रहे हैं। ऐसे में दवाओं का छिड़काव करना जरूरी है, लेकिन दुकानों पर कीटनाशक नहीं मिल रहे हैं। बागवानों का कहना है कि अभी कम से कम दो छिड़काव करने हैं, पास की जिस दुकान से दवाएं लेते हैं, लेकिन उनका माल दिल्ली से नहीं आया है।

एचपीएमसी के कोल्ड स्टोर में रखा सेब बागवान निकाल कर मंडियों में पहुंचा सकते हैं। अभी तक बागवानों की तरफ से ऐसी कोई शिकायत नहीं आई है। शिकायत आती है तो उस पर कार्रवाई की जाएगी।

–देवश्वेता बनिक, एमडी, एचपीएमसी

कर्फ्यू लगने के शुरू में बागवानों को कुछ दिक्कत आई थी। यदि बागवानों को माल मंडियों में पहुंचाने में दिक्कत आ रही है तो बोर्ड को बताएं, व्यवस्था की जाएगी।

–नरेश ठाकुर, प्रबंध निदेशक मार्केटिंग बोर्ड

अन्य राज्यों को ट्रक ले जाने की अनुमति दे दी है। चालक को स्वयं क्वारंटाइन रहना होगा। सुरक्षा की दृष्टि से यह निर्णय लिया गया है।

–अमित कश्यप, उपायुक्त शिमला

अब हिमाचल प्रदेश की आर्थिक सेहत सुधारने पर जोर

राज्य ब्यूरो, शिमला

अब हिमाचल सरकार का जोर प्रदेश की आर्थिक सेहत सुधारने पर रहेगा। हिमाचल में लॉकडाउन के दूसरे चरण के बाद चरणबद्ध तरीके से आर्थिक गतिविधियां आरंभ होगी। सरकार लॉकडाउन से बाहर आने का एग्जिट प्लान बना रही है। इसका प्रारंभिक खाका तैयार हो गया है।

योजना विभाग ने रविवार को मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के सामने इसकी प्रस्तुति दी। इसके अनुसार हिमाचल को छह जोन में बांटा जाएगा। सबसे पहले ग्रीन जोन में ही आर्थिक गतिविधियां शुरू होंगी। उसके बाद ऑरेंज के चार जोन और सबके बाद में रेड जोन खुलेगा। इस प्लान को पहली मई के बाद ही लागू किया जाएगा।

ऐसा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देशों के बाद रहा है। योजना सलाहकार डॉ. बसु सूद ने इस संबंध में मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुति दी। बैठक में मुख्य सचिव अनिल खाची, पुलिस महानिदेशक एसआर मरडी, अतिक्ति मुख्य सचिव मनोज कुमार और आरडी धीमान, प्रधान सचिव वित्त प्रबोध सक्सेना, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव संजय कुंडू और सचिव वित्त अक्षय सूद समेत कई अधिकारी मौजूद रहे।

अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। राज्य में सामान्य स्थिति को बहाल करने, आर्थिक गतिविधियों को पुनर्जीवित करने और कमजोर वर्गों की आर्थिक व खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चरणबद्ध तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है।

–जय राम ठाकुर, मुख्यमंत्री।

ये होंगे जोन : राज्य को छह जोन में विभाजित किया जाएगा। इसमें ग्रीन जोन(एक), ऑरेंज जोन (चार)और रेड जोन(एक) होगा। ग्रीन जोन वो जोन है कि जहां रोग नहीं फैला है।

कोरोना पर ट्रंप के फैसलों में देरी का नतीजा भुगत रहा है अमेरिका

न्यूयॉर्क टाइम्स से

- अमेरिकी खुफिया एजेंसियों व स्वास्थ्य विभाग की चेतावनियों को किया था दरकिनार
- आक्रामक कदम उठाने में की देर, समय रहते अमेरिकी राष्ट्रपति नहीं ले पाए कड़े फैसले

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कोरोना वायरस पर नियमित प्रेस कांफ्रेंस के दौरान। उनके साथ उपराष्ट्रपति माइक पेंस हैं। फाइल/एएफपी

न्यूयार्क : अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को उनकी खुफिया एजेंसियों और अमेरिकी स्वास्थ्य सेवाओं ने बहुत पहले ही कई दफा चेताया था कि कोरोना वायरस का संक्रमण वैश्विक महामारी का रूप ले सकता है और अमेरिका को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। लेकिन राष्ट्रपति ट्रंप ने अर्थव्यवस्था का हवाला देकर बार-बार उनकी सलाहों को नजरअंदाज किया। इसी का नतीजा है कि रविवार को कोरोना से मरने वालों की तादाद अमेरिका में इटली से भी ज्यादा हो गई है। अमेरिका में अब तक नोवल कोरोना वायरस से 5,30,000 से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं और 20,608 लोगों की मौत हो चुकी है।

अमेरिकी खुफिया एजेंसियों, नेशनल सिक्योरिटी और सरकार के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने ट्रंप को चेताया था कि अमेरिका पर इस वैश्विक महामारी का बेहद बुरा असर होने वाला है, लेकिन तब ट्रंप ने इस संकट को गंभीरता से नहीं लिया था। आंतरिक खींचतान, किसी दूरगामी योजना की कमी और ट्रंप के अपने हिसाब से चलने की जिद ने इस संकट को और विकराल रूप दे दिया है। फिलहाल पूरी दुनिया में अमेरिका ही इस वैश्विक महामारी से सबसे अधिक पीड़ित है। केवल स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि इस महामारी ने आर्थिक महाशक्ति की अर्थव्यवस्था को भी भारी मुसीबत में डाल दिया है।

व्हाइट हाउस के आला अफसरों का कहना है कि उनकी सलाहों को मानने में ट्रंप ने देर कर दी है। नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के अधिकारियों को जनवरी की शुरूआत में ही चीन के वुहान शहर से शुरु होने वाली इस महामारी को लेकर चेतावनी जारी की गई थी।

ट्रंप के प्रमुख व्यापार सलाहकार पीटर नवारो ने जनवरी के अंत में अपने मेमो में अपील की थी कि यह वायरस अमेरिका के लिए बेहद घातक साबित हो सकता है। उनका कहना था कि अमेरिका में इससे 50 लाख से अधिक लोगों की मौत हो सकती है। और अमेरिकी अर्थव्यवस्था को भी अरबों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा सकता है। इस मेमो में बताया गया था कि 30 फीसद अमेरिकी आबादी इससे संक्रमित हो जाएगी और करीब 50 लाख की मौत हो जाएगी। उल्लेखनीय है कि ट्रंप ने कोई मेमो देखने की बात से इन्कार किया था, लेकिन अखबार ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया है कि ट्रंप इस बात से नाखुश हुए थे।

अफसरों को नहीं मिला योजना पेश करने का मौका

अमेरिका ने बेहद अहम तीन हफ्ते बिना किसी तैयारी के गंवा दिए। फिर फरवरी के तीसरे हफ्ते में ट्रंप प्रशासन के सर्वोच्च जनस्वास्थ्य अधिकारी ने वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए अब आक्रामक रणनीति अपनाने की जरूरत है जिसमें सामाजिक दूरी, लोगों को घर पर ही रहने के निर्देश और स्कूल बंद करने के आदेश शामिल हैं। लेकिन इन अफसरों को राष्ट्रपति के सामने अपनी योजना पेश करने का मौका ही नहीं मिला। इसके तीन हफ्ते बाद ही ट्रंप ने आक्रामक सामाजिक दूरी के दिशा-निर्देश जारी किए। लेकिन इस तीन हफ्ते की अवधि में कोरोना का संक्रमण अमेरिका में भयानक रूप ले चुका था। व्हाइट हाउस इन सिफारिशों पर अपनी राय को लेकर बंटा हुआ था। राष्ट्रपति के इर्द-गिर्द मौजूद लोगों की राय मार्च महीने के शुरू होने के बाद तक बंटी हुई थी।

युद्धपोत के दस फीसद से ज्यादा नौसैनिक वायरस से पीड़ित

- विमानवाहक पोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट पर तैनात थे 4800 नौसैनिक
- 3,673 लोगों में किसी प्रकार का नहीं मिला संक्रमण, किए गए शिफ्ट

वाशिंगटन, एएफपी : अमेरिकी विमानवाहक युद्धपोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट पर तैनात दस फीसद से ज्यादा नौसैनिकों का कोरोना वायरस टेस्ट पॉजिटिव आया है। गुआम में खड़े इस युद्धपोत पर 4800 नौसैनिक तैनात थे। इसी युद्धपोत के कप्तान ब्रेट क्रोजियर की बर्खास्तगी को लेकर उठे सवालों के बीच कार्यवाहक नौसेना प्रमुख थॉमस मोडली को इस्तीफा देना पड़ा।

नौसेना प्रवक्ता ने शनिवार को कहा, 'अभी तक पोत पर तैनात 92 फीसद लोगों का टेस्ट किया जा चुका है। 550 लोगों का टेस्ट पॉजिटिव आया है जबकि 3,673 लोगों में किसी प्रकार का संक्रमण नहीं मिला है। पोत पर मौजूद चालक दल में संक्रमण की बात सामने आने के बाद अब तक 3,696 लोगों को गुआम के विभिन्न होटलों और बैरक में शिफ्ट किया जा चुका है।' कमांडर क्रोजियर ने पोत पर कोरोना संक्रमण के प्रकोप की जानकारी देते हुए पेंटागन (रक्षा विभाग) से इसे खाली करने की अनुमति मांगी थी। क्रोजियर ने मीडिया में लीक हुए पत्र में लिखा था, 'हम फिलहाल कोई युद्ध नहीं लड़ रहे, ऐसे में नौसैनिकों का मरना जरूरी नहीं है।'

मीडिया में यह पत्र लीक होने के बाद कार्यवाहक नौसेना प्रमुख थॉमस मोडली ने कमांडर क्रोजियर को उनके पद से हटा दिया था। इसके लिए मोडली की चौतरफा आलोचना हुई थी और इसे उस सम्मानित अधिकारी को दी गई अनुचित सजा बताया गया था, जो अपने मातहतों की भलाई की बात कर रहा था।

न्यूज गैलरी

दक्षिण कोरिया में नए मामलों में देखी जा रही कमी

सियोल: एशिया में चीन के बाद कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित रहे दक्षिण कोरिया में अब नए मामलों में कमी देखने को मिल रही है। पिछले 24 घंटों में देश में नए मामलों की संख्या सिर्फ 32 रही। इसकी जानकारी देते हुए रविवार को दक्षिण कोरिया के रोग नियंत्रण केंद्र ने बताया कि नए मामलों को मिलाकर देश में कोरोना के अब तक कुल 10,512 मामले सामने आए हैं। इनमें 7368 संक्रमित ठीक हो चुके हैं। समूचे देश को कोरोना के संक्रमण से मुक्त करने के लिए बड़े स्तर पर टेस्ट कराए जा रहे हैं। फिलहाल 13,788 संदिग्धों की चिकित्सकीय जांच चल रही है। पिछले महीने देश में रोजाना संक्रमण के कई-कई सौ मामले सामने आ रहे थे। (एपी)

नेपाल की मस्जिद में छिपे तीन भारतीय पॉजिटिव निकले

काठमांडू : नेपाल के सीमावर्ती शहर बीरगंज की एक मस्जिद में छिपे तीन भारतीय नागरिक कोरोना जांच में पॉजिटिव पाए गए हैं। स्थानीय मीडिया के अनुसार, शनिवार को दोबारा की गई जांच के बाद तीनों के कोरोना संक्रमित होने की पुष्टि हुई। इन तीनों के साथ मस्जिद में रह रहे 26 अन्य लोगों को स्थानीय प्रशासन ने क्वारंटाइन कर दिया है। बताया जा रहा है कि पिछले महीने बिहार से लगते नेपाल के सीमावर्ती जिले सप्तरी में मुस्लिमों के एक बड़े समारोह में कई लोग सीमा पार कर पहुंचे थे। नए मामलों के साथ नेपाल में कोरोना वायरस के संक्रमितों की संख्या 12 हो गई है। स्थानीय स्तर पर फैले संक्रमण से एक मामला सामने आने के बाद नेपाल सरकार ने गत छह अप्रैल को देशव्यापी लॉकडाउन की सीमा 15 अप्रैल तक बढ़ा दी है। देश में 24 मार्च से लॉकडाउन लागू है। (प्रेट्र)

गुलाम कश्मीर में तेजी से फैल रहा वायरस का संक्रमण

वाशिंगटन: पाकिस्तान सरकार की उपेक्षा के कारण गुलाम कश्मीर का गिलगिट बाल्टिस्तान क्षेत्र कोरोना का दंश झेलने को मजबूर है। क्षेत्र में 35 नए मामलों के साथ कोरोना पीड़ितों की संख्या 216 हो गई है। खस्ताहाल स्वास्थ्य व्यवस्था वाले इस इलाके में कोरोना के मरीजों की बढ़ती संख्या के लिए लोग पाकिस्तान सरकार को जिम्मेदार मान रहे हैं। गिलगिट बाल्टिस्तान के लिए आवाज उठाने वाले कार्यकर्ता सैंगे एच सेरिंग का कहना है कि ईरान से लौटे कोरोना संक्रमित पर्यटकों को सरकार ने बिना किसी जांच के क्षेत्र में प्रवेश की इजाजत दे दी। इसका दुष्परिणाम अब देखने को मिल रहा है। स्वायत्त क्षेत्र के वकीलों का आरोप है कि पाक की इमरान सरकार खुफिया एजेंसी की मदद से कोरोना वायरस महामारी का गलत फायदा उठाने में लगी है। संदिग्ध के नाम पर कई लोगों को हिरासत में लेकर जबरन क्वारंटाइन किया जा रहा है। (एएनआइ)

सऊदी अरब में अनिश्चितकाल के लिए लगाया गया कर्फ्यू

सख्ती ▶ कोरोना वायरस का प्रकोप रोकने के लिए किंग सलमान ने उठाया कदम

बीते चार दिनों से सऊदी में हर रोज संक्रमण के 300 नए मामले आ रहे हैं सामने

रियाद, एजेंसियां : कोरोना का संक्रमण रोकने के लिए सऊदी अरब के किंग सलमान ने कड़ा कदम उठाया है। उन्होंने पूरे देश में अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है। पिछले सप्ताह सऊदी अरब ने राजधानी रियाद सहित कुछ दूसरे बड़े शहरों में 24 घंटे के कर्फ्यू का एलान किया था। हालांकि छोटे शहरों को कर्फ्यू में थोड़ी ढील दी गई है। इनमें दोपहर तीन बजे से सुबह छह बजे तक कर्फ्यू रहेगा। बता दें कि बीते चार दिनों से सऊदी अरब में हर रोज कोरोना संक्रमण के 300 नए मामले सामने आ रहे हैं।

सऊदी अरब में अब तक 4033 लोग संक्रमित हो चुके जबकि 52 लोगों की मौत हो चुकी है। छह खाड़ी देशों में सर्वाधिक प्रभावित सऊदी अरब ही है। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) दूसरा ऐसा देश है जो कोरोना से प्रभावित है। यहां पर 3,736 लोग संक्रमित हैं और 20 की मौत हो चुकी। खास बात यह है कि खाड़ी देशों में नेपाल, भारत और फिलीपींस से ताल्लुक रखने वाले कामगारों में प्रमुखता से संक्रमण देखा जा रहा है।

यूएई में भारत के राजदूत पवन कपूर ने गल्फ न्यूज से कहा, 'खाड़ी देशों में फंसे भारतीय कामगारों को देश ले जाने की कोई योजना नहीं है। मौजूदा स्थिति में सबसे अच्छा यह है कि जो जहां है, वहीं रहे। एक बार लॉकडाउन खत्म होने के बाद हम इन्हें देश वापस आने में जरूर मदद करेंगे।'

दुनियाभर में अप्रैल का माह त्योहारों और धार्मिक कार्यों से भरा होता है, लेकिन कोरोना की वजह से त्योहार और धार्मिक आयोजन महज रस्म अदायगी बन गए हैं। यह दृश्य वेटिकन में सेंट पीटर्स स्क्वॉयर का है, जहां ईसाइयों के प्रमुख पर्व ईस्टर संडे पर लोगों के न जुटने से सन्नाटा पसरा रहा। रायटर

जापान के पीएम पर भड़के ट्विटर यूजर : जापान के प्रधानमंत्री एबी शिंजो को लोगों को घर पर रहने की सलाह देना भारी पड़ा। दरअसल, उन्होंने ट्विटर पर एक वीडियो साझा किया, जिसमें वह अपने कुत्ते के साथ सोफे पर लेटे हुए चाय पी रहे हैं और लोगों को घर पर रहने की सलाह दे रहे हैं। जैसे ही यह वीडियो सामने आया, यूजर ने उनकी जमकर क्लास ली। एक यूजर ने लिखा कि एबी का संदेश उन लोगों की दिक्कतों को नजरअंदाज करता है जो इस महामारी के दौरान रोजी-रोटी के संकट का सामना कर रहे हैं। जापान में अभी तक संक्रमण के 6,000 मामलों की पुष्टि हुई हैं।

यूरोप में कोरोना से मरने वालों की संख्या 75 हजार के पार : यूरोप में कोरोना से मरने वालों की संख्या 75 हजार से ज्यादा हो गई है। यूरोप के चार बड़े देश इटली, स्पेन, फ्रांस और ब्रिटेन इस महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। यूरोप में 909,673 लोग संक्रमित हैं।

स्पेन में मृतकों की संख्या फिर बढ़ी : शनिवार के मुकाबले रविवार को स्पेन में मृतकों की संख्या में वृद्धि हुई। पिछले चौबीस घंटे में यहां 619 लोगों की जान गई। मरने वालों की कुल संख्या 16,972 हो गई है। रविवार को संक्रमण के 4167 मामले सामने आए। देश में संक्रमित लोगों की संख्या 166,019 हो गई है।

ईरान में 117 और लोगों की मौत : पिछले चौबीस घंटों में ईरान में 117 लोगों की मौत हुई है। वहां मरने वालों की संख्या 4,474 हो गई । संक्रमित मरीजों की संख्या 71,866 हो चुकी है।

देश	मौतें	संक्रमित
अमेरिका	20,595	533,470
इटली	19,468	152,271
स्पेन	16,972	166,019
फ्रांस	13,832	129,654
ब्रिटेन	9,875	78,991
ईरान	4,474	71,686
बेल्जियम	3,600	29,647
चीन	3,339	82,052

फ्रांस में ताबूत बनाने के लिए करना पड़ रहा ओवरटाइम

फ्रांस में कोरोना महामारी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि ताबूत बनाने वाली कंपनी के कर्मचारियों की मांग पूरी करने के लिए ओवरटाइम करना पड़ रहा है। यूरोप की सबसे बड़ी ताबूत बनाने वाली कंपनी ओजीएफ के डायरेक्टर इमैनुएल गैरेट ने कहा, 'महामारी के चलते हमने ताबूतों के सिर्फ चार मॉडल बनाने का फैसला किया। हालांकि हम सामान्य दिनों में 15 तरह के ताबूत बनाते थे।' उन्होंने कहा कि सामान्य दिनों में हम 370 ताबूत बनाते थे, लेकिन अब हम प्रत्येक दिन 410 ताबूत बना रहे हैं। इसके लिए कर्मचारियों को प्रतिदिन एक घंटा अधिक काम करना पड़ रहा है।

शिकायत के बाद चीन मास्क और वेंटीलेटर जांचने में जुटा

- कई देशों में आपूर्ति में हो सकती है देरी

न्यूयॉर्क टाइम्स से

बीजिंग: चीन के अधिकारियों ने एन-95 मास्क, वेंटीलेटर और अन्य मेडिकल उपकरणों के निर्यात के पहले इनकी हर खेप की निगरानी तेज कर दी है। चीन के इस कदम से कोरोना वायरस से निपटने की कोशिश कर रहे देशों के अस्पतालों में इनकी आपूर्ति में देरी हो सकती है। चीन को यह कदम इसलिए उठाना पड़ा, क्योंकि उसके द्वारा भेजे गए तमाम मेडिकल सामानों की गुणवत्ता को लेकर एक के बाद एक शिकायतें सामने आई हैं।

चीन के कस्टम विभाग के प्रशासन द्वारा घोषित नीति के मुताबिक इन उपकरणों के निर्यात के पहले चेक प्वाइंट बढ़ाए जा रहे हैं। नए चेक प्वाइंट गुणवत्ता को लेकर ही होंगे। पहले की व्यवस्था के अनुसार कस्टम विभाग द्वारा मुख्य रूप से दो-तीन चीजें जांची जाती थीं। इनके तहत निर्यात की जा रही सामग्री में शामिल चीजों की गिनती देखी जाती थी, यह देखा जाता था कि सामग्री से विदेश के पेटेंट नियमों का उल्लंघन तो नहीं हो रहा है और इसके साथ ही यह भी परखा जाता था कि जो दस्तावेज लगाए गए हैं कहीं वे फर्जी तो नहीं हैं।

नई नीति घोषित होते ही मेडिकल सामग्री के निर्यात में देरी आरंभ हो गई है। माना जा रहा है कि यह देरी कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों तक की हो सकती है। कस्टम विभाग ने फिलहाल यह नहीं बताया है कि क्वालिटी टेस्टिंग के काम में कितना वक्त लग सकता है।

चीन में बने मास्क और वेंटिलेटर की गुणवत्ता पर उठ रहे थे सवाल। फाइल

चीन के मेडिकल उपकरणों की गुणवत्ता पर सबसे अधिक शिकायतें यूरोप से आई हैं। कुछ देशों ने तो सामान वापस भी किया है। चीन दुनिया में मेडिकल सामानों की आपूर्ति के लिहाज से सबसे अधिक दबदबे वाला देश है। चीन ने क्वालिटी चेक के लिए जो नए नियम बनाए हैं वे 11 श्रेणियों में लागू होंगे। इनमें मास्क, मेडिकल प्रोटेक्टिव क्लाथ, सर्जिकल कैप, मेडिकल गॉगल्स, ग्लव्ज, शू कवर, पेशेंट मानिटर तथा डिसइंफेक्शन टावेल शामिल हैं। चीन दावा कर रहा है कि उसने अपनी सीमा के भीतर कोरोना वायरस के प्रकोप पर लगभग काबू पा लिया है।

तरनजीत सिंह संधू बोले, जहां हैं वहीं रहें अमेरिका में फंसे भारतीय छात्र

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिका में भारत के राजदूत तरनजीत सिंह संधू ने यहां फंसे भारतीय छात्रों को सलाह दी है कि वे जहां हैं वहीं रहें। उन्होंने सभी को मदद का भी आश्वासन दिया है। कोरोना महामारी के कारण विश्वविद्यालयों के अचानक बंद होने और भारत नहीं लौट पाने की वजह से बड़ी संख्या में छात्र यहां फंस गए हैं।

संधू शनिवार को यहां भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित इंस्टाग्राम लाइव सत्र में 500 से ज्यादा भारतीय छात्रों से रू-ब-रू हुए। यह सत्र इंडिया स्टूडेंट हब टीम के साथ मिलकर आयोजित किया गया था। राजदूत ने एक सवाल के जवाब में कहा, 'इस समय आपको सलाह दी जाती है कि आप जहां हैं वहीं रहें। हम आपकी हरसंभव मदद करेंगे।' इस दौरान उन्होंने छात्रों को यह आश्वासन भी दिया कि भारतीय दूतावास उनके वीजा मुद्दे पर अमेरिका की सरकार के साथ लगातार बातचीत कर रहा है।

न्यूयॉर्क में स्कूल बंद करने को लेकर गवर्नर और मेयर आमने-सामने

- मेयर बिल ने बंदी का एलान किया तो गवर्नर कुमो ने अधिकारों पर उठाए सवाल

न्यूयॉर्क, एजेंसियां : कोरोना महामारी के चलते बाकी बचे शैक्षणिक सत्र के दौरान न्यूयॉर्क में स्कूल बंद करने को लेकर गवर्नर और मेयर में ठन गई है। मेयर बिल डे ब्लासियो ने जहां स्कूल बंद रखने की घोषणा की है वहीं गवर्नर एंड्रयू कुमो ने कहा है कि इस तरह का कोई भी निर्णय करने का अधिकार सिर्फ उन्हें है। दोनों बड़े नेताओं के परस्पर विरोधी बयानों पर शिक्षाविदों ने एतराज जताया है। अमेरिका में न्यूयॉर्क प्रांत ही कोरोना महामारी का केंद्र बना हुआ है।

मेयर ब्लासियो ने शनिवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में स्कूल बंद रखने का एलान किया। उन्होंने कहा, यह निर्णय इसलिए लिया गया है कि क्योंकि न्यूयॉर्क शहर कोरोना महामारी से जूझ रहा है। ब्लासियो ने संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए 16 मार्च को स्कूलों को बंद करने का आदेश दिया था। 20 अप्रैल को स्कूल फिर खुलने थे, लेकिन महामारी के प्रकोप के चलते बाकी बचे सत्र में भी स्कूलों को बंद रखने का निर्णय लेना पड़ा। ब्लासियो की इस घोषणा के कुछ घंटे बाद ही प्रांत के गवर्नर कुमो ने मेयर की घोषणा पर सवाल खड़े कर दिए। उन्होंने कहा, स्कूलों को बंद रखने की घोषणा पर कोई निर्णय नहीं हुआ है। मेट्रोपॉलिटन इलाके के बाकी हिस्सों से सलाह लिए बिना ब्लासियो अपनी तरफ से स्कूलों को बंद करने का निर्णय नहीं ले सकते। यह उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं आता।

एंड्रयू कुमो (बाएं) और बिल डे ब्लासियो। फाइल

भारत से दवा की खेप अमेरिका पहुंची : भारत सरकार द्वारा निर्यात से प्रतिबंध हटाए जाने के बाद मलेरिया के इलाज में काम आने वाली हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन दवा की खेप अमेरिका पहुंच गई है। अमेरिका में भारत के राजदूत तरनजीत सिंह संधू के अनुसार, शनिवार को यह खेप नेवार्क एयरपोर्ट पहुंची। पिछले सप्ताह राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन कर मलेरिया रोधी इस दवा के निर्यात से प्रतिबंध हटाने का अनुरोध किया था। अमेरिकी फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने कोरोना के संभावित उपचार के लिए हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन की पहचान की है। न्यूयॉर्क के 1500 से ज्यादा कोरोनो मरीजों पर इसका परीक्षण किया जा रहा है।

चीन में दूसरे दौर के संक्रमण का खतरा

- पिछले चौबीस घंटों में 99 नए मामले सामने आए, राजधानी बीजिंग में 27 अप्रैल से खुलने लगेंगे स्कूल

बीजिंग, एजेंसियां : दुनिया को कोरोना देने वाले चीन में दूसरे दौर के संक्रमण का खतरा मंडराने लगा है। पिछले चौबीस घंटों में वहां संक्रमण के 99 नए मामलों का पता चला है। हाल के हफ्तों में यह एक दिन में संक्रमण के सर्वाधिक मामले हैं। स्वास्थ्य विभाग ने 63 उन लोगों की भी सूची जारी की है, जो संक्रमित तो हैं लेकिन उनमें लक्षण नहीं दिखाई दे रहे। देश में कुल मरीजों की संख्या 82 हजार के पार हो गई है। इस बीच, हालात सुधरने पर कोरोना महामारी के चलते बंद किए गए राजधानी बीजिंग के स्कूलों को फिर से खोलने का फैसला किया गया है। सीनियर हाईस्कूल में 27 अप्रैल से पढ़ाई शुरू होगी जबकि सीनियर मिडिल स्कूल 11 मई से खुलेंगे।

चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग (एनएचसी) के अनुसार, शनिवार तक दूसरे देशों से आने वाले संक्रमित मरीजों की कुल संख्या 1280 थी। इनमें 481 को अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है जबकि 799 का अभी इलाज चल रहा है। इनमें से 36 की हालत गंभीर है। देश में संक्रमण के जो 99 नए मामले सामने आए हैं, उनमें 97 मरीज ऐसे हैं, जो विदेश से यात्रा कर लौटे हैं। इनमें से दो संक्रमित मरीज पूर्वोत्तर प्रांत हेइलोंगजियांग के रहने वाले हैं। दूसरे देशों से आने वाले लोगों में संक्रमण को देखते हुए इस प्रांत की राजधानी हार्बिन में अब प्रवेश करने वाले सभी लोगों को अनिवार्य रूप से 28 दिनों तक क्वारंटाइन में रहना होगा। इसके साथ ही उन्हें दो न्यूक्लिक एसिड टेस्ट (कम समय में रक्त में संक्रमण की जांच) और एक एंटीबॉडी टेस्ट कराना होगा। रूस से लगते इस सीमावर्ती प्रांत में अगर संक्रमित मामले बढ़ते रहे तो लॉकडाउन भी किया जाएगा।

सुईफिने शहर भेजी गई डॉक्टरों की टीम : हेइलोंगजियांग के सुईफिने शहर में संक्रमण के बढ़ते मामलों को देखते हुए डॉक्टरों की एक टीम भेजी गई है। शहर में अभी तक संक्रमण के 194 मामले दर्ज किए गए हैं। 100 ऐसे मामले भी दर्ज किए गए हैं, जो संक्रमित तो हैं, लेकिन उनमें लक्षण नहीं दिखाई दे रहे। विशेषज्ञों ने मरीजों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई है।

बंग बंधु की हत्या में शामिल पूर्व सैन्य अधिकारी को फांसी

- करीब 23 साल कोलकाता में छिपने के बाद पिछले माह लौटा था ढाका

ढाका, प्रेट्र : बंग बंधु शेख मुजीबुर रहमान की हत्या में शामिल बांग्लादेश सेना के एक पूर्व अधिकारी को शनिवार-रविवार की रात फांसी दे दी गई। इस हत्या के दोषी को लगभग 45 साल फरार रहने के बाद मंगलवार को ढाका से गिरफ्तार किया गया था। ढाका सेंट्रल जेल के जेलर महबूबुल इस्लाम ने बताया कि सेना के पूर्व कैप्टन अब्दुल माजिद को रविवार लगते ही रात 12.01 (स्थानीय समय) पर फांसी दे दी गई।डॉक्टरों ने 12.15 पर उसको मृत घोषित किया।

जेल महानिरीक्षक ब्रिगेडियर जनरल एकेएम मुस्तफा कमाल पाशा ने जेल के बाहर मीडिया ब्रीफिंग में कहा कि माजिद के शव को उसके परिजनों को सौंप दिया जाएगा। फांसी की सजा सुनकर बहुत से लोग कोरोना को लेकर लगे प्रतिबंध का उल्लंघन करते हुए जेल के बाहर आधी रात में एकत्र हो गए थे।

उल्लेखनीय है बांग्लादेश के संस्थापक बंग बंधु की हत्या 1975 में एक तख्ता पलट के दौरान हुई थी। सेना के कई अधिकारी इसमें शामिल थे। हत्या के बाद अब्दुल माजिद फरार हो गया था। बांग्लादेश के गृहमंत्री असदुज्जमां खान कमाल ने बताया कि माजिद ने खुद हत्या की बात स्वीकार की था। वह नवंबर 1975 में ढाका जेल में चार लोगों की हत्या में शामिल था। अभियोजन पक्ष के वकील के अनुसार माजिद फरारी के दौरान करीब 23 साल कोलकाता में छिपकर रहा। वह पिछले महीने की 15 या 16 तारीख को ढाका पहुंचा जहां उसे पुलिस ने पिछले मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया। शुक्रवार को उसकी पत्नी और चार रिश्तेदारों ने उसके साथ करीब ढाई घंटे मुलाकात की।

इजरायली राष्ट्रपति ने सरकार गठन के लिए नहीं दिया गैंट्ज को और समय

यरूशलम, एजेंसियां : इजरायल के राष्ट्रपति ने सरकार गठन के लिए और समय देने के संसद अध्यक्ष बैनी गैंट्ज के अनुरोध को रविवार को ठुकरा दिया। इजरायल में दो मार्च को चुनाव हुए थे, जिसके बाद राष्ट्रपति रिउवेन रिवलिन ने सेना के पूर्व प्रमुख गैंट्ज को सरकार गठन के लिए चार सप्ताह का समय दिया था। इजरायल में एक साल में तीन बार चुनाव हो चुके हैं, जिनमें किसी भी पार्टी या गठबंधन को पूर्ण बहुमत नहीं मिला है।

गैंट्ज को पिछले महीने अचानक संसद का अध्यक्ष चुन लिया गया, जिसके बाद उन्होंने राजनीतिक गतिरोध खत्म करने और कोरोना वायरस महामारी से निपटने के लिए बेंजामिन नेतन्याहू के साथ आपातकालीन गठबंधन सरकार बनाने की बात कही थी। सरकार गठन का समय सोमवार को खत्म होने जा रहा है और गैंट्ज गठबंधन बनाने को लेकर सक्रिय नहीं दिख रहे।

ब्रिटिश पीएम बोरिस जॉनसन को अस्पताल से मिली छुट्टी

- अभी काम पर नहीं लौटेंगे ग्रेट ब्रिटेन के 55वें प्रधानमंत्री
- जीवन बचाने के लिए मेडिकल स्टाफ को धन्यवाद दिया

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन को अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। कोरोना वायरस संक्रमण के बाद उनको लंदन के सेंट थॉमस अस्पताल में भर्ती कराया गया था। डाउनिंग स्ट्रीट ने एक बयान में कहा कि अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद जॉनसन दक्षिण-पूर्व इंग्लैंड के बकिंघमशायर स्थित आवास पर रहेंगे। अपनी मेडिकल टीम की सलाह पर वह तत्काल अपने काम पर नहीं लौटेंगे और विदेश मंत्री डोमिनिक राब प्रधानमंत्री का कामकाज देखते रहेंगे।

इससे पहले कोरोना वायरस संक्रमण के बाद अपना जीवन बचाने के लिए जॉनसन ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा के मेडिकल स्टाफ को धन्यवाद दिया। सेंट थॉमस अस्पताल में गहन देखभाल से बाहर आने के बाद अपने पहले सार्वजनिक बयान में उन्होंने कहा कि मैं उन्हें पर्याप्त धन्यवाद नहीं दे सकता। मैं अपने जीवन के लिए उनका अहसानमंद हूं।

जॉनसन की मंगेतर कैरी साइमंड्स, जो अपने पहले बच्चे से गर्भवती हैं, के बारे में कहा जाता है कि वह अस्पताल में भर्ती ब्रिटिश पीएम का मनोबल बढ़ाने के लिए उन्हें पत्र लिखा करती थीं। दो सप्ताह पहले कोरोना वायरस संक्रमण का पता चलने और क्वारंटाइन में जाने के बाद से हजारों लोगों ने पीएम जॉनसन को गेट वेल सून का कार्ड भी भेजा।

गृह मंत्री प्रीति पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री को पूरी तरह ठीक होने के लिए कुछ समय की जरूरत है। पटेल ने लोगों से आग्रह किया कि वे ब्रिटेन के कुछ हिस्सों में धूप के बावजूद वायरस का प्रसार रोकने के लिए ईस्टर सप्ताहांत पर घर में ही रहें।

इस बीच, प्रधानमंत्री की ओर से आधिकारिक 10 डाउनिंग स्ट्रीट ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट किए गए एक ईस्टर संदेश में लोगों से जान बचाने के लिए घर पर रहने का आग्रह किया गया है। इसमें कहा गया है कि डाउनिंग स्ट्रीट से सभी को ईस्टर की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। इस साल देशभर में चर्च बंद रहेंगे और परिवार अलग-अलग दिन बिताएंगे। लेकिन, याद रखें कि घर पर रहकर आप अपनी जान बचा रहे हैं। बता दें कि तमाम प्रयासों के बाद भी ब्रिटेन में संक्रमितों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

बोरिस जॉनसन। फाइल/एपी

यूरोप का सबसे ज्यादा कोरोना प्रभावित देश हो सकता है ब्रिटेन

सरकार के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक सलाहकार ने रविवार को चेतावनी दी कि ब्रिटेन कोरोना वायरस महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित यूरोपीय देशों में से एक हो सकता है। वेलकम ट्रस्ट के निदेशक सर जेरेमी फेरर ने कहा कि ब्रिटेन में कोरोना वायरस से इस क्षेत्र में सबसे अधिक मौतें हो रही हैं। इस घातक वायरस के और कहर मचाने से इन्कार नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि ब्रिटेन में संक्रमितों की संख्या लगातार बढ़ रही है। मुझे उम्मीद है कि इसमें कमी आएगी। लेकिन, एक बात जरूर है। ब्रिटेन की हालत यदि सबसे खराब नहीं रही, तो भी सबसे खराब देशों में एक यह जरूर रहेगा।

मैंने कहा था कि मैंन जरूरतमंदों की मदद करुंगा, मैंने अपना वादा पूरा कर दिया है।
– निक किर्गियोस, ऑस्ट्रेलियाई टेनिस खिलाड़ी

फ्लैचर ने कहा था, कोहली बड़ा स्टार बनेगा : हुसैन

नई दिल्ली : इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने कहा कि भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कोच डंकन फ्लैचर ने उनसे कहा था कि विराट कोहली में काफी प्रतिभा है और यह खिलाड़ी आगे आने वाले समय में एक बड़ा स्टार बनेगा। हुसैन ने कहा कि मैं उनके (कोहली) बारे में डंकन फ्लैचर से बातचीत कर रहा था और उन्होंने मुझसे कहा था बस आप इसे देखते जाइए यह एक योद्धा खिलाड़ी है।

एक नजर में

ब्रिटिश चालक मॉस का निधन

लंदन : मोटरस्पोर्ट्स के दिग्गज ब्रिटिश चालक स्टर्लिंग मॉस का लंबी बीमारी के बाद 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। इसकी जानकारी उनकी पत्नी सूसी मॉस ने रविवार को दी। मॉस हालांकि कभी भी फॉर्मूला वन रेस खिताब नहीं जीत सके थे लेकिन वह चार बार उपविजेता बने थे। उनका करियर 1948 में शुरू हुआ था। उन्होंने विभिन्न तरह के 529 मोटर रेस में भाग लिया था जिसमें 212 में जीत दर्ज की थी। (प्रेट्र)

सचिन ने अनुभव साझा किए

मुंबई : भारत के दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने देश भर के 12000 चिकित्सकों से बात करके उनके साथ खेलों से जुड़ी चोटों को लेकर अपनी जानकारी और अनुभव साझा किए। तेंदुलकर को पता चला कि कई युवा चिकित्सक लॉकडाउन के इस समय में खेलों से जुड़ी चोटों पर अपनी जानकारी बढ़ाना चाह रहे हैं। इस संबंध में शनिवार को खेलों से जुड़ी चोटों पर एक सत्र का आयोजन किया गया और तेंदुलकर को लगा कि उनका अनुभव इन चिकित्सकों को लाभ पहुंचा सकता है, इसलिए वह खुद ही इसका हिस्सा बन गए। तेंदुलकर अपने करियर में चोटों से जूझते रहे हैं जिसमें टेनिस एल्बो की चोट प्रमुख है। (प्रेट्र)

ओलंपिक टलना ठीक : मिर्जा

नई दिल्ली : ओलंपिक के लिए व्यक्तिगत टिकट सुनिश्चित करने से एक कदम दूर भारतीय घुड़सवार फवाद मिर्जा दुनिया के उन कुछ खिलाड़ियों में शामिल हैं जिन्हें टोक्यो ओलंपिक 2020 के एक साल तक स्थगित होने में फायदा नजर आ रहा है। इन खेलों के लिए घुड़सवारी में भारत का एक कोटा सुनिश्चित है। फवाद अभ्यास के सिलसिले में अभी जर्मनी में हैं। उन्होंने कहा कि मैं जर्मनी के जिस इलाके में हूं वहां इस खतरनाक वायरस का खास असर नहीं है और यहां खिलाड़ियों को अभ्यास की छूट है। (प्रेट्र)

मांट्रियल टूर्नामेंट स्थगित

मांट्रियल : यूएस ओपन की तैयारियों के लिहाज से महत्वपूर्ण माने जाने वाले मांट्रियल डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट को 2021 तक स्थगित कर दिया गया है। यह प्रतियोगिता सात से 16 अगस्त के बीच खेली जानी थी लेकिन क्यूबेक ने कोराना वायरस के प्रसार को कम करने के लिए 31 अगस्त तक सभी खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम रद करने का आग्रह किया था। (एएफपी)

फिर से तैयार होना चाहिए एफटीपी

पूर्व कप्तान अजहरुद्दीन ने कहा, घरेलू और विदेशी खिलाड़ियों के लिए महत्वपूर्ण है आइपीएल

नई दिल्ली, प्रेट्र : पूर्व भारतीय कप्तान और अब प्रशासक मुहम्मद अजहरुद्दीन का मानना है कि सभी बोर्ड को बैठक करके अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट कैलेंडर को फिर से तैयार करना चाहिए क्योंकि कोविड-19 महामारी के कारण वर्तमान कार्यक्रम के अनुसार खेल संभव नहीं हैं।

हैदराबाद क्रिकेट संघ (एचसीए) के अध्यक्ष अजहरुद्दीन का इसके साथ ही मानना है कि आइपीएल घरेलू और विदेशी खिलाड़ियों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है और इसलिए भविष्य के दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) में बदलाव भी जरूरी है। इस 57 वर्षीय पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि वे दो साल के लिए एफटीपी को फिर से तैयार करेंगे क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में बहुत अनिश्चितता बनी हुई है। मेरे कहने का मतलब है कि आप अच्छे दौर के लिए हमेशा तैयार रहते हैं लेकिन बुरे समय के लिए तैयार नहीं रह सकते। एक बार चीजें संभलने के बाद हमें अन्य सदस्य देशों के साथ बातचीत करनी चाहिए। भारत में इस महीने के आखिर तक लॉकडाउन बढ़ने की संभावना है और ऐसे में आइपीएल का अनिश्चितकाल तक स्थगित होना निश्चित है। पहले यह टूर्नामेंट 29 मार्च से खेला जाना था।

पूर्व भारतीय कप्तान मुहम्मद अजहरुद्दीन • फाइल फोटो, ट्विटर

अजहर ने कहा कि अगर उन्हें आइपीएल के लिए जगह बनानी है तो पूरे कार्यक्रम को बदलने की जरूरत पड़ेगी। यह एक विकल्प है। या तो फिर वर्तमान कार्यक्रम पर ही बने रहो और जिस टूर्नामेंट का समय बीत गया उसे भूल जाओ। उन्होंने कहा कि लेकिन इसका मतलब सभी हितधारकों को बड़ा नुकसान होगा जो कि व्यावहारिक नहीं है। हैदराबाद क्रिकेट संघ को सनराइजर्स हैदराबाद के सात मैचों की मेजबानी करनी है। अजहर ने कहा कि इसलिए मैं एफटीपी में पूर्ण परिवर्तन की उम्मीद कर रहा हूं ताकि हम उसमें आइपीएल को भी फिट कर सकें। मुझे लगता है कि सभी बोर्ड इस पर सहमत होंगे क्योंकि हर कोई प्रभावित हो रहा है। निश्चित तौर पर बीसीसीआइ सबसे अधिक प्रभावित होगा। आइपीएल इतना अधिक महत्वपूर्ण है कि जोस बटलर और पैट कमिंस जैसे विदेशी खिलाड़ियों ने भी साल के किसी भी समय में इस टूर्नामेंट में खेलने की इच्छा जताई है। अजहर ने कहा कि कोई भी आइपीएल को न नहीं कहेगा। विदेशी खिलाड़ी भी नहीं। आइपीएल पर इतने अधिक लोगों की आजीविका निर्भर है।

अजहर को नहीं लगता कि ऑस्ट्रेलिया में अक्टूबर-नवंबर में होने वाले टी-20 विश्व कप पर प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि टी-20 विश्व कप पर असर पड़ेगा।

बीसीसीआइ उपाध्यक्ष पद से महिम का इस्तीफा

जागरण संवाददाता, देहरादून : क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उत्तराखंड (सीएयू) के सचिव महिम वर्मा ने बीसीसीआइ को उपाध्यक्ष पद से इस्तीफा भेज दिया है। कुछ समय पहले सीएयू सचिव पद पर हुए चुनाव में महिम ने जीत दर्ज की थी। अगस्त 2019 में क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उत्तराखंड को बीसीसीआइ से क्रिकेट संचालन के लिए मान्यता मिली। इसके बाद अक्टूबर में सीएयू के सचिव महिम को बीसीसीआइ में निर्विरोध उपाध्यक्ष पद पर चुना गया। महिम के उपाध्यक्ष बनने के बाद से सीएयू का सचिव पद खाली चल रहा था जिसे भरने के लिए सर्वसम्मति का प्रयास किया गया। इसके बाद सचिव पद के लिए चुनाव कराए गए जिसमें महिम ने जीत दर्ज की थी।

ताकि कोरोना के बाद क्रिकेट के लिए तैयार रहे ईडन गार्डेंस

कोरोना के चलते शारीरिक दूरी का पालन करते हुए रविवार की सुबह ईडन गार्डेंस में पानी का छिड़काव करते मैदानकर्मी • जागरण

विशाल श्रेष्ठ • कोलकाता

कोरोना के कारण पूरी दुनिया में अभी क्रिकेट जरूर बंद है, लेकिन ऐतिहासिक ईडन गार्डेंस स्टेडियम में ग्राउंड के रखरखाव का काम पहले की तरह ही चल रहा है। ईडन के मैदानकर्मी शारीरिक दूरी का पूरा ध्यान रखते हुए शिद्दत से इस काम में जुटे हुए हैं ताकि कोरोना संकट से उबरने के बाद जब भी क्रिकेट मैचों की दोबारा शुरुआत हो तो दुनिया का यह बेमिसाल क्रिकेट स्टेडियम इसके लिए पूरी तरह तैयार रहे।

ईडन के क्यूरेटर सुजन मुखर्जी ने बताया कि स्टेडियम के ग्राउंड का नियमित रूप से रखरखाव बेहद जरूरी है, वरना इसे नुकसान पहुंच सकता है। फिलहाल घास की कटाई और पानी के छिड़काव जैसे जरूरी काम में शारीरिक दूरी का पूरा ध्यान रखा जा रहा है।

300 फुट लंबी पानी की पाइप को सिर्फ तीन लोग पकड़ रहे हैं। सुजन ने आगे कहा कि हमारे कुल 16 मैदानकर्मी हैं। फिलहाल सिर्फ छह-सात लोग ही काम कर रहे, बाकी लॉकडाउन से पहले अपने घर चले गए थे। सभी मैदानकर्मी स्टेडियम में बने क्वार्टर में रहते हैं। ज्यादातर मैदानकर्मी ओडिशा और बंगाल के विभिन्न जिलों से हैं।

कैरम बोर्ड खेलकर बीत रहा है समय : पूजा बोहरा

साक्षात्कार

लॉकडाउन के समय को बिताने के लिए भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार योजना बनाई हुई है। कोई श्रमिकों की सहायता कर रहा है तो कोई प्रशिक्षण के साथ अपने पूरे परिवार को ही खेल में शामिल कर रहा है। हम एक ऐसी मुक्केबाज की बात कर रहे हैं जिन्होंने जॉर्डन में बीते माह ओलंपिक का टिकट हासिल किया था लेकिन इन दिनों कैरम बोर्ड पर प्रतिद्वंद्वियों को हरा रही है। लॉकडाउन में बीत रहे दिनों को लेकर मुक्केबाज पूजा बोहरा ने दैनिक जागरण के अनिल भारद्वाज से चर्चा के मुख्य अंश–

• लॉकडाउन में कैसी चल रही है जिंदगी?

-हमारे मुख्य प्रशिक्षक ने पूरे सप्ताह के अभ्यास का कैलेंडर बनाकर पहले से दे रखा है। जब लॉकडाउन की घोषणा हुई थी तो तय हो गया था कि खिलाड़ियों को घर जाना होगा। उसी हिसाब से हर रोज अभ्यास कर रही हूं। हर रोज तीन घंटे प्रशिक्षण करती हूं। यह सही है कि प्रशिक्षण शिविर जैसा कड़ा प्रशिक्षण नहीं हो पा रहा है लेकिन ऐसे हालात में इतना सही है। दूसरा मेरी बहन और उसके बच्चों के साथ कैरम बोर्ड खेल खेलते हैं जिससे पूरा दिन अच्छा बीतता है। कभी बच्चों के साथ मुकाबला होता है तो कभी बहन के साथ मैच लगता है। लॉकडाउन समाप्त होने के बाद यह दिन याद आएंगे।

• टोक्यो ओलंपिक स्थगित करने का फैसला आपके खेल पर कितना असर डालेगा?

-देखिए, कोरोना आपदा दुनिया पर है और इस वक्त लोगों की जान बचाना प्राथमिकता है जिसके कारण ओलंपिक आयोजन स्थगित हुआ है। जिस तरह से खिलाड़ी घरों में बंद है उस लिहाज से भी ओलंपिक का स्थगित होना सही है क्योंकि अब 21 दिन घरों में रहने के बाद उसी दोबारा उसी लय में लौटने के लिए कम से कम दो-तीन माह का समय चाहिए और अगर समय पर ओलंपिक आयोजन होता, तो ऐसे में हमें नुकसान ही होता। अब दोबारा से हमारे पास अच्छी तैयारी करने का समय है। मेरे पास ओलंपिक टिकट है और अब सिर्फ पदक जीतने का लक्ष्य बनाना है।

खाना पकाती पूजा बोहरा • जागरण

• कई वर्ष के बाद इतने समय घर में रहने का मौका मिला होगा?

-सही कहा आपने, बहुत अच्छा लग रहा है क्योंकि पहले घर में बहुत कम ही ठहरना होता था। यही कारण था कि घर का बना खाना नहीं खा पाती थी। अब घर का बना खाना खा रही हूं। घर में वह व्यंजन बनवा रही हूं जिसका मन कर रहा है।

• सबसे ज्यादा खाने में क्या पसंद करते हो?

-घर का बना खाना स्वादिष्ट ही होता है लेकिन मेरा सबसे मनपसंद व्यंजन (मीठी पूडी और खीर) हैं। जो मैं अक्सर माता से ख्वाहिश कर के बनवा ही लेती हूं। लगातार प्रशिक्षण शिविर और प्रतियोगिताओं के कारण इस तरह के मनपसंद खाने से वंचित ही रहती थी।

• स्वयं भी कुछ बनाकर परिवार को खिला रही हैं?

-मुझे बहुत कम खाना बनाना आता है लेकिन ब्रेड रोल बना लेती हूं जिसे परिवार में पसंद किया जा रहा है।

अपने गांव के लिए मसीहा बना ओलंपियन

निखिल शर्मा • नई दिल्ली

अद्भुत

- **खुद मदद को आगे आए रियो ओलंपियन नौका चालक दत्तू**
- **नासिक जिले के अपने तले गांव में खुद कर रहे हैं सैनिटाइज**

जिस वक्त देश के बड़े क्रिकेटर, ओलंपियन लॉकडाउन की वजह से अपने-अपने घरों में बंद हैं। उस वक्त रियो ओलंपिक खेल चुके भारतीय नौका चालक दत्तू बबन भोकनाल महाराष्ट्र के नासिक जिले के अपने गांव तले में एक खास जिम्मेदारी निभा रहे हैं। वह अकेले ही गांव के लोगों की हर संभव मदद का प्रयास कर रहे हैं।

दैनिक जागरण के साथ बातचीत में दत्तू ने बताया कि उन्होंने अपने गांव में चार-पांच दिन देखा कि कहां-कहां लोगों का आना-जाना सबसे ज्यादा होता है। ऐसे में उन्होंने गांव के पशु अस्पताल, डेयरियों पर खुद सैनिटाइज कराया। पुणे में सेना की नौकायन नोड में तैनात दत्तू 15 दिन की छुट्टी पर गांव आए थे, जिसके बाद लॉकडाउन हो गया और वह तब से अपने गांव में ही हैं। दत्तू ने बताया कि उनके गांव में 12 हजार लोग रहते हैं। दत्तू ने बताया कि नासिक में अभी पांच कोरोना केस मिले, लेकिन उनके गांव में कोई केस नहीं है। दत्तू ने कहा कि वह लोगों को जागरूक कर रहे हैं कि घर से बाहर नहीं निकले। अगर लोगों को कोई जरूरी सामान जरूरत होती है तो वह खुद ही उनके पास यह सामान पहुंचा देते हैं।

2016 रियो ओलंपिक में नौकायन में 13वें स्थान पर रहे दत्तू को 27 से 30 अप्रैल तक दक्षिण कोरिया में होने वाले ओलंपिक क्वालीफायर्स में भाग लेना था, लेकिन कोरोना वायरस की वजह से यह स्पर्धा स्थगित हो गई।

दत्तू का भी अभ्यास और कैंप फिलहाल रद हो गया है। ऐसे में वह लोगों की हरसंभव मदद कर रहे हैं। दत्तू ने बताया कि मेरे परिवार ने गांव के लोगों को राशन और जरूरत की चीजें भी दान की हैं। साथ ही वह पुलिस की भी मदद कर रहे हैं।

गांव में सैनिटाइज करते दत्तू सौ. दत्तू •

पाक समेत तीन राज्यों से जुड़े जम्मू की जेल में बंद आतंकियों के तार

जागरण संवाददाता, जम्मू

- कोट भलवाल जेल में बंद जैश के आतंकी मोबाइल का कर करते थे इस्तेमाल

जम्मू की अतिसंवेदनशील कोट भलवाल सेंट्रल जेल में बंद जैश-ए-मोहम्मद के पाकिस्तानी कमांडर अब्दुल रहमान मुगल समेत तीन आतंकियों से मिले सभी मोबाइल की कॉल डिटेल को खंगाला जा रहा है। कुछ कॉल पाकिस्तान में हुई हैं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि आतंकियों ने इन मोबाइल से जम्मू-कश्मीर खासतौर पर कश्मीर समेत पंजाब और दिल्ली में भी बात की है।

जम्मू की अतिसंवेदनशील और सबसे सुरक्षित कोट भलवाल सेंट्रल जेल में बंद पाकिस्तानी आंतकवादियों से मोबाइल फोन मिलने से सुरक्षा एजेंसियां और पुलिस प्रशासन सकते में है। पुलिस की साइबर टीम ने जेल में आतंकियों से बरामद पांच मोबाइल, पांच सिमकार्ड और तीन मेमोरी कार्ड की जांच शुरू कर दी है। सवाल उठ रहा है कि कड़ी सुरक्षा के बीच यह सामान जेल के अंदर कैदियों तक कैसे पहुंच गया। जेल के मुख्य द्वार पर तैनात सुरक्षा कर्मचारियों की मिलीभगत के बिना दूरसंचार का यह सामान अंदर नहीं जा सकता। जेल के अंदर के कर्मचारियों की मिलीभगत की भी आशंका है। इस बीच, राज्य पुलिस की एसओजी टीम ने कोट भलवाल जेल में कत्ल के मामले में बंद सैन्य कर्मी दीपक कुमार को भी गिरफ्तार किया है। उससे भी एक फोन बरामद हुआ है। पुलिस ने अभी तक इस मामले में आठ संदिग्धों के खिलाफ देशद्रोह और साजिश रचने व देश की सुरक्षा को खतरे में डालने का मुकदमा दर्ज कया है।

कई घंटे पूछताछ की गई : जम्मू के आरएसपुरा इलाके के गांव चकरोई से पकड़े गए जैश के ओजीडब्ल्यू मोहम्मद मुजफ्फर बेग और स्थानीय निवासी लब्बा राम और आरएसपुरा के सतराईयां निवासी दीपक कुमार से पुलिस ने रविवार को कई घंटे पूछताछ की है। इन्हें मीरां साहिब स्थित पुलिस के ज्वाइंट इंटेरोगेशन सेंटर में रखा गया है।

बन टोल प्लाजा हमले से जोड़ना जल्दबाजी : सूत्रों के अनुसार, इन आतंकियों के तार इसी साल 31 जनवरी को जम्मू श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बन टोल प्लाजा के पास आतंकी हमले से भी जोड़े जा रहे हैं। हालांकि, पुलिस के आला अधिकारी फिलहाल इस बात से इन्कार करते हैं। बन टोल पर हमले में जैश के तीन आतंकियों को मार गिराया गया था, जब वह ट्रक में छिपकर कश्मीर जा रहे थे।

कश्मीर का ओजीडब्ल्यू जम्मू में क्यों, नकदी पर भी सवाल : जैश के ओजीडब्ल्यू मोहम्मद मुजफ्फर बेग मुजफ्फर बेग के पास से भारतीय करेंसी के 20 हजार रुपये बरामद किए हैं। पहले यह राशि पांच लाख रुपये बताई जा रही थी। पुलिस का कहना है कि इस राशि का आतंकी गतिविधियों में इस्तेमाल होने का अभी कोई सुराग नहीं मिला हैं।

पाक को पहुंचा भारी नुकसान

प्रथम पृष्ठ से आगे

सूत्रों ने बताया कि भारतीय सेना की जवाबी कार्रवाई में पाक सेना को केल में आतंकियों के दो लांचिंग पैड, पाक सेना के एसएसजी यूनिट और 32 ब्रिगेड मुख्यालय समेत आठ इमारती ढांचों को नुकसान पहुंचा है। पाक सेना के एक अधिकारी समेत चार सैन्यकर्मी और कुछ आतंकी मारे गए हैं या जख्मी भी हुए हैं। उन्होंने बताया कि केल में आग में घिरे पाक सेना के ठिकानों और आतंकियों के लांचिंग पैड से कुछ वाहनों और एंबुलेंस को निकलते देखा है। वहीं, मस्जिदों में लाउडस्पीकर पर भी कुछ एलान हुए हैं, लेकिन गोलों के फटने की भीषण आवाज के बीच पता नहीं चल पाया कि वहां किस बात का एलान हो रहा था।

पांच मकान समेत कई वाहन जले

इस दौरान भारत के टुमना और रीडी गांव में ही सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। यहां करीब पांच मकान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। तीन वाहन भी तबाह हुए। इसके अलावा शमीमा, जावेद और आठ वर्षीय जियान की मौत हो गई। दो अन्य ग्रामीण जख्मी हैं, लेकिन संबंधित प्रशासन ने पुष्टि नहीं की है।

कश्मीर के कुपवाड़ा में नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान की ओर से रिहायशी इलाकों में की गई गोलाबारी में काफी नुकासन हुआ। कई घरों मे आग लग गई। जागरण

इनको किया गिरफ्तार

प्रथम पृष्ठ से आगे

निहंग डेरा प्रमुख बलविंदर सिंह, उसके पुत्र जगमीत सिंह और बहू सुखप्रीत कौर समेत 11 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनके खिलाफ दो मामले दर्ज हुए हैं। डेरा प्रमुख व अन्य कुछ लोगों का आपराधिक रिकॉर्ड भी है।

कौन हैं निहंग : सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह ने मुगल बादशाह औरंगजेब के खिलाफ एक फौज तैयार की थी। इनका विशेष पहरावा था और वे हथियारों से सुसज्जित रहते थे। इन्हें निहंग सिंह या गुरु की लाडली फौज भी कहा गया। निहंगों को असहाय की मदद के लिए जाना जाता है, लेकिन समय के साथ निहंग सिंह कई खेमों में बंट गए हैं। निहंगों के सबसे बड़े दल बाबा बुड्ढा दल ने हमला करने वालों को नकली निहंग बताया है। गुरुद्वारा श्री खिचड़ी साहिब की जगह पर ही नौवें गुरु श्री तेग बहादुर ने खिचड़ी पकाई थी।

पुरी ने कहा-दोषियों को मिले कड़ी सजा : केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने ट्वीट कर घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि दोषियों को ऐसी सजा मिले जो दूसरों के लिए सबक हो। मौलाना आजाद एजुकेशन फाउंडेशन के सदस्य और उप्र अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व सदस्य सरदार एसपी सिंह ने कहा कि कानून के रखवाले पुलिस वालों पर निहंगों का हमला बहुत ही निंदनीय है।

काशी आज भी कर रही एलिस बोनर का इंतजार

शाश्वत मिश्रा, वाराणसी

- चित्रकला और मूर्तिकला को बनारस में दिया नया आयाम

कोई भी शहर सिर्फ उनका नहीं होता जो वहां पैदा होते हैं। वो शहर उनका भी होता है जो उसे जीते हैं। इस लिहाज से बनारस एलिस बोनर का भी है और एलिस बोनर बनारस की।

उन्होंने 1936 से लेकर 1978 तक का अपना जीवन बनारस में बिताया। इस दौरान उन्होंने कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम किए। इसी से प्रभावित होकर भारत सरकार ने 1974 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 1978 में उनका स्वास्थ्य काफी बिगड़ गया। वह यह बोलकर इलाज के लिए स्विट्जरलैंड गईं कि जल्द ही वापस आएंगी लेकिन एक फ्रैक्चर ने उनके बनारस वापस आने के सपने को कभी पूरा नहीं होने दिया। वह अंत तक अपनी बहन के साथ ज्यूरिख में ही रहीं। जहां 13 अप्रैल, 1981 को उनका निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार ज्यूरिख में ही किया गया। एलिस की इच्छा के अनुसार उनकी राख का कुछ हिस्सा बनारस लाकर गंगा में विसर्जित किया गया।

एलिस बोनर की फाइल फोटो। सौ. सोशल मीडिया

प्रख्यात नर्तक उदयशंकर की वजह से काशी पहुंचीं

ज्यूरिख में 1926 में एलिस ने प्रख्यात नर्तक उदयशंकर का नृत्य देखा। नृत्य के दौरान उनकी भंगिमाओं और लालित्य ने एलिस पर जादू सा कर दिया। उनको लगा भारतीय मंदिरों पर बनी मूर्तियां जैसे इस नृत्य के माध्यम से उनके सामने खड़ी हो गईं। यहीं से एलिस का रुझान भारतीय कलाओं की ओर बढ़ा। इसके बाद अगले पांच वर्षों तक वह उदयशंकर के साथ रहीं। इस दौरान यूरोप, अमेरिका आदि देशों में उनके विभिन्न कार्यक्रम, वेशभूषा आदि की व्यवस्था में लगी रहीं। यही वो समय था जब उनका परिचय बनारस से हुआ।

अपने अंदर के कलाकार को बनारस में दिया आकार

वाराणसी को एलिस ने अपना घर बनाया। वह अस्सी घाट पर रहीं। हालांकि, भारत आने से पहले ही वह एक कलाकार के तौर पर स्थापित हो चुकी थी लेकिन बनारस आकर उन्होंने चित्रकला और मूर्तिकला को नया आयाम दिया। उन्होंने काशी को जीया, इस शहर को समझा और इसके माध्यम से सनातन धर्म को जाना। उन्होंने संस्कृति का भी अध्ययन यहीं किया। उन्होंने शिल्प के जानकारों और विद्वानों के सहयोग से 12वीं सदी में लिखे गए ग्रंथ 'शिल्प प्रकाश' का अनुवाद किया। उनका यह काम कला के क्षेत्र में मील का पत्थर माना जाता है।

कोरोना फैलाने की साजिश और घुसपैठ की आशंका से भारत-बांग्लादेश सीमा पर अलर्ट

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

- केंद्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश के बाद बीएसएफ ने बढ़ाई निगरानी

नेपाल के रास्ते बिहार में कोरोना फैलाने की साजिश का पर्दाफाश और घुसपैठ की आशंका को देखते हुए सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने बंगाल में भारत-बांग्लादेश सीमा पर सतर्कता काफी बढ़ा दी है।

बीएसएफ के दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के डीआइजी सुरजीत सिंह गुलेरिया ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश के बाद जितने भी नाइट विजन डिवाइस आदि हैं, उन्हें पूरी तरह से सक्रिय कर दिया गया है। फ्रंटियर पर बंगाल के पांच जिले- मालदा, मुर्शिदाबाद, उत्तर और दक्षिण 24 परगना एवं नदिया से बांग्लादेश की लगने वाली करीब 913 किलोमीटर अंतरराष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा की जिम्मेदारी है? इसमें से 44 फीसद इलाके में ही बाड़ लगा है, जबकि बाकी इलाका पूरी तरह खुला है। गुलेरिया ने बताया, ऐसी आशंका है कि जब बांग्लादेश में कोरोना काफी फैल जाएगा तब वहां के लोग भुखमरी और दवाई के चक्कर में इधर भागने की कोशिश कर सकते हैं। दूसरा, जिस तरह नेपाल के रास्ते कोरोना फैलाने की साजिश का पर्दाफाश हुआ है, ऐसे में बांग्लादेश सीमा के जरिए भी देश विरोधी तत्व इस तरह की हरकत कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि हम इस बात को लेकर पूरी तरह तैयार हैं कि कोई भी नागरिक उधर से हमारी सीमा में घुसपैठ ना करें। हम जीरो लाइन से आगे भी बढ़ रहे हैं ताकि वे भीतर ना आ सके।

उन्होंने कहा कि घुसपैठ रोकने के लिए हम सीमावर्ती क्षेत्र के लोगों का भी सहयोग ले रहे हैं और उन्हें लगातार जागरूक कर रहे हैं। हम उन्हें बता रहे हैं कि यदि कोई भी बांग्लादेशी इधर घुसपैठ करता है तो वह तुरंत बीएसएफ को इसकी जानकारी दें। नहीं तो आप लोग भी कोरोना के शिकार हो सकते हैं। डीआइजी ने बताया कि हम उन लोगों को यह भी बता रहे हैं कि किसी बांग्लादेशी को वे आश्रय नहीं दें, नहीं तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

'हमारी गली-हमारे जिम्मे' मुहिम को सबका साथ

जागरण पहल ▶ कोरोना के खिलाफ जंग में हरियाणा के कई जिलों में गली-गली हो गई जागरूक

जागरण विशेष

जनजागरण में तब्दील हुई जागरण की पहल, मदद को हर ओर बढ़े हाथ

गौरव तंवर, हिसार

लॉकडाउन। कोरोना महामारी के दौर में चहुंओर सूनी पड़ीं गलियां। हर ओर पसरा सन्नाटा। लोग घर के दायरे तक सीमित। कोरोना के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए यह नितांत आवश्यक भी है। मगर इन सब परिस्थितियों के बीच दैनिक जागरण ने सामाजिक सरोकारों को सर्वोपरि रखते हुए 'हमारी गली-हमारे जिम्मे' अभियान शुरू किया। मकसद था-महामारी के इस दौर में हरियाणा में कोई भूखा न सोए। कोरोना से जंग में जुटे सफाईकर्मियों के सम्मान व उत्साहवर्धन के लिए एक और अभियान शुरू किया- सफाई के महायोद्धाओं को सलाम। दोनों अभियानों को शासन-प्रशासन, जनप्रतिनिधियों, धार्मिक-सामाजिक संस्थाओं व प्रबुद्ध लोगों ने हाथों-हाथ लिया। गली, मुहल्ले और फिर शहर-शहर जा पहुंचे ये अभियान शासन-प्रशासन के लिए भी रणनीति बनाने में मददगार साबित हुए। फिलवक्त, ये दोनों अभियान ऑटो मोड में चले गए हैं। मददगारों का कारवां दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। एक हजार से अधिक संस्थाएं जुड़ चुकी हैं। मुहिम में शारीरिक दूरी के नियम का भी सख्ती से पालन किया जा रहा।

...ताकि कोई भूखा न सोए : हमारा मकसद है- लॉकडाउन में कोई भूखा न सोए। इसके लिए हमने गली स्तर पर पहल की कि साधन संपन्न परिवार अपनी गली के जरूरतमंद परिवारों की सूची तैयार करें। उन्हें बारी-बारी से पका हुआ खाना उपलब्ध कराएं। यदि ऐसा संभव नहीं है तो गली के लोग थोड़ा-थोड़ा हर घर से सूखा राशन एकत्र कर उन्हें उपलब्ध कराएं। इससे जरूरतमंदों का भी काम चल जाएगा और किसी एक पर ज्यादा बोझ भी नहीं पड़ेगा। अगर यह भी संभव न हो तो जरूरतमंद परिवारों के फोन नंबर सामाजिक संस्थाओं और प्रशासन तक पहुंचा दें ताकि उनकी मदद हो जाए।

दैनिक जागरण ने सामाजिक संस्थाओं से संपर्क साधकर उन्हें प्रेरित किया कि भीड़ जुटाकर वितरण की बजाय घरों तक सूखा और पका खाना पहुंचाएं। पार्षदों से गली-मोहल्लों में छोटे-छोटे सहायता ग्रुप बनाने की गुजारिश की। समाचारपत्र के साथ सोशल मीडिया के जरिए भी अभियान के बारे बताया। जो मददगार बने, उनके अनुभव प्रकाशित किए, जिससे दूसरे लोग भी प्रेरित हुए। सीएम समेत कई सांसदों, मंत्रियों और विधायकों ने खुद मुहिम में शामिल होने की लोगों से अपील की। अब सरकार माइक्रो लेवल पर ऐसे जरूरतमंद परिवारों की पहचान करके सुविधाएं उपलब्ध कराने पर कार्य कर रही है।

ये है 'सफाई के महायोद्धाओं का सम्मान' मुहिम : कोरोना से जंग में सफाई कर्मी किसी महायोद्धा से कम नहीं हैं। जब कोई घरों से नहीं निकल रहा है, वे घर-घर, गली-गली और सड़कों से कूड़ा उठा हमें स्वस्थ रखने का हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। उनके सम्मान का आह्वान किया। कहा कि सफाईकर्मियों को फूल भेंट करें और सेल्फी खींचकर सोशल मीडिया पर शेयर करें। इन कर्मियों या उनके बच्चों के लिए कोई अच्छा उपहार दें। घर में बना ताजा पकवान, फल या राशन उपहार में दें।

मुख्यमंत्री कर चुके मुहिम से जुड़ने का आह्वान : स्वयं मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने जागरण की मुहिम 'हमारी गली-हमारे जिम्मे' को सराहनीय बताते हुए ट्वीट किया था और इस मुहिम से अधिकाधिक लोगों से जुड़ने का आह्वान किया। सांसद, विधायक, मेयर, सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं, हर तरफ से मदद को हाथ उठ खड़े हुए। व्यक्तिगत योगदान वालों की लंबी फेहरिस्त है। दानवीर कर्ण की कर्मस्थली हरियाणा में काफी लोग तो ऐसे हैं जो बगैर किसी प्रचार के जरूरतमंदों तक मदद पहुंचा रहे हैं।

करनाल के एडॉप्ट-ए-फैमिली फार्मूले की देशभर में सराहना : करनाल प्रशासन द्वारा चलाए गए एडॉप्ट ए फैमिली फार्मूले की देशभर में चर्चा है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने भी पिछले दिनों इसकी सराहना की। इसके तहत आवासहीनों, निर्माण कार्य में लगे मजदूरों, दैनिक वेतन भोगियों, रिक्शा चालकों आदि की मदद के लिए अपील की गई थी। प्रयास रंग लाया। करनाल जिले में 15 हजार जरूरतमंद परिवारों को गोद लिया जा चुका। वहां के जिला उपायुक्त निशांत कुमार यादव कहते हैं कि जागरण की मुहिम से प्रेरणा मिली। प्रयास रंग लाया। इसमें जागरण का योगदान भी कम नहीं।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

'सफाई के महायोद्धाओं को सम्मान' अभियान के दौरान रोहतक में सफाईकर्मियों पर पुष्प वर्षा करते लोग। जागरण आर्काइव

लोगों ने हाथों हाथ लिया

इस मुहिम को लोगों ने हाथों हाथ लिया। पानीपत की मेयर हों या हिसार के पार्षद, सबने सफाई कर्मियों का उत्साहवर्धन किया। कहीं उन पर फूल बरसाए गए तो कहीं उन्हें नोटों की मालाओं से लाद दिया गया। लोगों ने उनको फल, कपड़े, नकद राशि या रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुएं दी। ये अभियान भी ऑटो मोड ले गया। एक-दूसरे से प्रेरित हो सफाई कर्मियों का सम्मान करने वालों का कारवां भी दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।

सिरसा के डबवाली में सफाईकर्मी का नोटों की माला पहनाकर स्वागत किया गया। जागरण आर्काइव

हिसार की आजाद नगर कालोनी में जरूरतमंदों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। इस दौरान शारीरिक दूरी का ध्यान रखा गया। जागरण आर्काइव

अब सब बजा रहे ताली जब मददगार बने 'ताली पीटने' वाले हाथ

विशाल श्रेष्ठ, कोलकाता

जो कभी बेगाने थे, आज अपने हो गए हैं। समाज ने भले उन्हें न अपनाया हो, लेकिन वे अपना सामाजिक दायित्व नहीं भूले और संकट की इस घड़ी में भी पूरी शिद्दत से अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। यह है कोलकाता की ट्रांसजेंडर बिरादरी। कोरोना से जंग लड़ने ट्रांसजेंडर भी कमर कसकर मैदान में उतर पड़े हैं और आम लोगों से लेकर सेक्स वर्करों तक, सबकी मदद कर रहे हैं। कोलकाता आनंदम फॉर इक्विलिटी एंड जस्टिस के बैनर तले 150 ट्रांसजेंडरों का समूह कोलकाता, हावड़ा, हुगली, बर्धमान, उत्तर व दक्षिण 24 परगना, मालदा, उत्तर दिनाजपुर समेत विभिन जिलों में जरूरतमंदों को खाद्य सामग्रियां और दैनिक जरुरत की चीजें मुफ्त मुहैया करा रहा है।

स्वस्थ समाज

संस्था के सचिव शिंटू बागुई ने कहा- हमने खुद को कभी समाज से अलग नहीं समझा। इस समय जब पूरी मानव जाति के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है तो भला हम पीछे कैसे रह सकते हैं। यह लड़ाई हम सबकी है और हमें साथ मिलकर लड़नी और जीतनी होगी। हम अपनी ट्रांसजेंडर बिरादरी में फंड संग्रह कर बंगाल के विभिन्न जिलों में जरूरतमंदों को राहत सामग्रियां भिजवा रहे हैं। इसमें चावल, दाल, आटा, तेल, साबुन,बिस्कुट इत्यादि शामिल हैं। साथ ही हम मास्क भी बांट रहे हैं।

सेक्स वर्करों और फुटपाथियों पर खास ध्यान : शिंटू ने कहा-एक उपेक्षित ही दूसरे उपेक्षित का दर्द समझ सकता है, इसलिए सेक्स वर्करों की मदद पर हमारा विशेष जोर है। हम उन सेक्स वर्करों पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं, जिनकी उम्र हो चली है। हमारे ट्रांसजेंडर स्वयंसेवकों ने रेड लाइट एरिया में जाकर ऐसी करीब 200 सेक्स वर्करों में जरुरत की चीजें बांटी हैं। इसी तरह फुटपाथ पर रहने वालों का भी हम ध्यान रख रहे हैं क्योंकि लॉकडाउन के कारण सबसे ज्यादा मुसीबत में वे ही हैं। हम अपनी बिरादरी के आर्थिक रूप से संपन्न लोगों से भी जरुरतमंदों की मदद करने की अपील कर रहे हैं। बहुतों ने मदद का हाथ भी बढ़ाया है।

कोलकाता में 10,000 से अधिक ट्रांसजेंडर हैं जबकि पूरे बंगाल में उनकी संख्या लाखों में हैं। शिंटू ने आगे कहा- लॉकडाउन के इस दौर में जहां खुद से जाना संभव नहीं हो पा रहा, हम वहां की सेवी संस्थाओं से संपर्क कर उनके जरिए जरूरतमंदों को चीजें मुहैया करवा रहे हैं। हमारी सबसे यही अपील है कि घर में रहें, सुरक्षित रहें और सरकार का हर तरह से सहयोग करें। एक दिन हम इस संकट से उबर जाएंगे।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

सेक्स वर्करों में खाद्य सामग्री वितरित करता ट्रांसजेंडर समूह का एक स्वयंसेवक। जागरण

उत्तर प्रदेश के भदोही में मां ने पांच बच्चों को गंगा में फेंका

जागरण संवाददाता, भदोही : उत्तर प्रदेश के भदोही जिले के जहांगीराबाद गांव में एक मां ने शनिवार रात करीब ढाई बजे तीन बेटियों सहित पांच बच्चों को गंगा में फेंक दिया। सुबह घटना की जानकारी पर बच्चों की तलाश में स्थानीय गोताखोर गंगा में उतरे लेकिन, शाम तक दो बेटियों का ही शव खोजा जा सका। डीएम राजेंद्र प्रसाद और एसपी रामबदन सिंह भी घटनास्थल पर पहुंचे। हिरासत में लेकर महिला से पूछताछ की गई लेकिन, कारण स्पष्ट नहीं हो सका। उसे जेल भेजने की तैयारी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मृदुल यादव उर्फ मुन्ना यादव किसी काम से बाहर गया था। देर रात उसकी पत्नी मंजू तीन बेटियों सहित पांच बच्चों को साथ लेकर गंगा घाट पर पहुंची। उस वक्त वहां पर मछुआरे नाव से जाल फैला रहे थे। उनके जाने के बाद महिला ने पांचों बच्चों को नदी में फेंक दिया। इसके बाद वह घर आकर अपने कमरे में सो गई। महिला ने सुबह घटना की जानकारी अपनी जेठानी को दी तो कोहराम मच गया। पति मृदुल यादव ने गंगा घाट पर पहुंच कर बच्चों को खोजने लगा। सूचना पर मायका पक्ष के लोग भी पहुंच गए। एसपी रामबदन सिंह ने बताया कि महिला घटना की सही जानकारी नहीं दे रही है। बच्चों की तलाश में गोताखोर लगाए गए हैं। प्रत्येक बिंदु को ध्यान में रखकर घटना की जांच की जा रही है।

सामरिक महत्व का श्रीनगर-लेह राजमार्ग खुला

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- भारी बर्फबारी की वजह से चार महीने से बंद था यह राजमार्ग
- बीआरओ ने खोली सड़क तो लेह लद्दाख सामान लेकर पहुंचे ट्रक

चार महीने से बंद रणनीतिक महत्व के श्रीनगर-लेह राजमार्ग को सीमा सड़क संगठन ने रविवार को खोल दिया। यह मार्ग लेह-लद्दाख को दुनिया से जोड़ता है। ट्विटर

कोरोना महामारी के गंभीर संकट के बीच सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) ने लेह-लद्दाख को दुनिया से जोड़ने वाले श्रीनगर-लेह राजमार्ग को खोल दिया है। बर्फ की चट्टानों से ढंके सामरिक महत्व के इस राजमार्ग को खोलने के साथ ही संकट के इस समय में आवश्यक वस्तुओं को लेह-लद्दाख पहुंचाने का काम भी शुरू हो गया है।

रक्षा मंत्रालय ने रविवार को जारी बयान में कहा कि इस महत्वपूर्ण सड़क के खुलते ही शुरुआत में जोजिला दर्रे से तेल के 18 टैंकरों और अन्य आवश्यक वस्तुओं को लेह-लद्दाख की ओर जाने की अनुमति दी गई। जोजिला दर्रे में ताजा बर्फबारी के बावजूद बीआरओ ने आवश्यक वस्तुओं की कमी को दूर करने के लक्ष्य के साथ राजमार्ग को खोलने के लिए अपनी इंजीनियरिंग और मानव संसाधन की क्षमता का विशेष इस्तेमाल किया।

मालूम हो कि जोजिला दर्रे पर भारी बर्फबारी के कारण पिछले साल दिसंबर में 425 किलोमीटर लंबे इस राजमार्ग को बंद कर दिया गया था। बीआरओ इसे 15 मार्च तक खोलने के अपने लक्ष्य के साथ प्रतिकूल मौसम में भी लगातार रास्ते को साफ करने में जुटा था। लेकिन इस बीच कोरोना वायरस के फैलाव को देखते हुए राजमार्ग के संचालन के लिए कुछ इंतजार करने की रणनीति बनी। इसी बीच एक और दो अप्रैल को जबरदस्त बर्फबारी ने सड़क खोलने की बीआरओ की चुनौती बढ़ा दी। वहीं लेह-लद्दाख में जरूरी वस्तुओं की कमी की आशंका से चिंतित स्थानीय प्रशासन ने राजमार्ग को खोले जाने की जरूरत बताई। केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख में आवश्यक वस्तुओं को जुटाने की इस आकस्मिक जरूरत को देखते हुए बीआरओ की टीम ने परियोजना बीकन और परियोजना विजयक के तहत 11,500 फीट की ऊंचाई पर जोजिला के आसपास ताजा बर्फ को राजमार्ग से हटाकर सड़क को यातायात के योग्य बना दिया।

वैसे इस साल की बर्फबारी ने पिछले छह दशकों का रिकॉर्ड तोड़ दिया। बीआरओ के प्रोजेक्ट बीकन द्वारा गगनगीर से जीरो प्वाइंट तक बर्फ को हटाने का काम किया गया और यही काम प्रोजेक्ट विजयक ने दूसरी ओर द्रास की तरफ से किया।

नई हनुमान प्रतिमा रामलला के गर्भगृह में स्थापित

संवाद सूत्र, अयोध्या

रामलला के गर्भगृह में विराजमान हनुमानजी की खंडित प्रतिमा श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के पदाधिकारियों की देख-रेख में सरयू नदी में विसर्जित कर दी गई। साथ ही वैकल्पिक गर्भगृह में नई मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की गई है। कई वर्षों से खंडित हनुमान जी की मूर्ति सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन की वजह से बदली नहीं जा सकी थी।

1992 में अयोध्या विवाद के बाद सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन आई। उसके बाद रामलला के परिसर के समस्त फैसले सुप्रीम कोर्ट के अधीन थे, जिसमें किसी तरीके का बदलाव संभव नहीं था। रामलला के मुख्य पुजारी सत्येंद्रदास के मुताबिक, एक फीट की हनुमान जी की मूर्ति काफी दिनों से खंडित थी। हालांकि इसकी पूजा-अर्चना हो रही थी। गत 25 मार्च को रामलला को बुलेट प्रूफ वैकल्पिक गर्भगृह में शिफ्ट करने के दौरान पुजारियों ने इसकी सूचना श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारियों को दी थी। इसके बाद ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने हनुमान जी की खंडित प्रतिमा को सरयू नदी में विसर्जित करते हुए दूसरी प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा रामलला के गर्भगृह में कराने का फैसला किया था।

मूल गर्भगृह पर बना अस्थायी ढांचा हटाया गया

रामलला के मूल गर्भगृह पर बना अस्थायी ढांचा हटा दिया गया है। 25 मार्च के पूर्व रामलला इसी अस्थायी ढांचे में विराजमान थे। कयास लगाया जा रहा है कि लॉकडाउन खुलने के साथ ही रामलला के मंदिर का निर्माण कार्य शुरू होगा।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के नाम पर ले रहा था दान, एफआइआर

जागरण संवाददाता, अयोध्या

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के नाम पर फर्जीवाड़ा कर दान लिए जाने का मामला सामने आया है। दिल्ली का युवक अयोध्या डॉटइन के नाम से वेबसाइट और ट्विटर अकाउंट के जरिए यह फर्जीवाड़ा कर रहा है। आरोपित अकाउंट में रामलला के अधिकृत लोगो का भी इस्तेमाल कर रहा है। ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने एफआइआर दर्ज कराई है।

चंपत राय ने बताया कि दिल्ली के उत्तम नगर के उत्तम विहार कॉलोनी के पते पर श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के नाम पर अविनाश बहुखंडी नामक व्यक्ति धन उगाही कर रहा है। इसके खिलाफ रविवार को थाना कोतवाली अयोध्या में मुकदमा दर्ज कराया गया है। उन्होंने बताया कि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का अभी कोई ट्विटर अकाउंट या वेबसाइट नहीं है। राम मंदिर अयोध्या डॉट इन के नाम से वेबसाइट बनाना, ट्विटर अकाउंट बनाना और ट्रस्ट के लोगो का इस्तेमाल करना अपराध है। इस धोखाधड़ी की जानकारी आठ अप्रैल को मिली थी। इसके बाद आरोपित के अकाउंट की जांच की गई तो ठगी का पता चला।

जम्मू-कश्मीर में दरबार मूव के खर्च का हाई कोर्ट ने मांगा ब्योरा

जेएनएफ, जम्मू : जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट के डिवीजन बेंच ने साल में दो बार होने वाले दरबार मूव (सचिवालय स्थानांतरण) पर होने वाले खर्च का ब्योरा मांगा है। बेंच ने कहा कि वर्ष 2018 व 2019 में हुए चार दरबार मूव के पूरे खर्च का ब्योरा अगली सुनवाई तक पेश किया जाए। बेंच ने सामान्य प्रशासनिक विभाग (जीएडी) सचिव, वित्त सचिव और पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को नोटिस जारी कर दरबार मूव के दौरान मूव करने वाले कर्मचारियों-अधिकारियों की संख्या, सुरक्षाकर्मियों की मूवमेंट, रिकॉर्ड की मात्रा व विस्तृत खर्च की जानकारी देने का निर्देश दिया है। बेंच ने एडवोकेट फैजल कादरी की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान ये निर्देश दिए।

विभिन्न राज्यों से पहाड़ लौटे लोगों को थामने की कवायद

राज्य ब्यूरो, देहरादून

कोरोना संकट के बाद उत्तर और मध्य भारत के विभिन्न हिस्सों से पहाड़ लौटे लोगों को थामने की दिशा में कवायद शुरू कर दी गई है। ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग के मुताबिक राज्य के दस पर्वतीय जिलों के गांवों में लौटे 52,216 लोगों के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़े असर का अध्ययन किया जा रहा है। साथ ही, गांव लौटे लोग यहीं रुककर क्या-क्या काम कर सकते हैं और कैसे अर्थव्यवस्था में योगदान कर सकते हैं, इसका भी अध्ययन हो रहा है।

उत्तराखंड के गांवों से मजबूरी का पलायन अधिक है। मूलभूत सुविधाओं और आजीविका के साधनों के अभाव में पर्वतीय क्षेत्र के गांवों से लोगों ने पलायन किया। अब संकट की घड़ी में वे मजबूरी में वापस गांव लौटे हैं। इससे गांवों के बंद पड़े घर फिर से आबाद हुए हैं, लेकिन ये सवाल भी खड़ा हो गया है कि इन लोगों को गांव में ही कैसे थामे रखा जाए। अगर उन्हें उनकी इच्छानुरूप कार्य नहीं मिला तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी प्रभावित होगी। वजह ये कि ये लोग पहले भले ही बाहर रह रहे थे, लेकिन गांवों में रह रहे स्वजनों को समय-समय पर कुछ पैसा तो भेज ही रहे थे। इसे ध्यान में रखते हुए पलायन आयोग इन दिनों अध्ययन में जुटा हुआ है। आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. एसएस नेगी के मुताबिक लॉकडाउन खुलने के बाद जो प्रवासी यहां रुकना चाहेंगे, वे क्या कार्य कर सकते हैं। इसकी कार्ययोजना बननी जरूरी है। जाहिर है कि सरकार को उन्हें कुछ रियायतें देनी होंगी, ताकि वे अपना काम-धंधा शुरू कर अर्थव्यवस्था में योगदान दे सकें। बताया कि इस कड़ी में अभी तक जिलाधिकारियों से बात हुई है और अब प्रवासियों से भी संपर्क किया जाएगा। आयोग जल्द ही सुझावों सहित रिपोर्ट सरकार को सौंपेगा।

इन जिलों में पहुंचे सबसे ज्यादा लोग

जिला	पहुंचे प्रवासी
पौड़ी	12039
अल्मोड़ा	5487
टिहरी	5276
चंपावत	5070
पिथौरागढ़	5035

फल न हो निष्फल

तापमान बढ़ने के साथ इस फंगस से होगा और नुकसान, गैरपरंपरागत 12 जिलों में रोकथाम की प्रक्रिया तेज

उप्र व बिहार में केले की खेती पर पनामा विल्ट का प्रकोप

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

- प्रभावित क्षेत्र चिन्हित, रोकथाम में लगे कृषि वैज्ञानिकों और टिश्यू कल्चर को लॉकडाउन से मुक्त किया
- कई देशों में पनामा विल्ट की रोकथाम का फिलहाल कोई कारगर उपाय नहीं

प्रतीकात्मक

पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में केले की फसल में पनामा विल्ट नामक फंगस रोग केले की फसल को बुरी तरह नुकसान पहुंचा रहा है। तापमान बढ़ने पर फसल पर यह गंभीर महामारी का रूप ले सकता है। वैज्ञानिकों ने इसकी रोकथाम के लिए प्रभावित क्षेत्रों को चिन्हित कर दिया है। रोकथाम में लगे कृषि वैज्ञानिकों और टिश्यू कल्चर को लॉकडाउन से मुक्त कर दिया गया है।

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ सबट्रापिकल हार्टिकल्चर के निदेशक डॉक्टर शैलेंद्र राजन का कहना है 'दुनिया के कई देशों में पनामा विल्ट की रोकथाम का फिलहाल कोई कारगर उपाय नहीं है। इस बीमारी को रोकने का एक ही तरीका है, जिसमें एक खेत को दूसरे खेत से अलग रखा जाए।' प्रभावित खेत की मिट्टी व पानी से दूसरे खेत को बचाना होता है। टिश्यू कल्चर वाले पौध ही लगाए जाएं। इसीलिए सरकार ने टिश्यू कल्चर और रोकथाम में लगे लोगों को लॉकडाउन से मुक्त कर दिया है।

तापमान बढ़ने पर बीमारी महामारी में तब्दील हो जाती है जिससे खड़ी फसलें सूख जाती है। इसीलिए नई फसल के लिए पौध टिश्यू कल्चर से तैयार की जा रही है। पौध के लिए यह सबसे उपयुक्त समय है, लेकिन लॉकडाउन के चलते इसमें कई तरह की मुश्किलें पैदा हुई। हालांकि सरकार ने अब इसे आवश्यक सेवाओं में शुमार कर दिया है।

डॉक्टर राजन ने बताया कि यह घातक फंगस पनामा फ्यूजेरियम विल्ट पिछले कई सालों से सक्रिय है, जिस पर काबू पाने के लिए हर देश में अपना-अपना तरीका अपनाया जा रहा है। भारत में खेतों के बीच आइसोलेशन और टिश्यू कल्चर नई पौध को तैयार कने का तरीका अपनाया है। टिश्यू कल्चर से नई पौध का 70 फीसद हिस्सा ही तैयार हो पाया है।

इंडियन काउंसिल आफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (आइसीएआर) के महानिदेशक डॉक्टर त्रिलोचन महापात्र ने बताया कि केले की फसल में फ्यूजेरियम विल्ट की महामारी आने वाले महीनों में उग्र हो सकती है। इसके लिए आइसीएआर के पास फ्यूजीकांट प्रणाली है, जिसका उपयोग इसके प्रबंधन में सक्षम है। लेकिन कोरोना के चलते लागू लॉकडाउन के दौरान यह संभव नहीं हो पा रहा था। तापमान बढ़ने के साथ ही पहले से विकसित बायोकंट्रोल एजेंट का सक्रिय करना होता है।' इस फंगस पर काबू पाने के लिए एक प्रोजेक्ट मंजूर किया गया है। आइसीएआर के वैज्ञानिकों के मुताबिक केले की फसल में यह रोग फिलहाल केवल उत्तर प्रदेश और बिहार में ही व्याप्त है। देश के अन्य राज्यों में इसका प्रकोप अभी नहीं है। इससे उत्तर प्रदेश के सात जिलों बिहार के पांच जिलों में इसका प्रकोप है। डॉ. राजन का कहना है कि अगर किसान कुछ समय तक दूसरी फसलों की खेती कर लें तो संभव से उस खेत से यह फंगस खत्म हो जाए। इसके लिए किसानों की जागरूकता पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है।

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व उत्तर राजस्थान में कुछ भागों में मेघगर्जना और तेज हवाओं के साथ छिटपुट वर्षा होगी। जम्मू-कश्मीर के अनेक स्थानों पर व हिमाचल प्रदेश में कुछ भागों में गरज के साथ हल्की से मध्यम वर्षा व बर्फबारी संभव है। 24 घंटों के बाद वर्षा में तेजी आएगी।

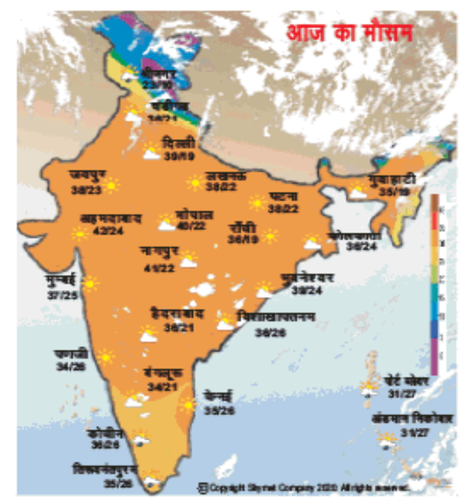

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

आजकल

सोमवार 13 अप्रैल 2020

14

www.jagran.com

दुनिया का पहला नेवीगेशन सेटेलाइट सिस्टम लांच हुआ

आज ही के दिन 1960 में दुनिया का पहला नेवीगेशन सेटेलाइट सिस्टम अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने लांच किया। इसका नाम ट्रांजिट 1बी था। अमेरिकी नौसेना इसका इस्तेमाल अपनी सबमरीन की सटीक जानकारी जुटाने के लिए करती थी।

अमेरिका ने पहली बार देखा था हाथी

आज ही के दिन 1796 में अमेरिका में पहली बार हाथी देखा गया था। इसे भारत से भेजा गया। जेकब शील्ड नाम के समुद्री व्यवसायी ने इस हाथी को कोलकाता से न्यूयॉर्क भेजा था। इसे एक सर्कस कंपनी के हवाले कर दिया गया था।

ऑपरेशन मेघदूत के जरिये भारत ने पाकिस्तान को सिखाया सबक

आज ही 1984 में भारत ने सियाचिन ग्लेशियर पर पाकिस्तान के कब्जे की कोशिश को नाकाम करने के लिए ऑपरेशन मेघदूत लांच किया। इस ऑपरेशन को दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र में अंजाम दिया गया। सुरक्षा एजेंसियों को सूचना मिली थी कि पाकिस्तानी सेना 17 अप्रैल को सियाचिन ग्लेशियर पर कब्जा करने की साजिश रच रही है। जिसे रोकने के लिए भारतीय सेना के करीब 300 जवानों ने ग्लेशियर पर पहले से ही पोजीशन ले ली। लेफ्टिनेंट जनरल प्रेमनाथ हून ने इस सफल ऑपरेशन की अगुआई की थी। इसके बाद पूरा सियाचिन ग्लेशियर भारतीय सेना के नियंत्रण में आ गया।

इधर-उधर की

कोरोना से लड़ाई के लिए मुंडवा रहे दाढ़ी

सिडनी, एजेंसी: कोरोना के संक्रमण को लेकर के कई तरह के निर्देश जारी किए जा रहे हैं। ऐसा ही निर्देश ऑस्ट्रेलिया की क्वींसलैंड पुलिस के लिए भी जारी किया गया है। इसमें कहा गया है कि संक्रमण से निपटने के लिए मास्क लगाना जरूरी है और इसके लिए आपको शेव करवानी होगी। पिछले सप्ताह क्वींसलैंड पुलिस सर्विस के प्रवक्ता ने एक मेल भेजकर यह निर्देश दिए हैं। इसमें कहा गया है कि यदि शेव बनी होगी तो आपका मास्क चेहरे पर सही आएगा और संक्रमण के खिलाफ सुरक्षा कवच बन जाएगा। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि कोरोना के कारण यह अस्थायी व्यवस्था है। इस आदेश के बाद से कई पुलिसकर्मियों के चेहरे रातोंरात बदले-बदले नजर आने लगे हैं। साथ ही एम्बुलेंस सेवा में लगे कर्मियों के लिए भी क्लीन शेव रहने के निर्देश दिए गए हैं। हालांकि सोशल मीडिया पर कई लोगों ने इसका मजाक भी बनाया है।

मरीजों की दूर से सुनी जाएगी धड़कन

तलाशी राह ▶ आइआइटी बॉम्बे के शोधकर्ताओं ने विकसित किया स्मार्ट स्टेथोस्कोप

कोरोना संक्रमितों के इलाज में होगा फायदेमंद, ब्लूटूथ के जरिये भेजता है डाटा

प्रतीकात्मक

नई दिल्ली, प्रेट्र : आइआइटी बॉम्बे के शोधकर्ता की टीम ने ऐसा डिजिटल स्टेथोस्कोप (डिजिटल आला) विकसित किया है जो दूर से किसी भी व्यक्ति की धड़कनों को सुन सकता है और उसे रिकॉर्ड कर सकता है यानी अब इसके लिए मरीजों की छाती से स्टेथोस्कोप लगाना जरूरी नहीं होगा। माना जा रहा है कि इस डिवाइस का इस्तेमाल कोरोना संक्रमित मरीजों से स्वास्थ्यकर्मियों को होने वाले संक्रमण का खतरा कम होगा।

शोध टीम के एक सदस्य ने बताया कि इस डिवाइस के जरिये मरीज की धड़कन की गति संबंधी डाटा ब्लूटूथ की मदद से चिकित्सक तक पहुंच जाती है। इसलिए डॉक्टरों को अब इसके लिए मरीजों के पास जाना जरूरी नहीं है। शोधकर्ताओं ने इस नई डिवाइस का पेटेंट भी हासिल कर लिया है। अब इससे प्राप्त होने वाला डाटा डॉक्टरों को विश्लेषण के लिए भेजा जा सकता है। शोधकर्ताओं ने कहा कि दिन-ब-दिन कोरोना वायरस की चपेट में आने वाले वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। डॉक्टर भी कोविड-19 के मरीजों के इलाज में सतर्कता बरत रहे हैं। फिर भी अंदेशा बना रहता है कि कहीं डॉक्टर भी वायरस से संक्रमित ना हो जाए क्योंकि कोरोना एक संक्रामक बीमारी है और संक्रमित व्यक्ति को छूने से फैलती है। ऐसे में डिजिटल स्टेथोस्कोप मददगार सिद्ध हो सकता है।

'आयुडिवाइस' नाम से स्टार्टअप चला रही शोधकर्ताओं की इस टीम ने देश के विभिन्न अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा केंद्रों में ऐसे 1,000 स्टेथोस्कोप भेजे हैं। यह डिवाइस रिलाइंस और पीडी हिंदुजा अस्पताल के डॉक्टरों की मदद से विकसित की गई है।

शोधकर्ता आदर्श के. ने कहा, 'कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों को सांस फूलने की दिक्कत होती है। डॉक्टर उनकी धड़कन और श्वास नली में आई परेशानियों का अनुमान लगाने के लिए पारम्परिक स्टेथोस्कोप का उपयोग करते हैं। इससे उन्हें भी संक्रमण का खतरा पैदा हो सकता है। कोविड-19 के मरीजों का उपचार कर रहे स्वास्थ्यकर्मियों में संक्रमण के बढ़ते मामले इस बात की पुष्टि करते हैं।'उन्होंने कहा कि स्मार्ट स्टेथोस्कोप के जरिये डॉक्टरों को होने वाले संक्रमण को काफी हद तक कम किया जा सकेगा और कोरोना के मामले भी कम होंगे।

ऐसे काम करती है डिवाइस

डिजिटल स्टेथोस्कोप के डेवलपर आदर्श ने कहा कि नई स्मार्ट डिवाइस में कान में लगाने वाले दो उपकरण एक ट्यूब से जुड़े रहते हैं। यह ट्यूब बीमारी का पता लगाने में बाधा उत्पन्न करने वाले शोर को हटाकर शरीर की ध्वनियों को कान में लगे उपकरणों तक भेजती है। उन्होंने कहा कि इसका दूसरा फायदा यह भी है कि नया स्टेथोस्कोप विभिन्न आवाजों को बढ़ाने के साथ-साथ फिल्टर करके उन्हें इलेक्ट्रॉनिक संकेतों में भी बदल सकता है। आदर्श ने बताया कि ये संकेत स्मार्टफोन या लैपटॉप पर फोनोकार्डियोग्राम (धड़कन संबंधी चार्ट) के रूप में दिखाई देते हैं, जो ब्लूटूथ के जरिये एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। जबकि पारंपरिक स्टेथोस्कोप में ये सुविधाएं नहीं होती हैं।

रूस में दवा का छिड़काव

रूस में कोरोना वायरस के संक्रमण के बहुत अधिक मामले फिलहाल सामने नहीं आए हैं। पर नियमित रूप से सड़कों की सफाई और वाहनों से मास्को सहित प्रमुख शहरों में कीटाणुनाशक दवा का छिड़काव किया जा रहा है। रायटर

नौ करोड़ साल पहले वर्षावनों से आच्छादित था अंटार्कटिका

- ब्रिटेन के इंपीरियल कॉलेज लंदन के शोधकर्ताओं ने लगाया पता
- कहा, उस दौर में वायुमंडल में अनुमान से कहीं ज्यादा थी कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा

यह अध्ययन नेचर नामक जर्नल में प्रकाशित हुआ है। प्रतीकात्मक

लंदन, प्रेट्र : हमारी पृथ्वी कई रहस्यों से भरी पड़ी है। समय-समय पर वैज्ञानिक अध्ययन कर इनसे पर्दा उठाते रहते हैं। अब हाल ही में हुए एक नए अध्ययन में वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उन्हें कई ऐसे सुबूत मिले हैं जो इस बात को पुख्ता करते हैं कि आज से नौ करोड़ साल पहले पृथ्वी का दक्षिणी ध्रुव वर्षावनों से आच्छादित था। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह खोज इस ओर भी इशारा करती है कि उस समय यहां की जलवायु काफी गर्म थी और कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा वातावरण में अनुमान के मुकाबले कहीं ज्यादा थी।

लंदन के इम्पीरियल कॉलेज और अन्य संस्थानों के वैज्ञानिकों ने दक्षिणी ध्रुव के 900 किलोमीटर के भीतर ऐसी मिट्टी का पता लगाया है कि जो 14.5 करोड़ से 6.6 करोड़ साल पहले की है। 'नेचर' जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, वैज्ञानिकों ने मिट्टी से संरक्षित जड़ों, पराग कण और बीजाणु का विश्लेषण करने पर पाया कि क्रिटेशियस युग के बारे में जितना सोचा गया था यह उससे कहीं ज्यादा गर्म था।

रात के समय भी बढ़ता था तापमान : इंपीरियल कॉलेज लंदन से इस अध्ययन के सह-लेखक टीना वान डे ने कहा, 'नौ करोड़ साल पहले के इस जंगल का संरक्षण असाधारण है लेकिन इससे भी ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि अब दुनिया इसके बारे में जान चुकी है।' उन्होंने कहा कि अध्ययन के दौरान यह बात भी सामने आई है कि अंधेरे के महीनों में भी दक्षिणी ध्रुव के आसपास का तापमान बढ़ा रहता था। बता दें कि पृथ्वी के दोनों ध्रुवों पर लगभग छह महीने रात और छह महीने का दिन होता है।

2017 में मिले थे अवसाद : वर्ष 2017 में अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं की टीम को पश्चिमी अंटार्कटिका के पाइन आइलैंड ग्लेशियर के पास बर्फ के नीचे कुछ अवसाद मिले थे। इसकी एक सतह अलग ही रंग की थी। प्रयोगशाला में जब कंप्यूटर टोपोग्राफी स्कैनर से इसकी जांच की गई तो पता चला कि यह कोई सामान्य मिट्टी नहीं, बल्कि इसमें पराग, बीज और पौधों के अवशेष भी हैं, जो क्रिटेशियस काल के हैं।

पश्चिमी अंटार्कटिका में थे समृद्ध शीतोष्ण वर्षावन : शोधकर्ता उलरिच सॉल्जमैन ने कहा कि अध्ययन से पता चलता है कि पश्चिमी अंटार्कटिका में लगभग नौ करोड़ साल पहले सघन और समृद्ध शीतोष्ण वर्षावन रहे थे। ऐसे वन फिलहाल न्यूजीलैंड में पाए जाते हैं। क्रिटेशियस काल को डायनासोर का काल कहा जाता है। माना जाता है कि उस दौरान धरती पर विशालकाय डायनासोर विचरण करते थे और वार्षिक औसत तापमान 12 डिग्री सेल्सियस था। गर्मी में तापमान 19 डिग्री तक हो जाता था, जबकि जलाशयों में 20 डिग्री सेल्सियस तक तापमान रहता था।

कार्बन डाइऑक्साइड के कारण काममान रहता था गर्म : सॉल्जमैन ने कहा कि इस अध्ययन की सबसे अहम बात यह है कि कार्बन डाईऑक्साइड जैसी ग्रीन हाउस गैसें तापमान इतना ज्यादा बढ़ाने में सक्षम हैं कि जहां आज बर्फीला अंटार्कटिका है, वहां किसी युग में वर्षावन हुआ करता था। लगभग छह महीनों तक अंटार्कटिका में सूर्य की रोशनी नहीं पहुंचती है। ऐसे में वहां औसत तापमान इतना ज्यादा कैसे है। वैज्ञानिकों का मानना है कि उस समय वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड काफी ज्यादा होने के कारण पृथ्वी का तापमान भी अधिक था।

कोविड-19 के मरीजों के इलाज में मददगार हो सकता है मेलाटोनिन

शोध अनुसंधान

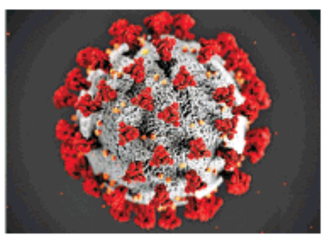

शोधकर्ताओं का कहना है कि कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों के इलाज में मेलाटोनिन मददगार हो सकता है। यह एक तरह का प्राकृतिक हार्मोन है, जो मस्तिष्क की छोटी सी ग्रंथि में बनता है। मनुष्य के सोने-जागने के क्रम को मेलाटोनिन हार्मोन ही नियंत्रित करता है। लाइफ साइंसेज जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, आंकड़ों से इस बता का पता चला है कि मेलाटोनिन वायरस से संबंधित होने वाली बीमारियों को रोकने में मदद करता है। इसलिए यह माना जा रहा है कि यह कोरोना के मरीजों के इलाज में भी फायदेमंद हो सकता है। लेकिन इसकी पुष्टि के लिए अभी कुछ अतिरिक्त प्रयोग और क्लीनिकल ट्रायल किए जाने की जरूरत है। बीजिंग स्थित पेकिंग यूनियन मेडिकल कॉलेज अस्पताल के शोधकर्ता चांगवेई लियू और उनके सहकर्मियों ने विभिन्न रोगों के मरीजों में मेलाटोनिन के लाभकारी प्रभावों का विश्लेषण किया है। कई अन्य अध्ययनों में भी मेलाटोनिन को गंभीर मरीजों के इलाज में मददगार पाया गया है। शोधकर्ताओं ने कहा कि इस दवा की प्रभावशीलता का पता लगाने के लिए जल्दी ही बड़े स्तर पर क्लीनिकल ट्रायल किए जाएंगे ताकि कोरोना के मरीजों की बढ़ती संख्या नियंत्रित की जा सके। - आइएएनएस

स्क्रीन शॉट

घर में केवल श्रद्धा मुझे डांटती है : शक्ति कपूर

सात सवाल

फिल्मों में कभी खलनायकी तो कभी कॉमेडी से दर्शकों का मनोरंजन करने वाले शक्ति कपूर का कहना है कि उन्हें कभी परिवार के साथ वक्त बिताने का मौका नहीं मिला, पर अब वह परिवार की खूबियों से वाकिफ हो रहे हैं। उनसे बातचीत:

• आप घर में वक्त कैसे बिता रहे हैं?

- सारी जिंदगी काम करने में ही गुजर गई। बेटी श्रद्धा और बेटे सिद्धांत के साथ समय बिताने का मौका ही नहीं मिला था। यह वक्त बहुत कुछ समझने और सोचने का है। मेरी पत्नी शिवांगी बहुत आध्यात्मिक हैं। उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनता हूं। बच्चों से बातें करता हूं। प्रार्थना करता हूं। पहले भागते-दौड़ते, गाड़ी में बैठते हुए खाना खाता था। आज जब पत्नी दाल-चावल, खिचड़ी, वेज पुलाव बनाती हैं तो सुकून से खाता हूं। मेरे घर के नजदीक समुद्र का किनारा है। घर से समंदर में डॉल्फिन नजर आती हैं। प्रकृति ने समझा दिया है कि तुम बॉस नहीं हो। बॉस प्रकृति है। हम सिर्फ मेहमान हैं।

• आप अपनी फिल्में देखते हैं?

-मैंने अलग-अलग भाषाओं में सात सौ से ज्यादा फिल्में की हैं। अगर मैं अपनी फिल्में देखने बैठूं तो 730 दिन तो ऐसे ही गुजर जाएंगे। अपने बच्चों की फिल्में देखता हूं। मेरी पत्नी बहुत अच्छा गाती हैं। लॉकडाउन में सबकी प्रतिभाओं का पता चल रहा है। हर रात प्रार्थना करके सोता हूं कि जब सुबह उठूं तो खबर मिले कि सब कुछ नियंत्रण में आ गया है। उसके लिए लोगों को सरकारी निर्देशों का सख्ती से पालन करना होगा। शारीरिक दूरी बनाए रखें। घर पर रहें। 10-15 लोग इकठ्ठा न हो, मास्क पहनें, हाथ धोएं। हम सब एक छत के नीचे हैं, लेकिन फिर भी आपस में दूरी बनाए रखते हैं।

• आप रसोई में कितनी दिलचस्पी ले रहे हैं?

-मुझे अब पता चला है कि श्रद्धा बहुत अच्छा खाना बनाती है। वह चाइनीज और सूप बनाती है। उसकी खुद की रेसिपीज हैं। वह शाकाहारी है। मेरे लिए वह बिना घी-तेल का खाना बनाती है। खानपान के प्रति मुझे सजग करती है। श्रद्धा की वजह से मैं काफी हद तक शाकाहारी हो चुका हूं।

• इस स्थिति के बाद दुनिया कैसी होगी?

- इस स्थिति के बाद नई दुनिया देखने को मिलेगी। लोगों के सोचने का ढंग बदला हुआ होगा। पहले हम काम में लगे रहते थे। दोस्तों-परिवार को वक्त नहीं दे पाते थे। लालची हो गए थे। नाम शोहरत के पीछे कितने लोगों का नुकसान करते थे। अब लोगों को रिश्तों और समाज की अहमियत समझ में आई है। अब लोग एक-दूसरे की इज्जत ज्यादा करेंगे। मेरे पिताजी कहते थे कि गीता में कहा गया है कर्म तेरे अच्छे हों तो घर में ही मथुरा काशी है।

• श्रद्धा के साथ भविष्य को लेकर किस तरह की बात होती है?

-मेरी बेटी बहुत महत्वाकांक्षी नहीं है। हमारा परिवार बहुत साधारण है। मेरी बीवी की रिश्तेदार सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर, आशा भोसले हैं। मेरी साली पद्मिनी कोल्हापुरे हैं। ये सब इतने साधारण हैं कि अपने बर्तन भी खुद मांज लेते हैं। बहरहाल, हम फिल्म इंडस्ट्री के बारे में बात नहीं करते हैं। हम तो यही सोचते हैं कि सब खुश रहें। दो वक्त की रोटी सबको मिले। सरकार यथासंभव गरीबों की मदद के लिए प्रयासरत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब बोलते हैं तो लगता है कि पिता की तरह समझा रहे हों। मैं उन्हें फादर ऑफ इंडिया कहता हूं। कल क्या होगा, किसी को पता नहीं है। नुकसान हर इंडस्ट्री में हो रहा है। जान है तो जहान है।

• श्रद्धा कपूर का रूटीन क्या रहता है?

-वह पढ़ती बहुत है। नियमित योग करती है। संगीत उसकी रग-रग में है। गाने लिखती है। खाना बनाती है। मेरे घर में मुझे कोई डांटता नहीं है। बस श्रद्धा मुझे डांटती है। मेरी मां ऊपर चली गई हैं, लेकिन अपना सब कुछ उसमें छोड़कर गई हैं। जब वह बोलती है, तो लगता है कि मेरी मां बोल रही हैं।

• बेटे सिद्धांत खुद को कैसे व्यस्त रखते हैं?

- मैं उन्हें गौतम बुद्ध कहता हूं। वह सामाजिक कार्य बहुत करते हैं। फिलहाल वह बड़ी संख्या में मास्क बांटने का काम कर रहे हैं।

स्मिता श्रीवास्तव

बॉलीवुड अपडेट

काजोल बना रही हैं बच्चों के लिए कपड़े

क्वारंटाइन में रहते हुए इन दिनों सितारे एक ओर फैंस के सवालों का जवाब दे रहे हैं, तो वहीं वे अपने अकाउंट से लाइव पोस्ट भी कर रहे हैं। वे अपने घर से कई ऐसी बातें साझा कर रहे हैं, जिसका जिक्र आम दिनों में वह नहीं करते हैं। काजोल ने हाल ही में अपने फॉलोवर्स 10 मिलियन तक पहुंचने पर लाइव बातचीत की थी। लाइव के दौरान उन्होंने कई बातें बताईं। काजोल ने बताया कि वह 18 दिनों से घर पर हैं। इन दिनों वह अपने बेटे और बेटी के लिए कपड़े बना रही हैं। काजोल ने कहा कि वह अपनी बेटी के लिए एक ड्रेस बना चुकी हैं। साथ ही, बेटे युग के लिए टॉप बना रही हैं। इस मुश्किल काम को करने के लिए काजोल ने कहा कि भगवान का शुक्र है कि वे छोटे हैं। इस मौके पर काजोल ने यह भी बताया कि पांच साल पहले रोहित शेट्टी की फिल्म 'दिलवाले' की शूटिंग से पहले वह इंस्टाग्राम पर आई थीं। काजोल सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं। वह जब बेटी न्यासा को लेकर सिंगापुर से लौटी थीं, तब से वह अपने घर में सेल्फ क्वारंटाइन में हैं।

दीपिका ने बनाया पिज्जा तो रणवीर ने उन्हें कहा, चीजी लवर

हिंदी सिनेमा की सबसे चर्चित जोड़ियों में से एक रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण एक-दूसरे के साथ क्वालिटी टाइम बिता रहे हैं। दीपिका इस समय रसोई में अपना काफी वक्त दे रही हैं। रविवार को रणवीर ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो और कुछ तस्वीरें साझा कीं। वीडियो में रणवीर कहते हैं कि आज मैं दीपिका के हाथों से बने बड़े-बड़े पिज्जा खाऊंगा। इसके बाद तस्वीरों में दीपिका पिज्जा बनाते हुए दिखाई देती हैं। अंत में रणवीर यह भी बताते हैं कि दीपिका पिज्जा बनाने में निपुण हैं और वह चीजी लवर हैं। कुछ दिनों पहले रणवीर ने दीपिका की थाई खाना बनाते हुए भी कुछ तस्वीरें साझा की थीं। दीपिका भी सोशल मीडिया पर इस तरह की तस्वीरें और वीडियो साझा करती रहती हैं।

साइज मायने नहीं रखता : अर्जुन कपूर

लॉकडाउन में कई सितारे अपनी पुरानी स्मृतियों के पन्ने पलट रहे हैं। वे अपने बचपन की कई दिलचस्प कहानियां सोशल मीडिया के जरिए अपने प्रशंसकों से भी साझा कर रहे हैं। इसी क्रम में शनिवार को अर्जुन कपूर ने सोशल मीडिया पर एक पुरानी तस्वीर साझा की, जिसमें वह अपने फूफा संदीप मारवाह और चचेरे भाई हर्षवर्धन कपूर के साथ नजर आ रहे हैं। तस्वीर में अर्जुन काफी मोटे दिख रहे हैं। तस्वीर के साथ अर्जुन ने लिखा, 'साइज कोई मायने नहीं रखता है।' बता दें कि अभिनेता बनने से पहले अर्जुन काफी मोटे हुआ करते थे। फिर सलमान खान की सलाह पर उन्होंने अपनी फिटनेस पर काम किया। इसके साथ ही उन्होंने दिहाड़ी पर काम करने वाले लोगों की मदद के लिए आयोजित वर्चुअल डिनर डेट के विजेताओं का भी एलान किया और उनके साथ वीडियो कॉल पर बातें कीं।

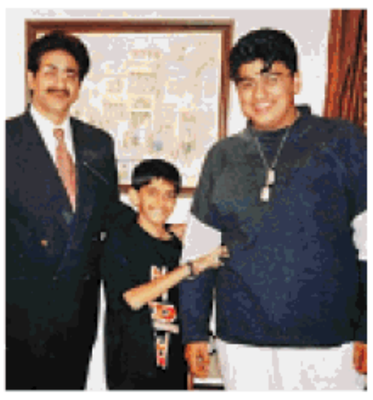

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
भक्ति संगीत : सुबह 5.31
योग बाइ बाबा रामदेव : सुबह 6.00
सिने संगीत : सुबह 7.00
रंगोली : सुबह 8.00
रामायण : सुबह 9.00/ रात 9.00
कोविड 19 अपडेट्स : सुबह 10.30/ शाम 7.00
ब्योमकेश बक्शी : सुबह 11.00
वाह क्या टेस्ट है : दोपहर 12.00
जंगल बुक : दोपहर 1.00
छोटा भीम : दोपहर 2.00
सर्कस : दोपहर 3.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
चाणक्य : शाम 5.00
देख भाई देख : शाम 6.00
शक्तिमान : रात 8.00
बुनियाद : रात 10.30

डीडी भारती
उपनिषद गंगा : शाम 6.00
महाभारत : दोपहर 12.00/शाम 7.00

स्टार प्लस
सिया के राम : सुबह 5.00/ शाम 7.00
राधाकृष्ण : सुबह 8.00/शाम 7.30
महाभारत : सुबह 9.00/ रात 8.00
इस प्यार को क्या नाम दूं : सुबह 11.00
विदाई : दोपहर 12.00
ये रिश्ता क्या कहलाता है : दोपहर 1.00/रात 9.30
दीया और बाती हम : दोपहर 3.00
महाराज की जय हो : रात 9.00
ये रिश्ते हैं प्यार के : रात 10.00
कयामत की रात : रात 11.30

स्टार भारत
देवों के देव महादेव : सुबह 7.00/ शाम 7.00
बेस्ट ऑफ लॉफ्टर चैलेंज : सुबह 9.00
सावधान इंडिया-एफआइआर : दोपहर 12.00/रात 10.00
कॉमेडी क्लासेज : रात 8.00

सोनी
द कपिल शर्मा शो : सुबह 7.00
क्राइम पेट्रोल 5 : दोपहर 12.00/ रात 11.00
मेरे साईं-श्रद्धा और सबूरी : शाम 7.00
विघ्नहर्ता गणेश : शाम 7.30
सुपरस्टार सिंगर : रात 8.00
ये उन दिनों की बात है : रात 10.30

सब टीवी
तेनाली रामा : सुबह 7.30
मैडम सर : सुबह 10.00
तारक मेहता का उल्टा चश्मा : सुबह 10.30/ रात 8.30

बारह साल की उम्र में कंगना रनोट ने खरीदा था कैमरा

कंगना रनोट को बचपन से ही कैमरे से लगाव रहा है। उन्होंने पहला कैमरा अपनी जेब खर्च से बारह साल की उम्र में खरीदा था। कंगना के बचपन की यह कहानी उनकी बहन रंगोली चंदेल ने सोशल मीडिया पर उनकी कुछ पुरानी तस्वीरें साझा करते हुए बताई हैं। रंगोली ने बताया कि कंगना बचपन से ही कैमरे की शौकीन रही हैं। चचेरे भाई करण के साथ कंगना की कुछ तस्वीरें साझा करते हुए रंगोली ने बताया कि वह अक्सर अपने गांव के शर्मा अंकल के स्टूडियो में दौड़कर जातीं और उनसे तस्वीरें खींचने के लिए कहतीं। उनकी इस हरकत से पापा गुस्सा हुए और उन्होंने शर्मा अंकल को कंगना की तस्वीरें खींचने से मना कर दिया था। उसी समय कंगना ने बारह वर्ष की उम्र मे 1500 रुपये इकट्ठा करके अपना पहला कैमरा खरीदा। उसके बाद उन्होंने अपनी मां की साड़ी लपेटकर नृत्य मुद्रा में रंगोली से तस्वीरें खिंचवाईं। कैमरे के प्रति कंगना का यह लगाव आज उनका पेशा बन चुका है।

बागवानी कर रही हैं जूही चावला

इन दिनों फिल्मी सितारे अभिनय से अलग अन्य चीजों में हाथ आजमा रहे हैं। कोई कविताएं लिख रहा है तो कोई घर में खेती और बागवानी में हाथ आजमा रहा है। अभिनेत्री जूही चावला भी इन दिनों अपने घर में गार्डनिंग करने में व्यस्त हैं। रविवार को उन्होंने सोशल मीडिया पर कुछ तस्वीरें साझा कीं। इन तस्वीरों में वह अपने घर के गार्डन में पौधे लगाती दिख रही हैं। इन तस्वीरों के साथ उन्होंने लिखा, 'ये देखो मेरा नया काम, मेथी और टमाटर के पौधों के लिए खेत तैयार कर रही हूं। अभी देखते हैं क्या होता है?' जूही आखिरी बार पिछले साल रिलीज हुई फिल्म 'एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा' में नजर आई थीं। आगामी दिनों में वह ऋषि कपूर के साथ फिल्म 'शर्माजी नमकीन' में नजर आएंगी।